छात्र संघ की ओर से नारेबाजी सुप्रीम कोर्ट की सीधे तौर पर अवमानना
- 12

नए कारोबार के धीमे विस्तार से देश में सेवा क्षेत्र की गतिविधियां ढीलीं
- 12

वेनेजुएला पर अमेरिकी कार्रवाई से क्षेत्रीय अस्थिरता की संभावना
- 13

हरमनप्रीत कौर 13वें स्थान पर पहुंची, दीप्ति शीर्ष से खिसकी
- 14

आज का मौसम

19.0° अधिकतम तापमान

6.0° न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 07.06

सूर्यास्त 05.31

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

बरेली

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

माघ कृष्ण पक्ष पंचमी 06:33 उपरांत षष्ठी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 7 जनवरी 2026, वर्ष 7, अंक 44, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 6 रुपये

पारिवारिक, व्यावसायिक और औद्योगिक संपत्तियों के दान पर 5 हजार स्टांप शुल्क

उप्र मंत्रिमंडल का फैसला : संपत्तियों के दान पर मिली बड़ी राहत, शहरी और गांव सभी जगह लागू

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी की अध्यक्षता में मंगलवार को लोकभवन में हुई कैबिनेट की बैठक में उत्तर प्रदेश में परिवार के सदस्यों के बीच निष्पादित अचल संपत्ति के दान विलेख पर स्टांप शुल्क में दी जा रही छूट के दायरे को और व्यापक करने के प्रस्ताव को हरी झंडी दिखायी गई। वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कैबिनेट के निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया कि कैबिनेट में कुल 14 प्रस्ताव रखे गए, जिसमें 13 को स्वीकृति प्रदान की गई।

संपत्ति संबंधी निर्णय के बारे में उन्होंने बताया कि, इस फैसले से अब पारिवारिक सदस्यों के बीच व्यावसायिक एवं औद्योगिक संपत्तियों के दान पर भी स्टांप शुल्क में बड़ी राहत मिलेगी। अभी तक भारतीय स्टांप अधिनियम, 1899 के अंतर्गत उप्र. में दान विलेखों पर संपत्ति के मूल्य के अनुसार हस्तांतरण पत्र (कन्वेयंस डीड) की भांति स्टांप शुल्क देय होता है, जबकि रजिस्ट्रेशन अधिनियम, 1908 के प्रावधानों के अनुसार अचल संपत्ति के दान विलेख का पंजीकरण अनिवार्य है।

स्टांप एवं रजिस्ट्रेशन अनुभाग-2 की 3 अगस्त 2023 की अधिसूचना के माध्यम से यह व्यवस्था की गई थी कि यदि अचल संपत्ति का दान परिवार के सदस्यों के पक्ष में किया जाता है तो स्टांप शुल्क में छूट देते हुए अधिकतम 5,000 रुपये ही लिया जाएगा। यह छूट अब तक केवल कृष्य एवं आवासीय संपत्तियों तक सीमित थी। कैबिनेट द्वारा पारित प्रस्ताव के तहत इस छूट को पारिवारिक सदस्यों के मध्य व्यावसायिक एवं औद्योगिक संपत्तियों के दान पर भी लागू करने का निर्णय लिया गया है। इससे परिवारों के बीच संपत्ति हस्तांतरण की प्रक्रिया सरल, पारदर्शी और कम खर्चीली हो जाएगी। स्टांप तथा पंजीयन मंत्री रवींद्र जायसवाल ने बताया कि वर्ष 2022 से पहले तक परिवार के रिश्ते में यदि कोई प्रॉपर्टी देता था तो पूरे सर्किल रेट के बराबर स्टांप शुल्क देना पड़ता था। वर्ष 2022 में मुख्यमंत्री के नेतृत्व में तय हुआ कि पारिवारिक रिश्तों में यदि कोई प्रॉपर्टी दान की जाती है तो उस पर फिक्स्ड पांच हजार रुपए स्टांप लगेगा। लेकिन यह दान केवल आवासीय और कृषि पर लागू था, लेकिन अब यह नियम कॉमर्शियल प्रॉपर्टी पर भी लागू कर दिया गया है।

लोकभवन में मंत्रिमंडल के बैठक की अध्यक्षता करते मुख्यमंत्री योगी।

पश्चिमी उप्र और एनसीआर में उच्च शिक्षा के नए अवसर

कैबिनेट बैठक में दूसरा अहम निर्णय आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ के ग्रेटर नोएडा में ऑफ-कैंपस की स्थापना को लेकर लिया गया। इसके लिए संचालन प्राधिकार पत्र (एलओपी) जारी करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। इस ऑफ-कैंपस के शुरू होने से पश्चिमी उत्तर प्रदेश और एनसीआर क्षेत्र में उच्च शिक्षा के नए अवसर सृजित होंगे और छात्रों को अपने क्षेत्र में ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध हो सकेगी। सरकार द्वारा आईआईएमटी विवि. मेरठ के ग्रेटर नोएडा स्थित ऑफ-कैंपस के संचालन के लिए प्रायोजक संस्था को संचालन प्राधिकार पत्र जारी करने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी गई है।

जेएस विवि, शिकोहाबाद की मान्यता रद्द, फर्जी डिग्रियों पर कार्रवाई

लखनऊ। कैबिनेट की बैठक में उच्च शिक्षा विभाग से जुड़े दो महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव वाले प्रस्तावों को भी स्वीकृति मिली। एक तरफ, योगी कैबिनेट ने जेएस विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद (जनपद फिरोजाबाद) के परिसमापन को मंजूरी दी है तो वहीं आईआईएमटी विश्वविद्यालय, मेरठ के ग्रेटर नोएडा में ऑफ-कैंपस को संचालन प्राधिकार पत्र (एलओपी) जारी करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। जेएस विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद के बाबत उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने बताया कि जांच में यह सामने आया कि विश्वविद्यालय द्वारा नियमों की अनदेखी करते हुए बीपीएड पाठ्यक्रम की फर्जी और बैक डेट में मार्कशीट व डिग्रियां जारी की गईं, जिनका उपयोग राजस्थान की शारीरिक शिक्षा अध्यापक भर्ती परीक्षा-2022 में चयनित अभ्यर्थियों द्वारा किया गया। इस प्रकरण में राजस्थान पुलिस की जांच, कुलाधिपति एवं कुलसचिव की गिरफ्तारी तथा शासन स्तर पर गठित जांच समितियों की आख्या में गंभीर अनियमितताएं पाई गईं।

उप्र में 2.89 करोड़ के नाम कटे एक करोड़ को जाएगा नोटिस

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश की मतदाता सूची के एसआईआर में 2.89 करोड़ मतदाताओं के नाम काट दिए गए हैं। ऐसे में जहां लिस्ट में कुल 15.44 करोड़ मतदाता थे, अब 12.55 करोड़ मतदाता रह गए हैं। वहीं इस लिस्ट में शामिल 12.55 करोड़ मतदाताओं में से 91.75 प्रतिशत की मैपिंग कर ली गई है। जिन करीब 8.25 प्रतिशत लोगों के नाम मैपिंग में नहीं मिले हैं, उन 1.04 करोड़ मतदाताओं को नोटिस जारी की जाएगी।

मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) नवदीप रिणवा ने मंगलवार को लोकभवन में ड्राफ्ट मतदाता सूची जारी की। इस दौरान मीडिया को संबोधित करते हुए उन्होंने बताया कि ड्राफ्ट मतदाता सूची में शामिल 12.55 करोड़ में से 11.55 करोड़ लोगों यानी 91.75 प्रतिशत लोगों की मैपिंग चुनाव आयोग ने कर ली है। यह वह मतदाता हैं, जिनके नाम का मिलान वर्ष 2003 की मतदाता सूची से कर लिया गया है। यह वे वोटर हैं, जिनका या तो खुद का नाम या फिर माता-पिता का नाम, बाबा-दादी का नाम और नाना-नानी का नाम वर्ष 2003 की मतदाता सूची में था। ऐसे में अब इन्हें कोई नोटिस नहीं जाएगी। वहीं बचे 1.04 करोड़ यानी 8.25 प्रतिशत लोगों को नोटिस भेजी जा रही है। नोटिस के बाद उनसे दस्तावेज मांगे जाएंगे। फिर जांच में सही पाए जाने पर ही उन्हें वोटर बनाया जाएगा। उन्होंने बताया कि ड्राफ्ट मतदाता सूची सीईओ की वेबसाइट ceouttarpradesh.nic.in पर उपलब्ध है। यहां वोटर्स अपने नाम देख सकते हैं। अगर उनका नाम सूची में नहीं है तो 6 फरवरी तक दावे व आपत्तियां कर सकते हैं। वहीं मंगलवार से ही 27 फरवरी तक दावे व आपत्तियों का निस्तारण किया जाएगा। 6 मार्च को अंतिम मतदाता सूची जारी की जाएगी। उन्होंने बताया कि ड्राफ्ट प्रकाशन के बाद अब नोटिस एवं ईआरओ या एईआरओ के द्वारा ही किसी का नाम काटा जा सकता है। इस बार 1200 मतदाताओं पर एक बूथ बनाया गया है, प्रदेश में 15030 पोलिंग बूथ बढ़े हैं। ऐसे में अब 1,62,486 बूथों से बढ़कर 1,77,516 हो गए हैं।

- एसआईआर की ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी, दावे और आपत्ति को दिया एक महीने तक का वक्त, सीईओ नवदीप ने जारी की सूची

इन श्रेणियों में मिले मतदाता

- स्थानांतरित/अनुपस्थित- 2.17 करोड़
- मृत- 46.23 लाख
- डुप्लीकेट- 25.47 लाख
- फार्म न जमा करने वाले -7.57 लाख

यहां सबसे ज्यादा कटे नाम

- लखनऊ - 12 लाख
- प्रयागराज - 11.56 लाख
- कानपुर नगर - 9.02 लाख
- आगरा - 8.36 लाख
- बरेली - 7.14 लाख

यहां कटे सबसे कम नाम

- शामली 1.63 लाख
- कासगंज 1.72 लाख
- बांदा 1.75 लाख
- बागपत 1.77 लाख
- अमरोहा 1.81 लाख

ब्रीफ न्यूज

गैस के कुएं की आग बुझाने दिल्ली, मुंबई से पहुंची विशेषज्ञ टीम

मोरी। डॉ. बीआर आंबेडकर कोनासीमा जिले में गैस के एक कुएं में लगी आग बुझाने के लिए मुंबई और दिल्ली से तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम (ओएनजीसी) की विशेषज्ञ टीम यहां पहुंची। एक अधिकारी ने बताया कि सोमवार की तुलना में आग की तीव्रता में कमी आई है। ओएनजीसी के स्वामित्व वाले मोरी-पांच कुएं में गैस रिसाव के बाद पांच जनवरी को दोपहर 12 बजकर 40 मिनट पर मोरी और इरसुमंदा गांवों के पास करीब 25 मीटर के भूभाग में आग भड़क उठी थी और 20 मीटर ऊंची लपटें देखी गईं।

राहुल गांधी मामले में जिरह पूरी

सुलतानपुर। गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ कथित आपत्तिजनक टिप्पणी से जुड़े मानहानि मामले में कांग्रेस नेता व सांसद राहुल गांधी के विरुद्ध चल रहे मुकदमे में मंगलवार को निर्धारित सुनवाई हुई। कोर्ट में परिवादी पक्ष के गवाह रामचंद्र दूबे से बचाव पक्ष द्वारा जिरह पूरी कर ली गई। परिवादी भाजपाई एवं कोऑपरेटिव बैंक के पूर्व चेयरमैन विजय मिश्र के अधिवक्ता संतोष पांडेय ने बताया कि परिवादी के गवाह से जिरह पूर्ण हो चुकी है। इसके बाद कोर्ट ने गांधी का बयान दर्ज करने के लिए 19 जनवरी की तिथि नियत की है। यह मामला वर्ष 2018 का है, जिसमें गांधी पर बेंगलुरु की जनसभा में तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष शाह के खिलाफ टिप्पणी का आरोप है।

जेएनयू में लगे मोदी-शाह के खिलाफ विवादास्पद नारे

नई दिल्ली, एजेंसी

- जेएनयू ने पुलिस से मामले में प्राथमिकी दर्ज करने का आग्रह किया

सुप्रीम कोर्ट द्वारा 2020 के दिल्ली दंगा साजिश मामले में उमर खालिद और शरजील इमाम को जमानत देने से इनकार किए जाने के बाद जेएनयू के छात्रों के एक समूह ने विश्वविद्यालय परिसर के भीतर प्रधानमंत्री मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ विवादास्पद नारे लगाए। जेएनयू छात्र संघ की अध्यक्ष अदिति मिश्रा ने कहा कि छात्र पांच जनवरी, 2020 को परिसर में हुई हिंसा की निंदा करने के लिए हर साल विरोध प्रदर्शन करते हैं। मिश्रा ने कहा, विरोध प्रदर्शन के दौरान लगाए गए सभी नारे वैचारिक थे और वे किसी पर व्यक्तिगत हमला नहीं थे। वे किसी को लक्ष्य करके नहीं लगाए गए थे।

इस बीच, एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि नारों के संबंध में कोई शिकायत नहीं मिली है। हालांकि, दिल्ली के मंत्रियों आशीष सूद एवं मनजिंदर सिंह सिरसा ने इस घटना की निंदा की और विपक्ष पर ऐसे कृत्यों में लिप्त लोगों का समर्थन करने का आरोप लगाया। सूद ने दिल्ली विधानसभा के शीतकालीन सत्र के दूसरे दिन की शुरुआत से पहले पत्रकारों से कहा, शरजील इमाम ने पूर्वोत्तर भारत को अलग करने की बात कही थी। उमर खालिद ने 'भारत के टुकड़े-टुकड़े हो जाएंगे' के नारे लगाए थे और 2020 के दंगों में उसकी संलिप्तता पाई गई थी। ऐसे लोगों के प्रति सहानुभूति इसलिए दिखाई जाती है क्योंकि इस विधानसभा में ऐसे लोग हैं जिन्होंने शरजील इमाम के साथ मंच साझा किया था। उन्होंने कहा कि जब ऐसे लोगों को संरक्षण दिया जाता है, तो ऐसी बातें होना तय है।

नारेबाजी करते जेएनयू के छात्र।

आपत्तिजनक थे नारे : जेएनयू

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय ने मंगलवार को कहा कि एक विरोध प्रदर्शन के दौरान छात्र संघ द्वारा अत्यंत आपत्तिजनक और भड़काऊ नारेबाजी वाले वीडियो का उसने गंभीर संज्ञान लिया है और जोर दिया कि ऐसे कृत्य संवैधानिक संस्थाओं के प्रति जानबूझकर अनादर दर्शाते हैं। विश्वविद्यालय ने पुलिस से सोमवार रात एक कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के खिलाफ नारे लगाए जाने के मामले में प्राथमिकी दर्ज करने का भी आग्रह किया है।

सूद ने कहा, जेएनयू में शरजील और उमर खालिद का समर्थन किया गया। वहां जो हुआ है, वह निंदनीय है और राष्ट्र के खिलाफ है। आप नीतिगत मुद्दों पर लड़ सकते हैं, लेकिन लोकतंत्र में हिंसा के लिए कोई जगह नहीं है। सिरसा ने आरोप लगाया कि नारे लगाने वालों के मन में संविधान या कानून के प्रति कोई सम्मान नहीं है। (संबंधित पेज-12)

पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश कलमाड़ी का निधन

पुणे। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री सुरेश कलमाड़ी का लंबी बीमारी के बाद मंगलवार तड़के पुणे में निधन हो गया। वह 81 वर्ष के थे। उन्होंने करीब तीन बजकर 30 मिनट पर अंतिम सांस ली। राजनीति और खेल प्रशासन में उनका लंबा करियर रहा। भारतीय खेलों पर उनकी पकड़ ने सफलता और विवाद दोनों को जन्म दिया। वह रेल राज्य मंत्री भी रहे और उन्होंने भारतीय ओलंपिक संघ के अध्यक्ष के रूप में भी सेवाएं दीं। मद्रास में 1944 में जन्मे कलमाड़ी ने पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज से पढ़ाई की थी।

बांग्लादेश में एक और हिंदू कारोबारी की हत्या

ढाका, एजेंसी

बांग्लादेश के नरसिंगदी शहर में एक 40 वर्षीय हिंदू किराना कारोबारी की धारदार हथियार से अज्ञात हमलावरों ने हत्या कर दी। बढ़ती हिंसा को लेकर उसने फेसबुक पर पोस्ट किया था। यह घटना सोमवार रात को हुई। इससे कुछ ही घंटों पहले बांग्लादेश के जेस्सोर जिले में एक हिंदू व्यापारी की सिर में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी थी, जो एक समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक भी थे। बांग्लादेश में 18 दिन में छठी हत्या की वारदात हुई है।

पलाश उपजिला के चारसिंदूर बाजार में दुकानदार मणि चक्रवर्ती पर सोमवार रात करीब 11 बजे हमला कर उनकी हत्या कर दी गई। पलाश पुलिस थाना प्रमुख (ओसी) शाहेद अल मामून ने बताया कि मणि शिबपुर उपजिला के साधरचार यूनियन निवासी मदन ठाकुर के बेटे थे। मणि चारसिंदूर बाजार में किराना दुकान के मालिक थे। हाल के सप्ताहों में मारे गए वह तीसरे हिंदू कारोबारी हैं।

पुलिस और स्थानीय लोगों ने बताया कि मणि जब सोमवार रात दुकान बंद करके अपने घर लौट रहे थे, तभी अज्ञात हमलावरों ने उन पर धारदार एवं स्थानीय रूप से निर्मित हथियार से वार किया। मणि की मौके पर ही मौत हो गई। शाहेद ने कहा कि पुलिस घटना की सूचना मिलने के बाद तुरंत मौके पर पहुंची और दोषियों की पहचान कर उन्हें गिरफ्तार करने के लिए जांच शुरू कर दी गई है। शव को पोस्टमॉर्टम के लिए नरसिंगदी सदर अस्पताल के शवगृह भेजा गया है। इससे पहले भी हिंदू समुदाय के सदस्यों के खिलाफ हिंसक घटनाएं हो चुकी हैं। सोमवार को खुलना मंडल में जेस्सोर के केशबपुर उपजिला में अरुआ गांव निवासी 38 वर्षीय राणा प्रताप के सिर में गोली मारकर उनकी हत्या कर दी थी।

मृतक मणि चक्रवर्ती

- बढ़ती हिंसा को लेकर फेसबुक की थी पोस्ट धारदार हथियार से हमला, 18 दिन में छठी हत्या

तौकीर के बेटे की कार बस में घुसी, तलाशी में ड्रग्स- सिरिंज मिले

संवाददाता, तिलहर

अमृत विचार: तौकिर रजा के बेटे की कार मंगलवार शाम शाहजहांपुर के तिलहर थाना क्षेत्र में रोडवेज बस में पीछे घुस गई। हादसे में कार का अगला हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया और फरमान रजा मामूली रूप से घायल हो गया। सूचना पर पहुंची तिलहर पुलिस उसे हिरासत में लेकर थाने आई, देर रात तक उससे पूछताछ होती रही। वहीं कार की तलाशी में क्रिस्टल नामक ड्रग्स और सिरिंज बरामद हुआ।

पुलिस जांच में सामने आया है कि कार चालक का वाहन पर नियंत्रण नहीं था, जिससे पीछे से बस में टक्कर हो गई। पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने बताया कि हादसे में फरमान रजा को हल्की चोटें आई हैं और मामले की जांच जारी है। दरअसल फरमान रजा पिता तौकीर रजा के केस की पैरवी के लिए इलाहाबाद हाईकोर्ट जा रहा था। इसी दौरान तिलहर क्षेत्र में उसकी कार हादसे का शिकार हो गई। पुलिस का कहना है कि हादसे के कारणों की जांच की जा रही है। घटना के बाद युवक को कोतवाली लाकर आवश्यक पूछताछ शुरू की गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए एसपी देहात भंवरे दीक्षा स्वयं पूछताछ कर रही हैं।

हादसे के बाद क्षतिग्रस्त कार और पुलिस हिरासत में तौकीर रजा का बेटा फरमान रजा।

- तिलहर पुलिस ने लिया हिरासत में देर रात होती रही पूछताछ

तौकीर राजा के बेटे फरमान के पास से क्रिस्टल नाम की ड्रग्स मिली है पूछताछ में फरमान ने बताया है कि यह पुड़िया उसने अपने निजी उपयोग के लिए रखी थी।

- भंवरे दीक्षा एसपी ग्रामीण

विधायक ने सरकारी अस्पताल में मरीज का इलाज करते झोलाछाप डॉक्टर पकड़ा

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: सरकारी अस्पताल की व्यवस्थाओं की मंगलवार को उस समय पोल खुल गई, जब पीएचसी में एक झोलाछाप डॉक्टर को मरीजों का इलाज करते हुए भाजपा विधायक ने पकड़ा। एमओआईसी ने आरोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई।

बीजेपी विधायक वीर विक्रम सिंह मदनापुर क्षेत्र के बुधवाना पीएचसी पर मंगलवार को निरीक्षण करने पहुंचे। उन्हें वहां एक झोलाछाप मरीजों को देखकर दवाएं लिखते मिला। विधायक ने मरीजों से स्वस्थ सेवाओं की जानकारी ली, फिर स्टाफ से परिचय लिया। कुर्सी पर बैठे झोलाछाप ने अपना नाम देवेंद्र निवासी मदनापुर बताया। विधायक ने ड्यूटी रजिस्टर चेक किया तो उसमें इस नाम का कोई डॉक्टर नहीं मिला। इसके बाद फर्जी डॉक्टर होने की बात सामने आई।

- भाजपा विधायक वीर विक्रम पहुंचे थे निरीक्षण के लिए, रिपोर्ट दर्ज

विधायक ने तत्काल इसकी जानकारी डीएम और थाना मदनापुर पुलिस को दी। मदनापुर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर झोलाछाप को पकड़कर थाने लाई। उसके बाद एडीएम एफआर अरविंद कुमार भी पीएचसी पहुंच गए। बताया जा रहा है कि देवेंद्र पीएचसी पर प्राइवेट रूप से काम करता हैं। मंगलवार को ही नए एमओआईसी डॉ. अश्वनी की ज्वाइनिंग हुई थी, लेकिन वह पीएचसी पर गैर हाजिर थे। निरीक्षण के दौरान पीएचसी पर तैनात लैब टेक्नीशियन और फार्मासिस्ट भी गैर हाजिर मिले। उनकी गैर मौजूदगी में फर्जी डाक्टर मरीजों का इलाज कर रहा था।

मदनापुर थाने में एमओआईसी की तहरीर पर फर्जी डॉ. देवेंद्र के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई है। साथ ही इस पर एक रिपोर्ट डीएम को भेजी जा रही है। एडीएम वित्त एवं राजस्व अरविंद कुमार ने बताया कि उन्होंने पीएचसी का निरीक्षण किया है। फर्जी रूप से इलाज करने वाले झोलाछाप को थाने भेज दिया गया है। उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज करा दी गई है। वहीं इस मामले में जब सीएमओ से फोन कर उनका पक्ष जानने की कोशिश की तो उन्होंने फोन नहीं उठाया।

विकास को गति | मुख्यमंत्री बोले-ग्रामीण रोजगार राहत नहीं, आत्मनिर्भरता का आधार बनेगा

गड्ढा खोदने-भरने की योजना नहीं होगी 'जी राम जी' : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- गांवों में बनेंगी टिकाऊ परिसंपत्तियां समय पर काम और श्रमिकों को मिलेगा सम्मानजनक जीवन

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने स्पष्ट किया है कि विकसित भारत 'जी राम जी' योजना के तहत अब गड्ढा खोदने और फिर उसे भरने जैसे निरर्थक कार्य नहीं होंगे। इस योजना का उद्देश्य हर गांव में टिकाऊ परिसंपत्तियों का निर्माण कर स्थायी विकास को गति देना और स्थानीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह योजना केवल अस्थायी राहत तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि ग्रामीण आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार बनेगी। सरकार समय पर काम उपलब्ध कराएगी और श्रमिकों को सम्मानजनक जीवन सुनिश्चित करेगी। योगी मंगलवार को लोकभवन ऑडिटोरियम में विकसित भारत-गारंटी फॉर रोजगार एवं आजीविका मिशन (ग्रामीण) के संबंध में ब्रीफिंग दे रहे थे। सीएम ने स्पष्ट किया कि अस्थायी और अधूरी परिसंपत्तियों का दीर्घकालीन लाभ नहीं होता उन्होंने कहा कि विकसित भारत का सपना तभी साकार होगा, जब गांव विकसित होंगे, ग्रामीण अर्थव्यवस्था सशक्त बनेगी, किसान आत्मनिर्भर होगा और श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा व सम्मान मिलेगा। योगी ने कहा कि ग्राम पंचायतें अधिनियम के अंतर्गत कराए जाने वाले कार्यों की चार श्रेणियां तय कर सकेंगी। जल संरक्षण के लिए रेन वॉटर हार्वेस्टिंग, चेकडैम सहित अन्य स्थायी संरचनाएं विकसित की जा सकेंगी। ग्रामीण ढांचे के अंतर्गत सड़क, नाली, खेल मैदान, ओपन जिम, बाजार और दुकानों जैसे आजीविका-संबंधी कार्य कराए जाएंगे। आपदा प्रबंधन और प्रतिकूल मौसम से निपटने की तैयारी भी योजना का हिस्सा होगी।

किसानों के हित सुरक्षित

योगी ने कहा योजना को पूरी तरह डिमांड-ड्रिवन बनाया गया है। रोजगार गारण्टी को 100 दिन से बढ़ाकर 125 दिन कर दिया गया है। मानदेय का साप्ताहिक भुगतान होगा और भुगतान में देरी होने पर मुआवजे का प्रावधान भी किया गया है। समय पर काम न मिलने की स्थिति में बेरोजगारी भत्ता अब कानूनी अधिकार बन चुका है। खेती के मौसम में किसानों को मजदूरों की कमी न हो, इसके लिए बुआई और कटाई के समय 60 दिन तक कार्य-विराम का अधिकार है, जिससे किसान-मजदूर दोनों के हित सुरक्षित रहेंगे।

प्रत्येक 6 माह में सोशल ऑडिट अनिवार्य

कैग मानकों के अनुरूप प्रत्येक छह माह में अनिवार्य सोशल ऑडिट, बहुस्तरीय समयबद्ध शिकायत निवारण और जिला लोकपाल की व्यवस्था भी की गई है। केंद्र-राज्य की 60:40 की साझेदारी से यह अधिनियम वित्तीय अनुशासन और संघीय संतुलन को मजबूती देगा। इससे राज्यों को 17,000 करोड़ अतिरिक्त मिल सकते हैं। वहीं टेक्नोलॉजी को कानूनी अधिकार का दर्जा देते हुए बायोमैट्रिक उपस्थिति, जियो-टैगिंग, रियल टाइम मोबाइल एप मॉनिटरिंग, एआई आधारित निगरानी और डिजिटल भुगतान लागू होंगे।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 7 जनवरी 2026

शाहजहांपुर

जिले में कड़ाके की ठंड से जनजीवन हो रहा अस्त-व्यस्त

घना कोहरा और न्यूनतम तापमान में तेज गिरावट से बढ़ी परेशानी, न्यूनतम पारा 5.6 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचा, दृश्यता 50 मीटर से भी कम

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः जिले में मंगलवार को भी कड़ाके की ठंड का असर बना रहा। सुबह के समय घना कोहरा छाए रहने से जनजीवन अस्त-व्यस्त दिखाई दिया। स्थानीय मौसम स्थिति के अनुसार जिले में न्यूनतम तापमान लगभग 5.6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि कई इलाकों में दृश्यता 50 मीटर से भी कम रही। कोहरे के चलते सड़कों पर वाहनों की रफ्तार धीमी पड़ गई और लोगों को आवागमन में परेशानी का सामना करना पड़ा। मौसम विभाग के अनुसार जिले में शीतलहर और घने कोहरे की स्थिति बनी हुई है, जो आने वाले कुछ दिनों तक जारी रह सकती है। सुबह और शाम के समय ठंड का असर ज्यादा महसूस किया जा रहा है।

मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि सर्द हवाओं के कारण तापमान में और गिरावट आ सकती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों और खुले इलाकों में ठंड की कड़वाहट अधिक रहेगी। जिले के विभिन्न हिस्सों में न्यूनतम तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है, जिससे शीतलहर जैसी स्थिति बन गई है। स्वास्थ्य विशेषज्ञों की ओर से सर्दी को देखते हुए सतर्कता बरतने की सलाह दी जा रही है। खासकर बच्चों, बुजुर्गों और श्वसन संबंधी रोगों से ग्रसित लोगों को अतिरिक्त सावधानी बरतने को कहा गया है।

मौसम विभाग के अनुसार जिले में एक सप्ताह तक न्यूनतम तापमान 5 से 8 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है, जबकि दिन का तापमान 14 से 19 डिग्री सेल्सियस के आसपास रह सकता है। दिन में हल्की धूप निकलने के आसार हैं, लेकिन सुबह और शाम को ठंड का असर बना रहेगा। कोहरे के कारण सड़क और रेल यातायात पर भी असर पड़ सकता है। प्रशासन और पुलिस की ओर से ठंड और कोहरे को देखते हुए निगरानी बढ़ाई गई है। लोगों से अपील की गई है कि वे गर्म कपड़े पहनकर ही घर से निकलें और सुबह-शाम अनावश्यक यात्रा से बचें।

सुबह के समय घना कोहरा छाया रहा।

- अगले सप्ताह तक 5–8 डिग्री के बीच रह सकता है तापमान

प्रशासनिक तैयारियां

ठंड और कोहरे को देखते हुए प्रशासन की ओर से जिले में सतर्कता बढ़ा दी गई है। प्रमुख चौराहों और व्यस्त मार्गों पर पुलिस बल को तैनात किया गया है, ताकि कोहरे के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को रोका जा सके। रैन बसेरों और सार्वजनिक स्थानों पर अलाव की व्यवस्था कराई जा रही है। बेघर और जरूरतमंद लोगों को ठंड से बचाने के लिए नगर निकायों को सक्रिय किया गया है।

अलाव पर उठे सवाल

कड़ाके की ठंड के बीच नगर निगम की ओर से शहर के विभिन्न इलाकों में अलाव जलवाए जा रहे हैं, जिससे राहगीरों और जरूरतमंद लोगों को राहत मिल रही है। कुछ मोहल्लों और चौराहों पर अलाव न जलने की शिकायतें भी सामने आ रही हैं। स्थानीय लोगों का कहना है कि कई स्थानों पर अलाव की व्यवस्था कागजों तक सीमित है, जिससे ठंड में परेशानी बढ़ रही है।

न्यूज ब्रीफ

सपा की बैठक में चुनावी रणनीति पर मंथन

तिलहर, अमृत विचार : समाजवादी पार्टी की विधानसभा क्षेत्र इकाई की बैठक पार्टी कार्यालय में विधानसभा अध्यक्ष सूरजपाल यादव की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में आगामी 2027 विधानसभा और पंचायत चुनावों को लेकर चर्चा की गई। मुख्य अतिथि और एसआईआर की क्षेत्रीय प्रभारी, पूर्व लोकसभा प्रत्याशी रहीं ज्योत्स्ना कश्यप ने कार्यकर्ताओं से गांव-गांव तक पार्टी की नीतियां पहुंचाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आगामी चुनावों में विकास, रोजगार और किसान हित प्रमुख मुद्दे रहेंगे। बैठक में जिला पंचायत सदस्य रामदास राठौर, ओमपाल सिंह कुशवाहा, जुबेर खान, नौशाद खान, रामजी गुप्ता, राजेंद्र कुशवाहा, रघुनाथ कुशवाहा, विजय कुशवाहा, राकेश पाल, राजकुमार कश्यप एडवोकेट, सुभाष चंद्र शर्मा एडवोकेट सहित कार्यकर्ता मौजूद रहे। संचालन नवनीत बौद्ध ने किया।

गांव बंधापुर से तीन भैंस चुराकर ले गए चोर

शाहजहांपुर, अमृत विचार : जलालाबाद थाना क्षेत्र के गांव बंधापुर निवासी बहमपाल ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि रविवार की रात में घर के अंदर सो रहा था। उसके घर के बाहर पड़े टीन शेड में तीन भैंसे और एक भैंस का बच्चा बंधा हुआ था। चोर रात में तीन भैंस चुराकर ले गए। उसको भैंस चोरी की जानकारी जब हुई रात में एक बजे भैंस का बच्चा चिल्लाने लगा था। उसने देखा कि तीन भैंसे नहीं थी। उन्होंने डायल 112 को सूचना दी थी। डायल 112 के सिपाहियों ने आकर देखा था। उसने बताया कि करीब ढाई लाख रुपये की भैंस थी। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

सैयद शहीद दादा मियां का उर्स आज

शाहजहांपुर, अमृत विचार : हजरत सैयद शहीद मियां उर्फ बेरियों वाले दादा मियां का सालाना उर्स 7 जनवरी को मोहल्ला बीबी जई में मनाया जाएगा। उर्स के व्यवस्थापक साजिद, मोहम्मद इमरान, अजय ने बताया कि 7 जनवरी को सुबह सात बजे कुरआन ख्वानी होगी। शाम 4:30 बजे पीराने पीर दस्तगीर का कुल शरीफ होगा। शाम 6 बजे मीलाद शरीफ होगी। रात 8 बजे सैयद शहीद मियां का कुल शरीफ होगा। इसके बाद महफिल ए समा में कव्वालियां होंगी।

सब्जियों व बागवानी की सुरक्षा को एडवाइजरी जारी

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः इस समय हल्की वर्षा एवं अन्य कृषि जलवायु अंचलों में मौसम मुख्यतः शुष्क रहने की संभावना है एवं जनपद में पड़ रहे घने कोहरे के कारण अधिकतम तापमान सामान्य से कम रहने के साथ शीत दिवस से अति शीत दिवस रहने की संभावना है। जिसको लेकर जिला उद्यान विभाग की ओर से एडवाइजरी जारी की गई है।

शाकभाजी की व्यावसायिक खेती में सब्जियों के खेतों में विशेषकर टमाटर, मिर्च फसल में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक हो रहा है। इसका फैलाव सफेद मक्खी व हापर कीट के द्वारा होता है। इसके फैलाव की रोकथाम हेतु फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एससी अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एसएल 0.5 मिली को प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जानकारी देते हुए उद्यान अधिकारी पुनीत पाठक ने बताया कि

आलू की फसल में झुलसा बीमारी की रोकथाम हेतु मैन्कोजेब, प्रोपिनेब व कार्यडाजिन युक्त फफूंदनाशी की 2.0-2.5 किग्रा मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है, उनमें किसी भी फफूंदनाशक सायमोक्सेनिल 8 प्रतिशत मैन्कोजेब 64 प्रतिशत डब्ल्यूपी का 2-2.5 किग्रा मात्रा 1000 लीटर पानी में घोलकर 16-16 दिन के अंतराल पर छिडकाव करें।

गोभीवर्गीय फसलों में डायमंड बैंक मौथ का प्रकोप होने पर क्लोरेन्टशनिलिप्रोल 0.5-1 मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। टमाटर तथा मिर्च की फसल को झुलसा रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से मैन्कोजेब का छिड़काव करें। फसल को रस चूसक कीटों से बचाव हेतु नीम सीढ़ कर्नल स्ट्रेक्ट 3-5 ग्राम या फिप्रोनिल 5 प्रतिशत एससी 0.5-0.75 मिली रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। साथ ही आम के बागों की जुताई करें ताकि मिज कीट, फल मक्खी, गुजिया कीट एवं जाला कीट की वे अवस्थाएँ जो जमीन में दूसरे वर्ष आने तक पड़ी रहती हैं, नष्ट हो जाएं, जनवरी माह में पुराने अनुपजाऊ बागों का जीर्णोद्धार अन्तर्गत घनी शाखाओं का कटाई-छंटाई का कार्य करें तथा कटे भाग पर कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का लेप लगाएं। आम, लीची में मिलीबग गुजिया कीट को पेड़ों पर चढ़ने से रोकने के लिए पेड़ के तने पर चारों ओर 400 गेज की मोटी सफेद पॉलिथीन की 25 सेमी चौडी पट्टी लपेटकर भूमि से लगभग 40 सेमी ऊपर मिट्टी की ऊपरी परत चढ़ा दें।

छोटे-बड़े लाट साहब के जुलूस को लेकर बैठक

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में होली पर्व पर निकाले जाने वाले छोटे और बड़े लाट साहब के जुलूस को सकुशल संपन्न कराने को लेकर कलेक्ट्रेट में बिस्मिल सभागार में बैठक की गई। बैठक में जुलूस आयोजकों और जिले के गणमान्य व्यक्तियों के साथ तैयारियों को लेकर सुझाव और समस्याओं पर चर्चा की गई।

जिलाधिकारी ने कहा कि पूर्व वर्षों की तरह इस वर्ष भी लाट साहब के जुलूस परंपरागत ढंग से सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराए जाएंगे। उन्होंने बताया कि बीते वर्ष जुलूस के दौरान सामने आई समस्याओं को इस बार पहले से दूर कराया जाएगा। जुलूस मार्गों का अधिकारियों की ओर से पूर्व भ्रमण कर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित कराई जाएंगी।

उन्होंने निर्देश दिए कि जुलूसों के समय निर्धारण को गंभीरता से लिया जाए और सभी जुलूस तय समय पर शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाएं। बैठक में सड़क मरम्मत, बैरीकेडिंग, पेयजल सहित अन्य व्यवस्थाओं की दिक्कत सामने आईं, जिनके समाधान के निर्देश अधिकारियों को दिए।

पुलिस अधीक्षक राजेश द्विवेदी ने कहा कि सभी पर्व और कार्यक्रम परंपरागत तरीके से ही मनाए जाएं। उन्होंने कहा कि पुलिस प्रशासन पूरी तरह से तैयार रहेगा और सभी जुलूसों को सकुशल संपन्न कराने के लिए पर्याप्त व्यवस्था की जाएगी। बैठक में नगर आयुक्त डॉ. विपिन कुमार मिश्र, मुख्य विकास अधिकारी डॉ. अपराजिता सिंह, अपर जिलाधिकारी प्रशासन रजनीश कुमार मिश्र, नगर मजिस्ट्रेट प्रवेंद्र कुमार, एसपीआरए दीक्षा भंवरे, एसपी सिटी देवेंद्र कुमार, अपर नगर आयुक्त एसके सिंह सहित अन्य अधिकारी, जुलूस आयोजक और गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

कलेक्ट्रेट के बिस्मिल सभागार में लाट साहब जुलूस की तैयारियों को लेकर आयोजित बैठक में मौजूद जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक और अन्य अधिकारी। ● अमृत विचार

- जुलूस मार्गों का निरीक्षण व सड़क मरम्मत और बैरीकेडिंग के निर्देश

बीएलए व बूथ प्रभारी वोटर लिस्ट चेक कर सही कराएं

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : समाजवादी पार्टी की मासिक बैठक क़स्बा पुवायां के मोहल्ला कसभरा तकिया नाहिल चौराहा मंडी रोड पर पार्टी कार्यालय पर सपा जिला महासचिव रणंजय सिंह यादव की अध्यक्षता में हुई। जिसमें मुख्य अतिथि जिला अध्यक्ष एवं पूर्व चेयरमैन तनवीर खां का जितेंद्र प्रसाद सहित पार्टी के नेताओं व पदाधिकारीयों एवं कार्यकर्ताओं ने फूलमाला पहनाकर स्वागत किया।

बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि 134 पुवायां विधानसभा में हर बूथ पर बीएलए व बूथ प्रभारी अपनी अपनी वोटर लिस्ट को चेक कर उनको सही करवाएं ताकि किसी भी मतदाता का नाम न छूटे। साथ ही नए वोट बढ़ाने के संबंध में चर्चा की गई। जिलाध्यक्ष तनवीर खां ने कहा कि जो पार्टी के प्रति समर्पित कार्यकर्ता अपने बूथ को जीतने का काम करता है उसका सबसे बड़ा सम्मान होता है और पार्टी के लिए वही सम्मानजनक व्यक्ति होता है उन्होंने कहा मौजूदा उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में जनपद शाहजहांपुर में अपराधों का ग्राफ बहुत तेजी के साथ बढ़ रहा है।

जिला महासचिव रणंजय सिंह यादव ने कहा कि पार्टी के सभी कार्यकर्ता पूरी मेहनत और निष्ठा से अभी से ही आगामी 2027 के विधानसभा के चुनाव में जुट जाए आने वाला समय समाजवादी पार्टी का है। संचालन पुवायां नगर उपाध्यक्ष पीएल गौतम ने किया।

बैठक में प्रदेश सचिव विजय सिंह, महानगर अध्यक्ष चौधरी रामकुमार भोजवाल, जिला उपाध्यक्ष ओंकार सिंह, मिश्रीलाल पटेल, जिला सचिव संतोष कुमार पाल, राजकुमार शर्मा, शफी उर रहमान खान, डॉ मुकेश गौतम, सुनील सागर आदि ने भी विचार व्यक्त किए। आयोजक सपा नेता व प्रधान जितेंद्र प्रसाद ने आभार व्यक्त किया।

सपा की पुवायां में हुई मासिक बैठक को संबोधित करते सपा जिलाध्यक्ष तनवीर खां। ● अमृत विचार

- सपा की मासिक बैठक में नए वोट बढ़ाने पर हुई चर्चा

प्री बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्र वितरण को एक दिन बचा

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : यूपी बोर्ड परीक्षा से पहले प्री बोर्ड परीक्षा के प्रश्न पत्र वितरण के लिए दो दिन का और मौका दिया गया है। राजकीय इंटर कॉलेज से तहसील के स्कूलों के लिए प्रश्न पत्रों के बंडलों का वितरण 31 दिसंबर से किया जा रहा है। तीन दिन की कालेजों में छुट्टी होने के कारण अभी करीब 45 स्कूल ऐसे हैं, जो प्री बोर्ड परीक्षा के पेपर नहीं ले गए हैं। उनके लिए दो दिन का समय बढ़ाया गया है।

माध्यमिक शिक्षा परिषद से संचालित होने वाली परीक्षा 18 फरवरी से होगी। बोर्ड परीक्षा से पहले ही आठ जनवरी से प्री बोर्ड परीक्षा को कराया जाएगा। प्री बोर्ड को रिजर्व प्रश्नपत्रों के जरिये कराया जाएगा। प्रश्नपत्रों के बंडलों के वितरण के लिए डीआईओएस ने तहसीलवार दिन तय किया था।

जीआईसी के प्रधानाचार्य अनिल सिंह ने बताया कि प्री-बोर्ड के जरिये छात्र-छात्राओं को बोर्ड परीक्षा का अनुभव मिलेगा। इससे वह और बेहतर तैयारी कर परीक्षा को दे सकेंगे। शासन से शीतलहर के कारण तीन दिन का अवकाश घोषित था। इसलिए अभी बहुत से कालेज प्री बोर्ड परीक्षा के प्रश्नपत्र नहीं ले गए हैं। उनके लिए 7 जनवरी को जीआईसी से प्रश्नपत्रों का वितरण किया जाएगा।

- राजकीय इंटर कॉलेज से 45 स्कूल नहीं ले गए प्रश्नपत्र

कस्तूरबा गांधी में अवकाश 14 तक बढ़ाने की मांग

तिलहर, अमृत विचार : कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में शीतकालीन अवकाश 14 जनवरी तक किए जाने की मांग को लेकर विश्व हिंदू परिषद के नगर अध्यक्ष अरविंद कुमार गुप्ता ने जिलाधिकारी को पत्र भेजा है। उन्होंने बताया कि इन विद्यालयों में फिलहाल 8 जनवरी तक ही अवकाश घोषित किया गया है, जबकि शासन स्तर से 14 जनवरी तक अवकाश घोषित है। छोटे बच्चों के स्वास्थ्य और शिक्षा को देखते हुए कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में भी 14 जनवरी तक अवकाश किए जाने की मांग की गई है।

नगर आयुक्त ने सुनीं शिकायतें, 3 निस्तारित

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : प्रत्येक मंगलवार को होने वाला जन सुनवाई दिवस में हर सप्ताह शिकायतों का आंकड़ा गिरता जा रहा है।आरोप है कि कर्मचारी कुछ लोगों को लाकर समस्याएं रखवाते है, जिनमें से कुछ का निस्तारण कर दिया जाता है।

मंगलवार को सुबह 10 बजे से सिस्टेमैटिक एडमिनस्ट्रेटिव, मैकेनिज्म, ब्रिगिंग, हैपीनेन्स एण्ड वैल्यू (संभव) के अन्तर्गत नगर निगम कार्यालय में जन सुनवाई दिवस आयोजित किया गया। जिसमें नगर क्षेत्र के लोगों ने सम्मिलित होकर साफ-सफाई, शुद्ध पेयजल की आपूर्ति, प्रकाश बिन्दु, नाली निर्माण एवं कर विभाग से संबंधित अपनी-अपनी समस्याओं एवं शिकायतों को रखा। नगर आयुक्त ने नगर क्षेत्र से प्राप्त जन समस्याओं व शिकायतों को गंभीरतापूर्वक सुना और उनका संज्ञान लेते हुए संबंधित विभागों के अधिकारियों व कर्मचारियों को प्राप्त शिकायतों को प्राथमिकता के आधार पर जन-सामान्य की संतुष्टि, समदृष्टि को ध्यान में रखते हुये ससमय निस्तारण कराए जाने के निर्देश दिए।

जन-सुनवाई दिवस में पांच समस्याएं / शिकायतें प्राप्त हुई, जिसमें से तीन समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण कराया गया। ये समस्याएं क्या थीं और किसने की थीं, ये नहीं बताया गया। जन सुनवाई दिवस में सहायक नगर आयुक्त राजकुमार गुप्ता, सहायक नगर आयुक्त तरुण प्रताप सिंह, नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार मिश्रा, महाप्रबंधक जल विजय नारायण मौर्य व अन्य अधिकारी, कर्मचारी मौजूद रहे।

लोगों की समस्याएं सुनते नगर आयुक्त बिपिन कुमार मिश्र। ● अमृत विचार

कथा में श्रीराम जन्म का प्रसंग सुनाया

कलान, अमृत विचारः क्षेत्र के गांव पृथ्वीपुर में चल रही श्रीमद् भागवत कथा। कथा वाचक माधव शास्त्री ने भगवान श्रीराम के जन्म का प्रसंग सुनाया। पूरे पंडाल का वातावरण श्रीराम की भक्ति में रंग गया। इस दौरान कथा वाचक ने श्रीराम के चरित्र से प्रेरणा लेने की अपील लोगों से की। कथा वाचक ने बताया कि राजा दशरथ के संतान न होने के कारण वह अपने कुलगुरु वशिष्ठ के आश्रम जाते हैं और वहां गुरु वशिष्ठ श्रृंगी ऋषि से कामेष्टि यज्ञ करवाते हैं। फिर यज्ञ कुंड से अग्नि देवता प्रकट होकर राजा दशरथ को खीर प्रदान करते हैं, इस खीर को राजा दशरथ रानी कौशल्या, कैकई और सुमित्रा को सेवन करने के लिए देते है। खीर के खाने से तीनों रानियों को भगवान राम सहित भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म होता है। पृथ्वीपुर गांव के किशनपाल प्रधान पंकज कुमार शास्त्री, सचिन यादव कोटेदार, वीरभान यादव, अनिल यादव, अंकित (प्रधान) अखिलेश परिक्षत, कुशुमा यादव, ध्यानपाल, अंगूरा यादव आदि लोगों ने रुपयों का हार पहनाया।

3 दिन में हर वार्ड से पानी के सैंपल लेकर जांच कराएं

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल व्यवस्था को लेकर बैठक कैंप कार्यालय में हुई। जिलाधिकारी ने नगर निगम और नगर निकायों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि तीन दिन में प्रत्येक वार्ड से अलग-अलग स्थानों के पानी के सैंपल लेकर लैब में जांच कराई जाए। इसके साथ ही सभी पानी की टंकियों को 15 दिनों के भीतर साफ कराने के निर्देश दिए गए।

जिलाधिकारी ने कहा कि मलिन बस्तियों में साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाए और बीते छह माह में पेयजल से संबंधित प्राप्त शिकायतों का अवलोकन कर आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। उन्होंने नगरीय क्षेत्रों में सीवर लाइन और पेयजल पाइप लाइन के आपसी क्रॉस-कनेक्शन की नियमित जांच कराने को कहा, ताकि कहीं भी टूटी, क्षतिग्रस्त या लीकेज की स्थिति न बनी रहे। उन्होंने निर्देश दिए कि सीवर लाइन या पेयजल पाइप लाइन में टूट-फूट अथवा रिसाव की सूचना मिलते ही तत्काल मरम्मत या पुनर्स्थापन की कार्रवाई की जाए। यह भी सुनिश्चित किया जाए कि सीवर लीकेज की स्थिति में भी संबंधित क्षेत्र में स्वच्छ पेयजल की आपूर्ति निर्बाध रूप से होती रहे। बैठक में जलापूर्ति से जुड़ी पानी की टंकियों की नियमित सफाई, नलकूप, हैंडपंप, ओवरहेड टैंक और पाइप लाइनों के सुचारू संचालन पर भी जोर दिया गया। उपभोक्ता के उपयोग प्वाइंट पर जल के नमूने एकत्र कर नियमित ओटी परीक्षण कराने और पुरानी व लीकेज वाली पाइप लाइनों को प्राथमिकता पर बदलने के निर्देश दिए गए। इस अवसर पर नगर आयुक्त डॉ. विपिन कुमार मिश्र, अपर जिलाधिकारी प्रशासन रजनीश कुमार मिश्र, अधिशासी अभियंता जल निगम ग्रामीण सनी सिंह, शहरी मोहम्मद अय्याज सहित नगर निकायों के अधिशासी अधिकारी मौजूद रहे।

- स्वच्छ पेयजल व्यवस्था को लेकर हुई बैठक में डीएम के निर्देश

टीईटी से राहत की मांग, शिक्षक संघ ने सौंपा ज्ञापन

- राज्यसभा में मुद्दा उठाने और मंत्री को पत्र लिखने का आश्वासन

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के शिष्टमंडल ने राज्यसभा सांसद मिथिलेश कुमार कठेरिया से मुलाकात कर टीईटी अनिवार्यता से संबंधित ज्ञापन सौंपा। प्रतिनिधिमंडल ने नववर्ष की शुभकामनाएं दीं और बताया कि 29 जुलाई 2011 से पूर्व नियुक्त अनेक शिक्षक टीईटी नियमावली में हुए बदलाव के कारण परेशानियों का सामना कर रहे हैं।

शिक्षकों ने कहा कि नई नीति लागू होने के बाद टीईटी न होने के कारण वेतन, पदोन्नति और सेवा सुरक्षा से जुड़ी जटिलताएं उत्पन्न हो गई हैं। उनका कहना है कि उनकी नियुक्ति पूर्व निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार हुई थी और वे लंबे समय से अपनी योग्यता, अनुभव और समर्पण के आधार पर शिक्षा व्यवस्था में योगदान दे रहे हैं। ऐसी स्थिति में उनकी सेवाओं को असुरक्षित करना अन्यायपूर्ण है और इससे शिक्षा व्यवस्था प्रभावित होती है। शिष्टमंडल ने आग्रह किया कि 29 जुलाई 2011 से पूर्व नियुक्त शिक्षकों को उनके योगदान को देखते हुए टीईटी से मुक्त कराने के लिए यह विषय राज्यसभा में मजबूती से उठाया जाए। इस पर सांसद ने शिक्षकों की समस्याओं के प्रति सहानुभूति जताते हुए आश्वस्त किया कि वह केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान को पत्र लिखेंगे और इस प्रकरण पर उनसे वार्ता करेंगे। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष यशपाल सिंह, जिला मंत्री विजय प्रताप सिंह, जिला कोषाध्यक्ष नितिन मिश्रा, जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष जुबेर आलम, जिला संयुक्त मंत्री अजीत कनौजिया समेत अन्य मौजूद रहे।

राज्यसभा सांसद को ज्ञापन सौंपते शिक्षक संघ के पदाधिकारी। ● अमृत विचार

एसआईआर कार्य का एसडीएम ने किया स्थलीय निरीक्षण

तिलहर, अमृत विचारः एसडीएम सदानंद सरोज ने विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान के तहत निगोही, रटा, कबीरपुर और तिलहर क्षेत्र के कई मतदान केंद्रों का स्थलीय निरीक्षण किया। उन्होंने बूथों पर पहुंचकर बीएलओ से अभियान की प्रगति की जानकारी ली और आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। एसडीएम ने मतदाता सूची के शुद्धिकरण को लोकतांत्रिक व्यवस्था की आधारशिला बताते हुए कहा कि कोई भी पात्र नागरिक मतदाता सूची से वंचित न रहे, यह सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने बीएलओ के कार्यों की सतत निगरानी पर जोर देते हुए कहा कि गणना प्रपत्रों का विवरण और संकलन समय से पूरा होना चाहिए।

हजरत बाबा कलीम उल्ला शाह का उर्स कल से

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : हजरत बाबा कलीम उल्ला शाह रहमतुल्लाह अलैह का तीन दिवसीय 37वां सालाना उर्स यहां मोहल्ला निसरजई जलाल नगर में 8, 9 और 10 जनवरी को मनाया जाएगा। उर्स की तैयारियां जोर-शोर से की जा रही हैं।

उर्स के संयोजक व गद्दी नशीन अजमल मियां निजामी ने बताया कि पीर-ए-तरीकत सज्जादानशीन हाजी पीर जाकिर अली मियां चिश्ती निजामी की रूहानी सरपरस्ती में सालाना उर्स 8 को सुबह 7 बजे कुरान ख्वानी के साथ शुरू होगा। सुबह 10 बजे महफ़िल गौस ए आजम होगी। जिसमें मुफ्ती राहिल रजा मरकजी समेत कई उलेमा को आमंत्रित किया गया है। रात 9 बजे महफिल- ए- मीलाद होगी। जिसमें तिलहर के मीलाद डॉ. जमीर अहमद व डॉ. सगीर अहमद आदि जिक्र ए रसूल करेंगे। 9 जनवरी को रात 9 बजे से महफिल ए समा में मशहूर कव्वाल शब्बू शादाब कुंदरकी व मासूम हसन साबरी आदि कव्वालियां पेश करेंगे। 10 जनवरी को सुबह 9 बजे से कुल शरीफ आयोजित किया जाएगा। जिसमें मुंबई, दिल्ली, जबलपुर, बहराइच, पीलीभीत, बदायूं, बरेली आदि कई जिलों से जायरीन आएंगे।

कुल की महफिल में मुंबई से हाजी पीर मन्नान शेख निजामी, दिल्ली दरगाह निजामुद्दीन से सय्यद हम्माद निजामी सहित कई खानकाहों के सज्जादानशीन व खादिम भी आएंगे। इस दौरान जुनैद निजामी व उवैस निजामी ने बताया कि तीन दिवसीय उर्स की तैयारियां पूरी की जा रही हैं। बाहर से आने वाले मेहमानों के ठहरने की इंतजाम भी किया गया है। तीनों दिन जायरीन के लिए लंगर का वितरण भी किया जाएगा।

सालाना उर्स की जानकारी देते गद्दीनशीन अजमल मियां निजामी। ● अमृत विचार

न्यूज ब्रीफ

मां के साथ की मारपीट पीड़िता ने दी तहरीर

खुटार, अमृत विचार : गांव बेला निवासीसुशीला देवी ने पुलिस को बताया कि बेटा सुमित कुमार काफी शराब पीता है। शराब की लत के चलते घरेलू सामान बेच देता है। मना करने पर गाली-गलौज और मारपीट करता है। जबकि घर में भी तोड़फोड़ करता है। वह बेटे से काफी परेशान है। मंगलवार को सुशीला देवी ने पुलिस को तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

आधा दर्जन लोगों के केबल चोरी

पुवायां, अमृत विचार : ग्रामीण ने लगभग आधा दर्जन लोगों का विद्युत केबिल चोरी होने पर नामजद शिकायत कर कार्रवाई की मांग की है। क्षेत्र के गांव जेवाँ निवासी ओमेंद्र ने पुलिस को शिकायत कर बताया कि सोमवार की रात उसका व संतोष, विशन, अवधेश व राजेश आदि के विद्युत केबिल चोरी हो गया। जानकारी करने पर गांव कटका के एक व्यक्ति के द्वारा चोरी करना पता चला है। पीडित ने शिकायत कर आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करने की मांग की है।

युवती को घर से अगवा करने का आरोप

शाहजहांपुर, अमृत विचार : रोजा थाना क्षेत्र के एक गांव के व्यक्ति ने थाना में दी तहरीर में बताया कि 3 जनवरी की शाम उसकी 18 वर्षीय बहन घर से दुकान पर सौदा लेने गई थी, जो अब तक वापस नहीं आई है। उसकी बहन कामरान से फोन पर बात करती थी। उसकी बहन घर से नकदी ले गई है। उसको शक है कि उसकी बहन को कामरान अगवा करके ले गया है। पुलिस ने शक के आधार पर आरोपी के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस युवती और आरोपी की तलाश कर रही है।

गन्ना तोड़ने के आरोप में बच्चे से की मारपीट

तिलहर, अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के गांव रतूली निवासी स्वर्गीय कमलेश की पत्नी गोदावती ने पुलिस को बताया कि सोमवार दोपहर उसका नौ वर्षीय बेटा शिवम अपने खेत से गन्ना तोड़कर ला रहा था। इसी दौरान रास्ते में कुछ लोगों ने उस पर अपने खेत से गन्ना तोड़ने का आरोप लगाते हुए लात-घूंसे और गन्ने से पिटाई कर दी। मारपीट में शिवम को गंभीर चोटें आईं। पीड़िता के अनुसार घटना का वीडियो सामने आने के बाद आरोपी उसके दरवाजे पर पहुंचे और वीडियो डिलीट कराने का दबाव बनाने लगे।

जिंदा को मृत दिखाकर बेची जमीन

कोर्ट के आदेश पर खुटार पुलिस ने 11 आरोपियों पर दर्ज की एफआईआर

संवाददाता, खुटार

अमृत विचारः पांडुचेरी में बेटे के साथ रह रहे बुजुर्ग किसान को 14 साल पहले ही मृत दिखाकर फर्जी मृत्यु प्रमाण पत्र व अन्य दस्तावेज बनवाकर उसके नाम करोड़ों की जमीन को जालसाजों ने बेच दिया। घटना की जानकारी होने पर किसान के असली वारिस ने मामले की शिकायत पुलिस और प्रशासन से की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई। जिसके बाद पीड़ित ने न्यायालय का सहारा लिया।

मंगलवार को पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर फर्जी दस्तावेज तैयार कर जमीन बेचने और खरीदने वालों के साथ ही उसमें शामिल गवाहों समेत 11 लोगों को नामजद करते हुए गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। नगर के मोहल्ला रायटोला में रहने वाले आरेंद्र दीक्षित ने बताया कि खुटार के गांव बिजौरा बिजौरिया में रहने वाले जगदीश चंद्र कई साल पहले अपने बेटे अजय कुमार के साथ पांडुचेरी चले गए थे और उनके नाम बिजौरा बिजौरियां में गाटा संख्या 368 रकबा 0.515 हेक्टेयर और गाटा संख्या 381 रकबा 10.444 हेक्टेयर थी। जिसकी वसीयत जगदीश चंद्र ने आरेंद्र दीक्षित के नाम कर दी थी और आरेंद्र ही उक्त भूमि की देखभाल कर रहे थे। आरेंद्र दीक्षित ने बताया कि इसी बीच गांव सिल्हुआ में रहने वाले दीपक कुमार पुत्र बल्दीराम, रितेश कुमार पुत्र बल्दीराम ने उक्त जगदीश चंद्र को 15 अगस्त 2005 को मृत दिखाते हुए उनकी भूमि का फर्जी और कूट रचित दस्तावेज तैयार कर अपने नाम वसीयत दर्ज कर ली। जबकि जगदीश चंद्र की मौत 1 दिसंबर 2019 को हुई थी। उक्त वसीयत में खुटार के मोहल्ला सरोजनीनगर निवासी गोपाल कृष्ण पुत्र प्रेमनारायण और बिजौरा बिजौरिया गांव निवासी राम भजन पुत्र बंधा ने झूठी गवाही दी।कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने फर्जी दस्तावेज तैयार कर जमीन बेचने खरीदने और उसमें गवाही देने वाले दीपक कुमार, रितेश कुमार, प्रकाश सिंह, इकबाल सिंह, अमरजीत सिंह, प्रभजोत सिंह, मोहम्मद रफीक, राशिद खान, काला सिंह, रामभजन, गोपालकृष्ण आदि के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता 2023 की गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

- आरोपियों ने 14 साल पहले फर्जी दस्तावेज से बेची थी जमीन

सुनवाई नहीं होने पर कोर्ट की ली शरण

जालसाजों ने 23 नवंबर 2025 को फर्जी दस्तावेज के सहारे उत्तर प्रदेश के जनपद बिलासपुर के गांव 22 बहादुरगंज निवासी प्रकाश सिंह पुत्र अमरजीत सिंह, अमरजीत सिंह पुत्र कबूल सिंह एवं उत्तराखंड के उधमसिंह नगर के मोहल्ला रूपपुर मनजीत निवासी इकबाल सिंह पुत्र गुरुदयाल सिंह, उधमसिंह नगर उत्तराखंड के गिरघई मुंशी निवासी प्रभजोत सिंह पुत्र महेंद्र सिंह व पीलीभीत जनपद के थाना पूरनपुर के गांव सिसरिया तालुके महाराजपुर निवासी मोहम्मद रफीक पुत्र अनवर शाह, सिरसापुर पुरनपुर पीलीभीत निवासी राशिद खान पुत्र ताजुद्दीन और बिजौरा बिजौरीया निवासी काला सिंह पुत्र रतन सिंह के नाम बैनामा कर दिया। जिसकी शिकायत आरेंद्र दीक्षित ने पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों से की। लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई। जिसके बाद पीड़ित आरेंद्र दीक्षित ने न्यायिक मजिस्ट्रेट पुवायां के न्यायालय में प्रार्थना पत्र दिया। जिस पर न्यायिक मजिस्ट्रेट गंभीरता से विचार करते हुए खुटार पुलिस को सभी आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच के आदेश दिए।

पेड़ से लटका मिला ग्रामीण का शव

शाहजहांपुर, अमृत विचारः सिसौआ गांव के बाहर खेत में एक व्यक्ति का शव पेड़ मिला है। मृतक शराब का शौकीन और एक दिन से लापता था।

रोजा थाना क्षेत्र के गांव सिसौआ निवासी राजेंद्र कुमार (50) का शव सोमवार की शाम गांव के बाहर पेड़ से लटका हुआ मिला। गांव वालों ने शव लटका देखा तो मृतक के परिवार वालों को सूचना दी। अजय कुमार मौके पर पहुंचे और शव की पहचान पिता के रुप में की। उन्होंने रोजा थाने पर सूचना दी। प्रभारी निरीक्षक राजीव कुमार सिंह मौके पर गए और शव को नीचे उतरवाया। मृतक के बेटे ने बताया कि रविवार की शाम को घर से निकले थे और रात भर वापस नहीं आए थे। उसने पिता की तलाश की और पता नहीं चला। बताते हैं कि राजेंद्र शराब पीने के आदी थे । पुलिस लाइन से फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंची और जांच करके नमूना लिया। परिवार वालों का कोई आरोप है। प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि राजेंद्र का शव पेड़ से लटका मिला था और प्रथम दृष्टया में यह मामला आत्महत्या का प्रतीक होता है।

अक्षय कदम पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित

संवाददाता, तिलहर/शाहजहांपुर

अमृत विचारः भाजपा नेता पर हमला करने और पुलिस कर्मचारियों से अभद्र व्यवहार करने के मामले में फरार चल रहे मुख्य आरोपी अक्षय कदम पर एसपी ने 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। पुलिस ने आरोपी की तलाश में टीम का गठन किया है। आरोपी की तलाश में पुलिस टीमें दूसरे जनपद को गई। पीड़ित भाजपा नेता ने आरोपियों के खिलाफ गैंगस्टर की कार्रवाई की मांग की है।

तिलहर थाना क्षेत्र के नगरिया पुलिस चौकी के निकट भाजपा नेता दिवाकर सिंह का होटल है। 19 दिसंबर की रात में कार में सवार लोगों ने भाजपा नेता के होटल पर हमला कर दिया था, जिससे भाजपा नेता समेत चार लोग घायल हो गए थे। हमलावरों ने सरकारी कार्य में बाधा डालते हुए पुलिस कर्मियों से अभद्र व्यवहार करते हुए धक्का मुक्की की थी। पुलिस ने भाजपा नेताओं की तहरीर पर पांच आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की थी। पुलिस ने पहले आरोपी योगेश कदम और आयुष मराठा को गिरफ्तार करके चालान कर चुकी है। जबकि अक्षय कदम, शिवांश मिश्रा और रिषभ तिवारी फरार हो गए थे। कई दिन बाद भी पुलिस फरार आरोपियों को गिरफ्तार नहीं कर पाई। एसपी राजेश द्विवेदी मुख्य आरोपी अक्षय कदम पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया है। पुलिस फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए एसओजी और तिलहर थाना की दो टीमों को लगाया है। पुलिस फरार आरोपियों की तलाश में गैर जिले गयी है। इधर भाजपा नेता ने बताया कि फरार आरोपियों से उनको जान-माल का खतरा बना हुआ है। उन्होंने मांग की है कि आरोपियों के खिलाफ गैंगस्टर की कार्रवाई की जाए।

> फरार मुख्य आरोपी अक्षय कदम पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित किया गया है। आरोपी की गिरफ्तारी के लिए एसओजी और थाना की तीन टीमें बनायी गई है। पुलिस टीमें आरोपी की तलाश में गैर जिले गई हुई है। फरार आरोपी पुलिस की हिरासत में शीघ्र होगे
> – राजेश द्विवेदी एसपी

हिन्दूवादी नेता को पीटने वाले तीन पकड़े

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : रोजा क्षेत्र में हिन्दूवादी संगठन के नेता के साथ मारपीट करने के मामले में पुलिस ने रिपोर्ट के आधार पर तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने पांच नामजद और 20 अज्ञात लोगों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की थी। पुलिस अन्य आरोपियों की तलाश कर रही है।

रामचंद्र मिशन थाना क्षेत्र के मोहल्ला नई बस्ती रेती निवासी हिन्दूवादी संगठन के नेता अंकित अवस्थी सोमवार रात बाइक से कहीं जा रहे थे। लोदीपुर में उनकी बाइक को ई-रिक्शा ने टक्करा गई थी, जिससे दोनों पक्षों में विवाद हो गया था। उसकी बाइक क्षतिग्रस्त हो गई थी। आरोप है कि ई-रिक्शा चालक ने फोन करके मोहल्ला लोदीपुर से अपने साथियों को मौके पर बुला लिया था। आरोप है कि ई-रिक्शा चालक और उसके साथियों ने हिन्दू संगठन के नेता अंकित को पकड़ लिया और जमकर मारपीट की। राहगीरों ने विरोध किया तो आरोपी भाग निकले। सूचना मिलने पर हिन्दूवादी संगठन के पदाधिकारी मौके पर पहुंच गए। लोगों ने सड़क पर जाम लगा दिया। रोजा थाना प्रभारी राजीव कुमार फोर्स के साथ मौके पर पहुंचे और लोगों को समझाकर जाम खुलवाया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर ई-रिक्शा चालक अज्ञात, कामरान, चंदू, इमरान और 20 अज्ञात के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली थी। पुलिस ने मंगलवार की दोपहर लोदीपुर पुल के निकट आरोपी शाहरुख, राकिब और शहनाज निवासी लोदीपुर थाना रोजा को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने तीनों आरोपियों का चालान कर दिया। तीनों आरोपियों पर पहले से मुकदमे दर्ज हैं। पुलिस ने आरोपियों का चालान कर दिया। टीम में उप निरीक्षक सतवीर सिंह, राजकुमार गौतम आदि शामिल थे।

पुलिस हिरासत में मारपीट करने वाले आरोपी। ● अमृत विचार

- पांच नामजद, 20 अज्ञात में रिपोर्ट, बाइक क्षतिग्रस्त हो गई थी

नहीं खुला दिव्यांग यात्रियों के लिए पाथ वे

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः डीआरएम राजकुमार सिंह ने आदेश दिए थे कि दिव्यांग यात्रियों और पार्सल पोर्टर के लिए प्लेटफार्म दो, तीन और चार व पांच पर जाने वाले पाथ वे रास्ते को खोल दिया जाए और आरपीएफ की ड्यूटी लगायी जाए। साथ ही महिला थाना के पीछे का भी रास्ता खोल दिया जाए। डीआरएम के आदेश के बाद अभी पाथ वे और महिला थाना के पीछे का रास्ता नहीं खोला गया है।

स्थानीय रेलवे स्टेशन पर दिव्यांग यात्रियों और पार्सल पोर्टरों के लिए प्लेटफार्म दो,तीन और चार व पांच पर जाने के लिए पाथ वे बना था। इसके अलावा महिला थाना के पीछे से लोग प्लेटफार्म एक पर सीधे आ जाते थे। रेल प्रशासन ने पाथ वे और महिला थाना के पीछे का रास्ता बंद कर दिया है। जिससे दिव्यांग यात्रियों की व्हीलचेयर प्लेटफार्म दो और तीन जाने में दिक्कत हो रही है, साथ ही पार्सल पोटर ठिलिया नहीं जा पा रही है। सबसे अधिक परेशानी दिव्यांग यात्रियों को हो रही है।दिव्यांग यात्री को मजबूरन परिवार वाले सीढ़ियों पर से किसी तरह प्लेटफार्म दो व तीन पर ले जाते हैं। पैरों से दिव्यांग यात्री सीढ़ियों पर बैठ-बैठकर आते और जाते है। पार्सल पोटर मजबूरन नग ढकलते हुए सीढ़ियों से प्लेटफार्म दो और तीन पर ले जाते है।

दो दिन पूर्व डीआरएम राजकुमार सिंह ने निरीक्षण के दौरान संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए थे कि जब तक लिफ्ट न बन जाए तब तक पाथ वे का रास्ता खोल दिया जाए और आरपीएफ की ड्यूटी लगाई जाए। साथ महिला थाना के पीछे का गेट खोल दिया जाए। रेल अधिकारियों ने पाथ वे और महिला थाना के पीछे का रास्ता नहीं खोला है। यात्रियों को काफी दिक्कत हो रही है।

फुट ओवरब्रिज पर बैठ कर जाता दिव्यांग यात्री। ● अमृत विचार

- दिव्यांग यात्रियों और पार्सल पोर्टर को होती है दिक्कत

चोरी के सामान के साथ दो गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः निगोही पुलिस ने चोरी का खुलासा करते हुए दो चोरों को गिरफ्तार कर लिया। उनके कब्जे से चोरी के जेवर, दो बाइकें और नकदी बरामद की है। आरोपियों ने बताया चोरी से मिले सामान को बांटकर पैसा बांट लेते थे।

निगोही थाना क्षेत्र के गांव जिन्दपुरा निवासी हामिद हुसैन ने बताया था कि वह परिवार के साथ दो माह पहले सिद्धार्थनगर ईंट भट्टे पर मजदूरी करने के लिए चला गया था। घर पर भतीजा शाहरुख और पिता भूरे थे। 30 दिसंबर की शाम को भांजा अरशान निवासी ग्यासपुर थाना बीसलपुर जिला पीलीभीत अपने दो साथियों के साथ बाइक से घर पर आया था। आरोपी अरशान अपने साथियों के साथ उसके घर पर रुका था। आरोपी और उसके साथियों ने रात में 12 बजे बक्से का ताला तोड़ दिया और 68 हजार रुपये, दो जोड़ी पायल, बच्चों के खड़वे, आधार कार्ड आदि सामान चुराकर ले गए थे। पुलिस आरोपियों की तलाश कर रही थी। पुलिस को सूचना मिली कि सिद्ध बाबा मंदिर के पास आरोपी खड़े है। पुलिस ने घेराबंदी करके दो आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया। पकड़े गए आरोपी अरशान निवासी पीलीभीत और शोएब निवासी गोटिया थाना शीशगढ़ जिला बरेली है। पुलिस ने अभियुक्तों के कब्जे से 14 हजार 700 रुपये, एक जोड़ी पायल, एक जोड़ी खडुवे और बाइक बरामद की है। अरशान ने अपने मामा के घर चोरी की घटना का कबूल कर दिया। अभियुक्तों ने बताया कि शेष धनराशि खर्च हो गई है। चौक कोतवाली क्षेत्र से मोहल्ला खलील गर्वी से 19 दिसंबर को बाइक चुराकर छिपा दी थी। दोनों आरोपी अपने साथी शहबाज की प्रतीक्षा कर रहे थे। पुलिस ने दोनों आरोपियों का चालान कर दिया। टीम में प्रभारी निरीक्षक अशोक कुमार, उप निरीक्षक अमित कुमार, लाल बहादुर, ऋषिपाल सिंह आदि टीम में शामिल थे।

पुलिस हिरासत में अभियुक्त। ● अमृत विचार

- नकदी-जेवर, बाइक बरामद कोतवाली क्षेत्र से बाइक चुराई थी

ठेला लगाने वाले से की मारपीट

खुटार, अमृत विचार : नगर के मोहल्ला बजरिया निवासी रामचरन ने पुलिस को बताया कि वह खुटार-पूरनपुर रोड पर ओवरब्रिज के नीचे चोखा-बाटी का ठेला लगाता है। पड़ोस में गांव कुसमा निवासी एक युवक भी ठेला लगता है। सोमवार को वह ठेला लेकर खड़ा था। आरोप है कि तभी वहां पर मोहल्ला कोट निवासी युवक अपने साथी तिकुनियां पूरनपुर निवासी और गांव बुझिया निवासी दोस्त के साथ आया और बेवजह गाली-गलौज करने लगे। विरोध करने पर तीनों ने उससे मारपीट की। तभी उसके ठेले पर बिक्री की रखी 11 सौ रुपये की नकदी गायब थी। धमकी देते हुए कहा कि कल से तुम यहां ठेला नहीं लगाओ । शिकायत की तो फिर पिटाई करेंगे। आरोप है कि पड़ोस में ठेला लगाने वाला युवक इन लोगों को शराब पिलाकर गाली-गलौज करवाता है।

हवाई जहाज मॉडल का छात्राओं ने किया प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने आर्य महिला इंटर कॉलेज शाहजहांपुर में आयोजित कार्यक्रम के दौरान एलारा कैपिटल लंदन के संस्थापक राज भट्ट की ओर से छात्राओं के संपूर्ण विकास के लिए दिए जा रहे शैक्षिक और तकनीकी सहयोग के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि यदि शाहजहांपुर जिले की छात्राएं तकनीकी शिक्षा के मूलभूत ज्ञान को समझ लेंगी तो उन्हें बड़े-बड़े संस्थानों में सेवा करने के अवसर प्राप्त हो सकेंगे।

वित्त मंत्री ने कहा कि छात्राओं को प्रोत्साहित करने के लिए राज भट्ट की ओर से किया जा रहा कार्य सेवा का एक अद्वितीय उदाहरण है। इससे पूर्व विद्यालय प्रबंधक अमितेश अमित की ओर से वित्त मंत्री का माल्यार्पण और बुके देकर स्वागत किया गया। प्रबंधक ने विद्यालय में किए जा रहे विकास कार्यों की जानकारी भी दी।

कार्यक्रम में राज भट्ट के साथ आए तकनीकी विशेषज्ञ पंकज गोधरा, शैलेश कुमार और ऋषभ जैन के नेतृत्व में विद्यालय की छात्राओं ने हवाई जहाज का मॉडल तैयार कर उसमें आवश्यक यंत्र लगाए और उसे हवा में उड़ाकर प्रदर्शन किया। इस प्रयास को देखकर वित्त मंत्री सहित सभी अतिथियों ने छात्राओं की प्रशंसा की। इस अवसर पर बताया गया कि जो छात्राएं वायुयान की तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर पायलट बनना चाहती हैं, उन्हें निशुल्क प्रशिक्षण देकर पायलट बनने में सहयोग किया जाएगा।

एलारा कैपिटल लंदन के संस्थापक राज भट्ट ने विद्यालय के प्रबंधन तंत्र, प्रधानाचार्या और शिक्षिकाओं के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि सभी के संयुक्त प्रयासों से छात्राओं को तकनीकी और शैक्षिक शिक्षा से जोड़ने का कार्य सफल हो रहा है।

कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की वरिष्ठ उप प्रधान गायत्री दीक्षित, प्रबंध समिति के अध्यक्ष संतोष कुमार दीक्षित, उप प्रबंधक राजेश शुक्ला, रामऔतार त्रिपाठी, अरविन्द मिश्रा, कोषाध्यक्ष कमलेश गुप्ता, मंजू अग्निहोत्री, सत्यभामा सिंह, जीसी मिश्रा, जगत नारायण अवस्थी, प्रधानाचार्य पूनम रानी सहित शिक्षिकाएं और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

छात्राओं के तकनीकी मॉडल का अवलोकन करते वित्त मंत्री और अतिथि।

- तकनीकी ज्ञान से छात्राओं को बड़े संस्थानों में अवसर मिलने की उम्मीद
- वित्त मंत्री ने एलारा कैपिटल के सहयोग को बताया सेवा का अद्वितीय कार्य

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 7 जनवरी 2026

बरेली न्यूरो एण्ड स्पाईन सुपर स्पेशलिटी सेंटर

डा. मोहित गुप्ता

M.Ch., Neurosurgery (AIIMS)
Senior Consultant Neurosurgeon
मस्तिष्क, रीढ़ एवं नस रोग विशेषज्ञ
Reg. No. UPMCI 65389
समय - प्रातः 10 से 12:30 बजे तक
एवं सायं 6 से 8:30 बजे तक

सुविधायें
ब्रेन हैमरेज
स्लिप डिस्क
ब्रेन ट्यूमर
मिर्गी का दौरा
गर्दन दर्द (सर्वाइकल)
रीढ़ की चोट, टी.बी
सिर दर्द, माइग्रेन
कमर दर्द, कंधों में दर्द
पीठ दर्द, रीढ़ की गांठ
सिर की चोट (हेड इंजरी)
हाथ पैरों में झनझनाहट
फालिज (लकवा)
नसों का दर्द
सियाटिका (कमर में पैरों का दर्द)
दिमागी में पानी व खून जमना
दिमाग, रीढ़ एवं नस सम्बन्धित सभी बीमारियों का इलाज एवं ऑपरेशन

Bareilly Neuro and Spine Super Speciality Centre
Google Maps Location
सी-427, डिवाइन अस्पताल के सामने, के.के. अस्पताल रोड, राजेन्द्र नगर, बरेली
7417389433, 7017678157
9897287601, 8191879754

5 लाख से अधिक नाम कटे, 96 हजार से ज्यादा मृत पाए

शाहजहांपुर में एसआईआर के बाद जारी हुई मतदाता सूची, 23 लाख से घटकर 18.11 लाख रह गए मतदाता

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः जिले में विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआईआर) प्रक्रिया पूरी होने के बाद मतदाता सूची की अंतिम सूची जारी कर दी गई है। इस प्रक्रिया के तहत जिले से पांच लाख से अधिक मतदाताओं के नाम सूची से हटाए गए हैं। प्रशासनिक आंकड़ों के अनुसार हटाए गए नामों में 96 हजार से अधिक मतदाता मृत पाए गए, जबकि 1 लाख 95 हजार से ज्यादा मतदाता जिले से बाहर स्थानांतरित हो चुके थे।

एसआईआर से पहले शाहजहांपुर जिले में मतदाताओं की कुल संख्या 23 लाख से अधिक थी, जो अब घटकर 18,11,616 रह गए। शहर विधान सभा क्षेत्र से सर्वाधिक 1 लाख 27 हजार से अधिक मतदाताओं के नाम मतदाता सूची से काटे गए हैं, जिससे यह क्षेत्र कटौती के मामले में सबसे आगे रहा। जिले में एसआईआर का कार्य 26 दिसंबर 2025 को शुरू किया गया था। इस दौरान जिले की सभी छह विधानसभा क्षेत्रों के 2492 मतदेय स्थलों पर उतने ही बीएलओ तैनात किए गए थे। बीएलओ के कार्यों की निगरानी के लिए 256 सुपरवाइजर लगाए गए थे, जिन्होंने घर-घर सत्यापन कर मतदाता विवरणों की जांच की। प्रशासन का कहना है कि एसआईआर प्रक्रिया का उद्देश्य मतदाता सूची को त्रुटिरहित बनाना था, ताकि मृत, स्थानांतरित या अपात्र मतदाताओं के नाम हटाकर वास्तविक और पात्र मतदाताओं को सूची में शामिल किया जा सके। अंतिम सूची जारी होने के साथ ही जिले में आगामी चुनावी प्रक्रिया के लिए आधार तैयार हो गया है।

मतदाता रजिस्ट्रेशन कार्यक्रम का डीएम ने किया उद्घाटन

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- 6 फरवरी तक चलेगा अभियान नए मतदाताओं से पंजीकरण कराने की अपील

अमृत विचारः भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिला निर्वाचन अधिकारी और जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने गांधी फैज-ए-आम महाविद्यालय में मतदाता रजिस्ट्रेशन कार्यक्रम का आरंभ गुब्बारे उड़ाकर और दीप प्रज्वलित कर किया। इसके बाद उन्होंने वोटर रजिस्ट्रेशन कक्ष का फीता काटकर उद्घाटन किया। जिलाधिकारी ने बताया कि यह विशेष मतदाता रजिस्ट्रेशन अभियान 6 जनवरी 2026 से 6 फरवरी 2026 तक संचालित किया जाएगा।

जिलाधिकारी ने बताया कि जिले के 18 लाख 11 हजार मतदाताओं की सूची प्रकाशित हो चुकी है, जिसे शाजहांपुर.एनआईसी.इन वेबसाइट पर देखा जा सकता है। यदि किसी मतदाता का नाम सूची से कट गया है तो वह आपत्ति दर्ज करा सकता है। वहीं जो लोग अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वाना चाहते हैं, वे 6 फरवरी तक फार्म-6 ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन भर सकते हैं। उन्होंने बताया कि वर्ष 2003 की मतदाता सूची से 92 प्रतिशत से अधिक मतदाताओं या उनके परिजनों के नामों का मिलान हो चुका है, जबकि शेष करीब 1 लाख 70 हजार मतदाताओं को एसडीएम के माध्यम से नोटिस भेजे जाएंगे।

जिलाधिकारी ने कहा कि अभियान के दौरान 1 जनवरी 2026 को 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले सभी युवा फार्म-6 भरकर संबंधित बीएलओ के पास जमा कर सकते हैं या ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि मतदाता सूची में नाम दर्ज होना मतदान के अधिकार के लिए अनिवार्य है। बिना नाम दर्ज हुए कोई भी व्यक्ति अपने प्रतिनिधि का चयन नहीं कर सकता।

उन्होंने विद्यार्थियों से यह भी अपील की कि 31 जनवरी तक चल रहे सड़क सुरक्षा माह के अंतर्गत रील, वीडियो, पोस्टर और स्लोगन के माध्यम से लोगों को जागरूक करें। बेहतर कार्य करने वाले बच्चों को प्रशस्ति पत्र और नगद धनराशि देकर पुरस्कृत किया जाएगा। अपर जिलाधिकारी प्रशासन रजनीश कुमार मिश्र ने विशेष गहन पुनरीक्षण से संबंधित जानकारी देते हुए नए मतदाताओं को मतदाता सूची में जोड़ने की प्रक्रिया विस्तार से बताई।

उन्होंने सभी पात्र युवाओं से फार्म-6 भरकर नाम दर्ज कराने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की छात्रा अलवीरा खान ने मतदाता जागरूकता विषय पर प्रभावशाली भाषण दिया। अन्य विद्यार्थियों ने भी अपने विचार साझा किए। इस अवसर पर नगर मजिस्ट्रेट प्रवेंद्र कुमार, गांधी फैज-ए-आम महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर मोहसिन हसन खां, स्वीप और इलेक्टोरल लिटरेसी क्लब के नोडल अधिकारी प्रोफेसर खलील अहमद सहित अन्य अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

10 घंटे बंद रही बिजली सप्लाई, इनवर्टर भी ठप

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- पैनल बदलने के लिए दोपहर 12 से बंद की गई बिजली

अमृत विचारः मंगलवार को गोविंदगंज उपकेंद्र पर पैनल बदलने का काम होने की वजह से दोपहर 12 से बिजली बंद कर दी गई। इस उपकेंद्र से सात हजार कनेक्शन जुड़े हैं। 10 घंटे तक बिजली आपूर्ति बंद रहने से उपभोक्ताओं को कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ा। लंबे समय तक बिजली ठप को जाने से घरों और दफ्तरों में लगे इनवर्टर भी बैठ गए। जिससे शाम के समय लोगों को अंधेरे में रहने को मजबूर होना पड़ा।

उप केंद्र पर पैनल काफी पुराने हो गए थे। उन्हें बदला जाने का काफी वक्त से प्रस्ताव था। गोविंदगंज उपकेंद्र से मंगलवार को करीब दस घंटे तक बिजली की आपूर्ति ठप रही। उपकेंद्र पर 11 केवीए के जर्जर वीसीबी पैनल को बदलने का कार्य दोपहर बाद से देर शाम तक चलता रहा। ऐसे में उपभोक्ताओं से पूर्व में सारी व्यवस्थाएं दुरुस्त करने की अपील की गई थी।

उपकेंद्र पर लगे वीसीबी पैनल काफी जर्जर हो चुके हैं। गर्मी में पैनल बदलने के लिए कार्ययोजना तैयार की गई थी, लेकिन उपभोक्ताओं को गर्मी में आने वाली दुश्वारियों को देखते हुए कार्य नहीं कराया गया। भीषण सर्दी में कम खपत होने के चलते इस कार्य को शुरू किया गया। जिन लोगों को बिजली विभाग की सूचना नहीं मिली, उनको बिजली न मिलने से सबसे ज्यादा परेशानी उठानी पड़ी। दोपहर में बिजली सप्लाई बंद होते ही घरों में लोग पानी की टंकी नहीं भर सके। इनवर्टर बंद होने से घरों में अंधेरा छा गया।

जेई मोहम्मद कफील ने बताया कि मंगलवार को उपकेंद्र पर सुबह दस बजे से कार्य शुरू किया गया। रात आठ बजे तक पैनल लगने का कार्य पूर्ण होने के बाद बिजली सुचारू की जाएगी।

राजनीतिक दलों सूची की प्रतियां दी गई

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- फार्म-6, 7 एवं 8 के माध्यम से नाम जोड़ने, हटाने और संशोधन की जानकारी दी गई
- ऑनलाइन आवेदन और फार्म डाउनलोड करने की सुविधा भी उपलब्ध

अमृत विचारः जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह की अध्यक्षता में विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण-2026 के क्रम में मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के पदाधिकारियों की उपस्थिति में कलेक्ट्रेट स्थित बिस्मिल सभागार में बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिले के विधानसभा निर्वाचन क्षेत्रों की फोटोयुक्त निर्वाचक नामावलियों की प्रतियां वितरित की गई।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के क्रम में अर्हता तिथि 1 जनवरी 2026 के आधार पर विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण की कार्यवाही 4 नवंबर 2025 से 26 दिसंबर 2025 तक घर-घर गणना के माध्यम से कराई गई थी। इस प्रक्रिया के पूर्ण होने के बाद 6 जनवरी 2026 को फोटोयुक्त निर्वाचक नामावलियों की सूची जारी की गई है। बैठक में समस्त मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों को फोटोयुक्त मतदाता सूची की प्रति उपलब्ध कराई गई। बैठक में जानकारी दी गई कि जिन नागरिकों की आयु 1 जनवरी 2026 को 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी है, वे अपना नाम मतदाता सूची में जुड़वाने के लिए फार्म-6 घोषणा पत्र भरकर बीएलओ या मतदाता पंजीकरण केंद्र पर जमा कर सकते हैं। मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों की ओर से नियुक्त बूथ लेवल एजेंट के माध्यम से भी फार्म-6 उपलब्ध कराया जाएगा। प्राप्त आवेदनों की सूचना प्रतिदिन सायं 6 बजे तक भारत निर्वाचन आयोग को भेजी जाएगी।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने बताया कि विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण-2026 के दौरान यदि किसी मतदाता का नाम अनुपस्थित, शिफ्टेड या अन्य कारणों से त्रुटिवश कट गया है, तो वह भी फार्म-6 भरकर अपना नाम पुनः दर्ज करा सकता है। मृतक, डबल या शिफ्टेड मतदाताओं के नाम हटाने के लिए बीएलओ की ओर से फार्म-7 भरा जाएगा, जबकि नाम में त्रुटि होने पर फार्म-8 के माध्यम से संशोधन कराया जा सकता है। उन्होंने यह भी बताया कि नो मैपिंग डाटा से संबंधित नोटिस जारी करने की प्रक्रिया 6 जनवरी 2026 से प्रारंभ हो गई है, जो 06 फरवरी 2026 तक चलेगी।

मतदाता सूची में नाम शामिल कराने या संशोधन के लिए भारत निर्वाचन आयोग की वेबसाइट voters.eci.gov.in पर मोबाइल नंबर के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन और फार्म डाउनलोड की सुविधा भी उपलब्ध है। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रशासन रजनीश कुमार मिश्र सहित मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

लापता चचेरी बहनों का 9 दिन बाद भी सुराग नहीं

तिलहर, अमृत विचारः निजामगंज मोहल्ला निवासी संतोष कुमार की 14 वर्षीय पुत्री मधु और 16 वर्षीय भतीजी प्रियांशी के लापता हुए 9 दिन बीत जाने के बाद भी पुलिस को कोई सुराग नहीं मिला है। दोनों किशोरियां 29 दिसंबर की सुबह करीब 9:30 बजे राजकीय महिला इंटर कॉलेज जाने के लिए स्कूल ड्रेस में घर से निकली थीं, लेकिन वापस नहीं लौटीं। मामले में एसपी ग्रामीण दीक्षा भंवरे की ओर से पुलिस और एसओजी को लगाया गया था। पुलिस ने करीब आठ युवकों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया, लेकिन कोई ठोस जानकारी सामने नहीं आई। किशोरियों के बरामद न होने पर बसपा जिला अध्यक्ष उदयवीर सिंह और विश्व हिंदू परिषद के सुरेश शर्मा पप्पू ने कोतवाल जुगल किशोर पाल से मुलाकात की थी। इसके बावजूद सफलता न मिलने पर बसपा नेताओं और हिंदू संगठनों ने पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए हैं।

इंडियन गैस एजेंसी से सिलेंडर चोरी

शाहजहांपुर, अमृत विचारः कलान कस्बा निवासी मोहन लाल ने थाना पर दी गई तहरीर में बताया कि मुरादाबाद-फर्रुखाबाद स्टेट हाइवे पर नयागांव सहबेगपुर में इंडियन गैस सिलेंडरों की बिक्री करते है। सोमवार की शाम एजेंसी बंद करके घर चला गया। चोरों ने दुकान के बाहर जाल का ताला तोड़ दिए और आठ सिलेंडर चुराकर ले गए। उनको चोरी की जानकारी अगले दिन सुबह हुई है। चोरों ने दुकान के मुख्य ताले तोड़ने का प्रयास किया। थाना प्रभारी ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है।

रोडवेज की दो बसें आमने सामने टकराई, छह घायल

संवाददाता, तिलहर

- हादसे में बसों में सवार यात्रियों में चीख-पुकार मच गई

अमृत विचारः फर्रुखाबाद स्टेट हाईवे पर मंगलवार सुबह करीब 9 बजे छुट्टा पशुओं को बचाने के प्रयास में रोडवेज की दो बसें आमने-सामने टकरा गईं। घने कोहरे के कारण बस चालकों को सड़क पर पड़ा गोवंश दिखाई नहीं दिया, जिससे दोनों बसें एक ही साइड में आ गईं और भिड़ंत हो गई। हादसे में बसों में सवार यात्रियों में चीख-पुकार मच गई और छह यात्री घायल हो गए।

घायलों में रोहित पुत्र प्रेम सागर 29 वर्ष निवासी मल्हपुर कांट, सुधीर पुत्र लवकुश प्रसाद 40 वर्ष निवासी इस्लामगंज अल्लाहगंज गंभीर रूप से घायल हुए, जिन्हें सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जलालाबाद से जिला अस्पताल के लिए रेफर किया गया। अन्य घायलों में रामसेवक पुत्र अरविंद कुमार 35 वर्ष, रौनक पुत्र राहुल 12 वर्ष, राजवती पत्नी राहुल 30 वर्ष और चालक मनोज कुमार पुत्र समरपाल सिंह निवासी मिर्जापुर शामिल हैं। सूचना पर पहुंची पुलिस और स्थानीय लोगों ने घायलों को अस्पताल पहुंचाया। हादसे के कारण कुछ समय के लिए हाईवे पर जाम लग गया। अल्लाहगंज थाना प्रभारी ओमप्रकाश ने बताया कि क्षतिग्रस्त बसों को हटवाकर यातायात बहाल कर दिया गया और मृत आवारा पशु को सड़क से हटवा दिया गया।

एसडीए सचिव का चार्ज अपर नगरायुक्त को सौंपा

शाहजहांपुर, अमृत विचारः शासन से शाहजहांपुर नगर निगम में पिछले माह भेजे गए, अपर नगर आयुक्त अजय कुमार त्रिपाठी को जिलाधिकारी धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने शाहजहांपुर विकास प्राधिकरण के सचिव का चार्ज सौंप दिया है। जिसके बाद उन्होंने विधिवत ककरा स्थित प्राधिकरण दफ्तर जाकर कार्यभार ग्रहण कर लिया है। कार्यभार ग्रहण करने के बाद उन्होंने शहर में बनाई गईं अनाधिकृत कालोनियों और प्लाटिंग का डाटा तैयार कर कार्रवाई की रणनीति भी तैयार कर ली है। बता दें कि अभी तक प्राधिकरण सचिव का दायित्व सिटी मजिस्ट्रेट प्रवेंद्र कुमार संभाल रहे थे।

शिविर | खेड़ा बझेड़ा भगवानपुर में 645 मरीजों का पंजीकरण, 10 में मोतियाबिंद की पुष्टि

वरुण - अर्जुन मेडिकल कॉलेज ने लगाया स्वास्थ्य मेला

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचारः वरुण-अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल, बंथरा की ओर से जैतीपुर क्षेत्र के ग्राम खेड़ा बझेड़ा भगवानपुर में निःशुल्क स्वास्थ्य मेले का आयोजन किया गया। स्वास्थ्य शिविर में कुल 645 मरीजों का पंजीकरण किया गया, जिनमें 10 मरीजों में मोतियाबिंद पाया गया। इन सभी मरीजों का ऑपरेशन वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल, बंथरा में निःशुल्क किए जाने की जानकारी दी गई।

शिविर के दौरान 156 मरीजों की निःशुल्क ब्लड शुगर जांच और लगभग 135 मरीजों की ब्लड प्रेशर जांच की गई। साथ ही 578 मरीजों को निःशुल्क दवाइयों का वितरण किया गया। इसके अलावा एमआरआई, सीटी स्कैन और अन्य जांचों पर छूट से संबंधित कूपन भी वितरित किए गए। स्वास्थ्य टीम और पीआरओ की ओर से लोगों को नियमित जांच कराने के लिए जागरूक किया गया। इस दौरान परिवार स्वास्थ्य कार्ड की जानकारी भी दी गई, जो अस्पताल की ओर से 200 रुपये में बनाया जाता है और एक वर्ष के लिए मान्य होता है। बताया गया कि परिवार स्वास्थ्य कार्ड धारकों को ओपीडी पर्चा निःशुल्क मिलेगा, दवाइयों और सभी जांचों पर 20 प्रतिशत अतिरिक्त छूट दी जाएगी तथा भर्ती होने पर भर्ती फाइल भी निःशुल्क बनेगी। स्वास्थ्य कार्ड धारकों को सामान्य ऑपरेशन में 25 प्रतिशत और खून की आवश्यकता होने पर 10 प्रतिशत की छूट दिए जाने की जानकारी दी गई। पीआरओ की ओर से बताया गया कि अस्पताल में मरीजों के लिए निःशुल्क भर्ती, निःशुल्क पलंग, निःशुल्क नर्सिंग केयर और निःशुल्क चिकित्सकीय परामर्श की सुविधा उपलब्ध है। साथ ही हर प्रकार के ऑपरेशन, सस्ती दवाइयों, आईसीयू, वेंटिलेटर, डायलिसिस, एमआरआई, सीटी स्कैन और अल्ट्रासाउंड जैसी सुविधाएं 24 घंटे सस्ते दरों पर उपलब्ध कराई जा रही हैं।

गांव खेड़ा बझेड़ा भगवानपुर में स्वास्थ्य मेले में मरीजों की जांच करते डॉक्टर।

- ब्लड शुगर और ब्लड प्रेशर की जांच की गई और दवाइयों का निःशुल्क वितरण

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर के आयोजन में समाज सेवक ब्रजेश मिश्रा और हृदेश कुमार चौहान का विशेष योगदान रहा। शिविर में सामान्य रोग, नेत्र रोग, हड्डी रोग, बाल रोग तथा स्त्री एवं प्रसूति रोग विभाग के विशेषज्ञ डॉ. गौरव सिंह, डॉ. सारांश, डॉ. अनुराग प्रकाश, डॉ. आलोक, डॉ. कीर्ति वरदानी, मेडिकल कॉलेज के पीआरओ विपिन शर्मा सहित पैरामेडिकल स्टाफ मौजूद रहा।

MEDICAL Lifelines OF BAREILLY
अमृत विचार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005

बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...
नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ
- 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
- बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
- आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
- कैशलेस ईलाज

स्वास्थ्य जागरूकता अभियान
महीने के प्रत्येक रविवार को | समय : सुबह 10 बजे से 5 बजे तक
निःशुल्क परामर्श
डॉ. दीपक माहेश्वरी
M.B.B.S., M.D.
Consultant Physician & Critical Care Specialist
ब्लड प्रेशर, हृदय रोग, श्वांस रोग, गम्भीर रोग विशेषज्ञ
कैम्प में समस्त ब्लड जाँचें, ई.सी.जी., एक्स-रे 50% के छूट पर किये जायेंगे।
रजिस्ट्रेशन शुल्क 20/-
प्रेमलोक हॉस्पिटल
CARE FOR SURE
नरियावल अड्डा, शाहजहाँपुर रोड, बरेली 9084307201, 9412244430
डॉ. नितिन अग्रवाल हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777

ADITYA आदित्य आई एण्ड लेजर सेन्टर
उपलब्ध सुविधायें :-
बिना सुई बिना टांका आधुनिक लेंस प्रत्यारोपण की सुविधा।
TPA कैशलेस सुविधा उपलब्ध
अल्ट्रासाउण्ड द्वारा पर्दे की जांच की सुविधा उपलब्ध
IOL Master 700 द्वारा लेंस का नम्बर
लेजर द्वारा आंख की झिल्ली हटाने की सुविधा उपलब्ध
बी स्कैन द्वारा पर्दे की जांच उपलब्ध
OCT द्वारा काला पानी एवं पर्दे की जांच व उपचार
8077344353
समय : प्रातः 10 बजे से सायं 7 बजे तक (सोमवार से शनिवार)
आयुष्मान कार्ड धारकों के लिए फ्री आपरेशन की सुविधा
100000 से अधिक आंखों के आपरेशन का अनुभव
डॉ. आदित्य त्यागी
MBBS, DOMS, DNB, MNAMS
CARARACT REFRATIVE & GLAUCOMA SURGERON
ट्यूलिप ग्रांड के सामने, पीलीभीत बाईपास, बरेली

डॉ. हारिस अंसारी
एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)
Consultant Urologist & Andrologist
गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन
- प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP)
- गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL)
- गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSC)
- पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज
कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल
डॉ. एम. खान हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली
हेल्पलाईन 9897838286, 9837549348

न्यूज ब्रीफ

राजनीति शास्त्र की मौखिक परीक्षा आज

बिल्सी, अमृत विचार : स्थानीय महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में राजनीति शास्त्र विषय के बीए तृतीय एवं पंचम सेमेस्टर की मौखिक परीक्षा का आयोजन सात जनवरी को किया जाएगा। परीक्षा सुबह 10 बजे से महाविद्यालय परिसर में प्रारंभ होगी। प्राचार्य डॉ. पंकज कुमार सिंह ने बताया कि परीक्षा की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और संबंधित विद्यार्थियों को निर्धारित समय से पूर्व महाविद्यालय में उपस्थित होने के निर्देश दिए गए हैं। परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों को अपने आवश्यक दस्तावेज साथ लाने होंगे। प्राचार्य ने यह भी कहा कि परीक्षा को सुचारू एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने के लिए आवश्यक व्यवस्थाएं की गई हैं।

14 जनवरी तक बंद हुए आंगनबाड़ी केंद्र

बदायूं, अमृत विचार : बेसिक शिक्षा परिषद के अधीन संचालित विद्यालयों, मान्यता प्राप्त बेसिक विद्यालयों में 14 जनवरी तक शीतकालीन अवकाश निर्धारित है। अब ठंड एवं शीतलहर के प्रकोप को देखते हुए डीएम अवनीश कुमार राय ने आंगनबाड़ी केंद्र पर आने वाले बच्चों के बचाव के लिए समस्त आंगनबाड़ी केंद्रों पर बच्चों का 14 जनवरी तक अवकाश घोषित किया गया है। अवकाश की अवधि में सभी आंगनबाड़ी केंद्र खुले रहेंगे। आंगनबाड़ी कार्यकत्रियां एवं सहायिका आंगनबाड़ी केंद्रों पर उपस्थित रहकर टीएचआर प्राप्ति, वितरण, वीएचएसएनडी सत्र के दौरान लाभार्थियों का स्वास्थ्य परीक्षण एवं टीकाकरण, गृह भ्रमण, नए लाभार्थियों का पंजीकरण व सत्यापन, समुदाय आधारित गतिविधियों का आयोजन तथा पोषण ट्रैकर पर समस्त सूचनाओं की फीडिंग आदि कार्यों का निष्पादन करेंगे। जिसके आदेश जिला कार्यक्रम अधिकारी द्वारा आंगनबाड़ी वर्कर्स को दिए हैं।

गैंगस्टर एक्ट का आरोपी गिरफ्तार

कादरचौक, अमृत विचार : एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह के निर्देश पर गैंगस्टर एक्ट के आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। जिसके अंतर्गत कादरचौक पुलिस ने गैंगस्टर एक्ट के वांछित को गिरफ्तार किया है। पुलिस के अनुसार गांव हरेंडी निवासी अर्जुन पुत्र गिरीश गैंगस्टर एक्ट में वांछित चल रहा था। उपनिरीक्षक हरिओम सिंह, हेड कांस्टेबल संजीव कुमार व वीर सिंह ने उसे गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ चोरी, आर्म्स एक्ट समेत विभिन्न मामलों की रिपोर्ट दर्ज हैं।

मछली पकड़ने के विवाद में गोली मारकर हत्या

गंगा किनारे खेत में फसल की रखवाली करने गए थे राजाराम

- मुगर्रा जरासी गांव के तिराहे पर फेंका शव, पास में मिली बाइक
- परिजनों का हिस्ट्रीशीटर पर हत्या करने का आरोप, रिपोर्ट दर्ज

संवाददाता, उसहैत (बदायूं)

अमृत विचार : फसल की रखवाली करने गए युवक की गोली मारकर हत्या कर दी गई। शव मुगर्रा जरासी गांव के तिराहे पर फेंक दिया गया। एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह और एसपी सिटी विजयेंद्र द्विवेदी मौके पर पहुंचे।

राजाराम।

पुलिसकर्मियों से घटना की जानकारी करते एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह।

मौके पर मौजूद मृतक के परिजन। ● अमृत विचार

परिजनों ने मछली मारने के विवाद में हिस्ट्रीशीटर पर हत्या करने का आरोप लगाया। पुलिस हत्यारोपी के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली है।

थाना उसहैत क्षेत्र की ग्राम पंचायत असमया रफतपुर के मजरा अहमद नगर बछौरा निवासी राजाराम (45) पुत्र भोजराज सोमवार रात गंगा किनारे अपने खेत में फसल की रखवाली करने गए थे। यहां उनकी गोली मारकर हत्या कर दी गई। सूचना पर पहुंचे मृतक के भाई पंचवीर ने बताया कि राजाराम सोमवार को मछली पकड़ने के लिए गंगाघाट गए थे। यहां अफसर अली उर्फ बौना के साथ उनका विवाद हुआ था। इसी रंजिश में भाई के पेट में गोली मारकर हत्या की गई है और शव को ले जाकर पड़ोस के गांव के तिराहे पर फेंक दिया गया। शव के पास उनकी बाइक खड़ी मिली। मृतक और हत्यारोपी के खिलाफ बदायूं के अलावा अन्य राज्यों में रिपोर्ट दर्ज हैं। पुलिस ने हत्यारोपी के खिलाफ उसहैत थाने में रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

राजाराम पर 8 और आरोपी पर दर्ज हैं 12 आपराधिक मामले

उसहैत, अमृत विचार : ग्रामीण की हत्या के बाद पुलिस ने उसकी और आरोपी की कुंडली खंगाली। पता चला है कि मृतक राजाराम पर उसहैत, एटा, फर्रुखाबाद के अलावा कर्नाटक में 8 और आरोपी असफर अली पर 12 आपराधिक मामले दर्ज हैं। एसएसपी ने जल्द खुलासा करने का निर्देश दिया है। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है। गांव अहमदनगर बछौरा गंगा में बाढ़ से तबाह हो गया था। बहुत से ग्रामीणों की गंगा किनारे जमीन है, जो गंगा में समा गई थी। इसके चलते गांव के बहुत से लोग अलग-अलग जगह पर रह रहे हैं। तो कोई मछली पकड़कर पालन पोषण करता है। राजाराम अपनी थोड़ी सी जमीन से पत्नी मीरा देवी, बेटे विकास, आकाश और अभिजीत के अलावा दो बेटियों लक्ष्मी व नन्हीं को पाल रहे थे। ग्रामीणों के अनुसार क्षेत्र में मछली पकड़ने का ठेका हुकुम सिंह के नाम पर है। राजाराम एक कट्टा मछली पकड़कर ले गए थे। इसको लेकर विवाद हो गया था। तीन साल पहले भी विवाद होने पर आरोपी ने राजाराम पर फायरिंग की थी। इसमें वह बच गए थे। माना जा रहा है कि हत्यारोपियों ने गुमराह करने के लिए शव दूसरी जगह ले जाकर फेंका था। इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि जहां शव मिला वहां किसी भी प्रकार के संघर्ष के निशान नहीं थे। थाना प्रभारी देवेंद्र सिंह ने बताया कि आरोपी को जल्द ही गिरफ्तार किया जाएगा।

रोडवेज पर लगे जाम में घंटों फंसे रहे वाहन सवार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : रोडवेज की बसों से मंगलवार को अस्पताल रोड पर जाम लगा गया। यहां से गुजरने वाले लोग घंटों जाम में फंसे रहे। इसी तरह पुलिस लाइन चौराहा और इंदिरा चौक पर जाम के झाम में दर्जनों वाहन फंसे रहे। जाम की समस्या से स्थानीय लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा।

सुबह से घने कोहरे की चादर से पूरा शहर ढका रहा। पूर्वान्ह 11 बजे जैसे ही कुछ आसमान साफ हुआ तो शहर की सड़कों पर वाहनों का रेला निकल पड़ा जिससे चौराहों और रोडवेज पर स्थिति और गंभीर हो गई। रोडवेज के सामने अस्पताल को जाने वाली सड़क पर रोडवेज की बसों के पहिए थम गए। करीब एक घंटे तक बसें रोड पर ही खड़ी रहीं जिससे यह रोड आम लोगों के लिए बंद हो गया। जिला अस्पताल आने जाने वाले लोग इधर-उधर चक्कर लगा कर निकले। दुकानों के आगे

रोडवेज बसों की वजह से लगा जाम।

जाम लगने से स्थानीय दुकानदारों ने चीख पुकार शुरू कर दी। डंडा लेकर लोग बसों को आगे बढ़ाने को हंगामा करने लगे, लेकिन आगे पीछे हर जगह रोडवेज की बसें खड़ी रहीं जिससे आम जनता भी परेशान रही। उधर, शहर के पुलिस लाइन चौराहे पर दोपहर 12 बजे बसों का रेला देखने को मिला। चारों ओर की सड़कों पर जाम लगा रहा। ऑटो और ई-रिक्शा के चलते बसें भी आगे नहीं बढ़ सकीं। बसों के पहिए रेंगते हुए किसी तरह आगे बढ़े। इंदिरा चौक तक जाम रहा। इस चौराहे से रेलवे स्टेशन को जाने वाली सड़क पर वाहनों को खड़ा कराया गया। इसके बाद बसों को बरेली रोड पर निकाला जा सका।

घर में घुसकर गला दबाकर छेड़ा, विरोध करने पर पीटा

संवाददाता विजय नगला

- थाना मूसाझाग क्षेत्र के एक गांव का मामला
- पीड़िता की तहरीर पर आरोपियों के खिलाफ दर्ज की रिपोर्ट

अमृत विचार : एक युवक ने घर में घुसकर महिला का गला दबाकर छेड़छाड़ की। पीड़िता की तहरीर पर आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की गई है। पुलिस मामले की जांच पड़ताल कर रही है। पुलिस का कहना है कि आरोपी को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

थाना मूसाझाग क्षेत्र के एक गांव निवासी महिला ने थाने पर पुलिस को तहरीर देकर बताया कि मोहल्ले का एक युवक उसपर गलत नीयत रखता है। किसी न किसी बहाने उसे छूने का प्रयास करता रहता है। 13 दिसंबर की शाम लगभग साढ़े छह बजे युवक महिला के घर में घुस आया। महिला का गला दबाकर उसे जमीन पर गिरा दिया और छेड़छाड़ करने लगा। महिला ने शोर मचा दिया। महिला का पति और बेटी मौके पर पहुंच गए। तीनों लोग जोर से चिल्लाए और युवक को पकड़ लिया। युवक के परिजनों को पता चला तो वह लाठी-डंडे और धारदार हथियार लेकर महिला के घर में घुस आए। पीड़िता के परिजनों के साथ मारपीट करके आरोपी युवक को छुड़ाकर ले गए। पीड़ित परिवार को जान से मारने की धमकी देते हुए कहा कि कहीं शिकायत की तो गांव से भगा देंगे। पुलिस ने पीड़िता, उसके पति और बेटे का मेडिकल परीक्षण कराया। आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके जांच शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि आरोपी को जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

शादी से एक महीने पहले जेवर लेकर लापता हुई युवती

विजय नगला, अमृत विचार : शादी के लगभग एक महीने पहले युवती किसी के साथ लापता हो गई। वह घर से लाखों रुपये के सोने-चांदी के जेवर भी साथ ले गई।

बिनावर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी युवक ने तहरीर देकर बताया कि उनकी बेटी की शादी एक गांव से तय की थी। 7 फरवरी को बरात आनी थी। घर में शादी की तैयारी शुरू कर दी गई थी। हलवाई, टेंट की बुकिंग और शादी के कार्ड छपवा दिए थे, लेकिन 3 जनवरी की रात उसकी बेटी लापता हो गई। अगले दिन सुबह घर पर नहीं दिखी तो पूरे गांव और रिश्तेदारी में तलाश किया, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चल सका। जानकारी करने पर पता चला कि उसकी बेटी गांव के एक युवक के साथ बात करती थी। परिजनों ने युवक को पकड़कर उसका मोबाइल फोन चेक किया तो उसमें लड़की के कई फोटो और वीडियो मिले। पुलिस ने रिपार्ट दर्ज कर ली है।

भतीजों ने साथियों के साथ की थी ताई की हत्या

संवाददाता, दातागंज

- दो भाई गिरफ्तार, चोरी के इरादे से आए थे, विरोध पर की थी हत्या
- खुलासा करनी वाली टीमों को 25 हजार इनाम देने की घोषणा

अमृत विचार : कोतवाली दातागंज क्षेत्र के गांव पापड़ हमजापुर निवासी बर्तन व्यापारी की पत्नी की हत्या दो भतीजों ने अपने दो साथियों के साथ मिलकर की थी। रुपयों के लालच में उन्होंने जेवर और नकदी की लूट की। विरोध करने पर गला दबाकर ताई की हत्या की थी और फरार हो गए थे। आरोपियों के पास से लूटा गया माल और रुपये बरामद हुए हैं। एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने प्रेस वार्ता करके खुलासा करनी वाली चार टीमों को 25 हजार रुपये इनाम देने की घोषणा की है। दोनों आरोपियों को जेल भेजा गया है। वहीं फरार आरोपियों की तलाश की जा रही है।

गांव पापड़ हमजापुर निवासी राम अवतार बर्तन व्यापारी थे और जेवर गिरवी रखकर रुपये देने का भी काम करते थे। उनकी पत्नी मुन्नी देवी (65) की 2 जनवरी की रात उनके घर में गला दबाकर हत्या कर दी गई थी और उनके मुंह पर टेप लगा दिया गया था। कानों से कुंडल गायब थे, लेकिन गले में सोने की चेन थी। एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने मौका मुआयना किया था। खुलासे के लिए चार टीमें गठित की थीं। वहीं मुन्नी देवी की शाहजहांपुर निवासी बेटी राधा गुप्ता ने चचेरे भाई हिमांशु गुप्ता, शिवम गुप्ता और पूर्व प्रधान अनिल गुप्ता पर रिपोर्ट दर्ज कराई थी। टीमों ने जांच शुरू की थी। इसमें पता चला कि दोनों भाइयों ने ही घटना को अंजाम दिया था। पुलिस ने आरोपी भाई हिमांशु गुप्ता और शिवम गुप्ता को निर्माणाधीन गंगा एक्सप्रेस वे के पुल के नीचे से गिरफ्तार कर लिया। उनके पास से लूटे गए सोने की दो अंगूठी, सोने के एक जोड़ी कुंडल, सोने का हार, चांदी की एक चेन, सात जोड़ी पाजेब, चादी के पांच जोड़ी खडुए, चांदी की दो जोड़ी कंगनी, चार जोड़ी बिछुआ, एक लाख 10 हजार रुपये और दो मोबाइल फोन बरामद किए।

पुलिस की गिरफ्त में हत्या करने के आरोपी दो भाई और जानकारी देते एसएसपी।

ताऊ ने रुपये देने से किया था इनकार

पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि उन्हें रुपयों की जरूरत थी। उन्होंने ताऊ राम अवतार से रुपये मांगे तो उन्होंने ने देने से इंकार कर दिया था। 2 जनवरी को दिन में उन्होंने राम अवतार के घर पर ताला लगा देखा तो अपने साथियों के साथ मिलकर चोरी की योजना बनाई थी। वह रात में घर में घुसे थे। ताई मुन्नी देवी ने विरोध किया तो उनकी हत्या कर दी और मौके से फरार हो गए थे। खुलासा के दौरान एसपी सिटी विजयेंद्र द्विवेदी और सीओ दातागंज केके तिवारी मौजूद रहे। गिरफ्तारी करने वालों में दातागंज प्रभारी निरीक्षक वेदपाल सिंह, स्वाट टीम के प्रभारी निरीक्षक माधो सिंह बिष्ट, सर्विलांस सेल प्रभारी उपनिरीक्षक धर्वेंद्र कुमार रहे।

मालपुर ततेरा जंगल में 20 चौकीदार तैनात

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- जंगल में अवैध कटान की शिकायत पर डीएफओ ने भ्रमण कर बढ़ाई सुरक्षा

अमृत विचार : जिले के सबसे बड़े वन क्षेत्र मालपुर ततेरा की रखवाली के लिए वन विभाग ने बड़ा कदम उठाया है। यहां 20 चौकीदार तैनात किए है। 1983 हेक्टेयर में फैले जंगल में सबसे कीमती पेड़ हैं जो लकड़ी माफियाओं के निशाने पर हैं। इसकी पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

सहसवान क्षेत्र में मालपुर ततेरा वन क्षेत्र करीब 1983 हेक्टेयर में फैला है। इस वन क्षेत्र में शीशम, चंदन जैसे सबसे कीमती पुराने पेड़ हैं। जनपद की सीमा से लगे जंगल की रखवाली काफी समय से की जा रही है। जंगल में चोरी छिपे लकड़ी माफिया सक्रिय रहते हैं, जो रात को मौका मिलते ही कटान कर लेते हैं। वन विभाग ने इस तरह की शिकायतों पर सख्ती शुरू कर दी है। पूरे वन क्षेत्र में सुरक्षा की दृष्टि से गश्त बढ़ा दी गई है। वन क्षेत्र की रखवाली के लिए 20 चौकीदार तैनात किए है। जो रात और दिन में पहरेदारी करेंगे। इसके अलावा क्षेत्र के रेंजर भी वन क्षेत्र में गश्त करेंगे। स्थानीय पुलिस की मदद से अवैध कटान पर नजर रखी जाएगी।

डीएफओ निधि चौहान ने बताया कि सहसवान और कादरचौक क्षेत्र के वन क्षेत्रों की रखवाली को ठोस कदम उठाए गए हैं। मालपुर ततेरा जंगल का बड़ा रकबा है। इसलिए बीस चोकीदार लगाए हैं, जबकि कादरचौक क्षेत्र के चंदनपुर जंगल की सुरक्षा को भी दर्जन भर वन कर्मियों को तैनात किया गया है। क्षेत्र के रेंजर गश्त करेंगे और वह स्वयं गश्त को चेक करने के लिए भ्रमण करेंगे। जिससे किसी स्तर पर लापरवाही न बरती जरए। वन संपदा की सुरक्षा की जिम्मेदारी अलग अलग दी गई है। मालपुर ततेरा जंगल में खाली पड़ी जमीन पर पौधा रोपण किया जाएगा। इसके लिए वन विभाग ने पचास हजार पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। वन विभाग ने पौध रोपण को जंगल में स्थान चिन्हित करने की बात कही है। इस जंगल में शीशम और यूकेलिप्टस के पौधे रोपे जाएंगे।

सहसवान रेंज में भेजे गए सुशील कुमार

पिछले दिनों सहसवान रेंजर के सेवानिवृत्त होने के बाद उनकी जगह पर गोरखपुर से आए वन रेंजर सुशील कुमार ने मंगलवार कार्यभार संभाल लिया। सुशील को सहसवान रेंज की जिम्मेदारी सौंपी गई है। सुशील कुमार ने कहा कि मालपुर ततेरा जंगल की सुरक्षा उनकी पहली प्राथमिकता होगी। अवैध कटान नहीं होने दिया जाएगा।

प्रेमिका से वीडियो कॉल पर बात कर लगाया फंदा, मौत

- गांव गिधौल में खेत पर बन मचान में लटका मिला शव
- प्रेमिका से बात करने से नाराज पत्नी चली गई थी मायके

संवाददाता, विजय नगला

अमृत विचार : आगरा निवासी प्रेमिका से वीडियो कॉल पर बात करते हुए एक युवक ने फंदा लगाकर जान दे दी। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। महिला से प्रेम प्रसंग की जानकारी होने पर मृतक की पत्नी मायके चली गई थी।

थाना मूसाझाग क्षेत्र के गांव गिधौल निवासी योगेश की शादी लगभग छह महीने पहले कोतवाली दातागंज क्षेत्र के गांव बिहारीपुर में हुई थी। उसका आगरा निवासी दो बच्चों की मां के साथ प्रेम प्रसंग चल रहा था। वह महिला से अक्सर ही फोन पर बात करता था। पत्नी उसका विरोध करती थी। पति नहीं माना तो वह मायके चली गई थी। मंगलवार दोपहर लगभग 3 बजे योगेश फसलों की रखवाली के लिए खेत पर गए थे। खेत पर वह मचान पर बैठे थे। जहां उसने आगरा की प्रेमिका के साथ वीडियो कॉल की थी। बात करते हुए वह फंदे पर झूल गए। मौके पर ही उनकी मौत हो गई।

आसपास खेतों पर काम कर रहे ग्रामीणों ने शव लटका देखा तो उनके परिजनों को सूचना दी। परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना मिलने पर कुछ ही देर के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। महिला ने फिर से योगेश को वीडियो कॉल की। पुलिस ने योगेश का शव दिखाया तो महिला फफक कर रो पड़ी। प्रभारी निरीक्षक अजय कुमार ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। अभी किसी की ओर से तहरीर प्राप्त नहीं हुई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट और तहरीर आने के बाद कार्रवाई की जाएगी।

युवक के आत्महत्या करने पर मौके पर जानकारी करते पुलिसकर्मी। ● अमृत विचार

खेत पर लगी ग्रामीणों की भीड़।

लोगों के लिए ब्लड सैंपल जांच के लिए भेजे

बदायूं, अमृत विचार : मंगलवार को जिला अस्पताल में हेपेटाइटिस के 74 मरीजों के ब्लड सैंपल लिए गए। जांच के लिए राजकीय मेडिकल कॉलेज में भेजा गया है। करीब 55 मरीजों को पीलिया की दवा दी गई।

जिला अस्पताल के डाक्टरों ने बताया कि अब मंगलवार सोमवार और शुक्रवार को हेपेटाइटिस के मरीजों को दवा दी जाती है। मंगलवार को कई मरीजों के ब्लड सैंपल लिए जो जांच के लिए अग राजकीय मेडिकल कॉलेज में भेजे गए हैं। उन लोगों की जांच रिपोर्ट आने के बाद मरीजों को दवा दी जाएगी। बता दें कि कड़ाके की ठंड में मरीजों की संख्या भी बढ़ गई है। लगातार बुखार के मरीजों की संख्या बढ़ रही है।

जिला अस्पताल | डॉक्टर और कर्मचारी हो रहे परेशान, सीएमओ को लिखा पत्र

आयुष विंग बिल्डिंग में बिजली-पानी की व्यवस्था नहीं

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : जिला अस्पताल परिसर में बनाई आयुष विंग बिल्डिंग मरम्मत के अभाव में खस्ता हाल होने लगी है। बिल्डिंग में पानी बिजली की व्यवस्था नहीं होने से डाक्टरों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बिजली पानी संकट से जूझ रहे डक्टर सर्द मौसम में यहां बैठना भी नहीं चाहते हैं। परेशान डाक्टरों ने सीएमओ को पत्र लिख कर समस्या से अवगत कराया है।

जिला अस्पताल में डाक्टरों कर्मचारियों के आवास के निकट करीब 10 साल पूर्व आयुष औषधियों का भंडार गृह बनाया था। करीब 50 लाख से बिल्डिंग को तैयार किया गया था, लेकिन इस बिल्डिंग में आयुर्वेद के प्रभारी डॉक्टर ने लेने से इनकार कर दिया। इसके बाद इस बिल्डिंग को आयुष विंग बना दिया गया। इसमें आयुष के तीन डाक्टरों को सीएमओ के आदेश के बाद बिठाया जाने लगा। तीनों डॉक्टर बिल्डिंग में बैठते हैं, लेकिन बिल्डिंग में पानी का साधन नहीं है। बिजली भी नहीं है। बिल्डिंग बिजली पानी के संकट से जूझ रहे डॉक्टरों ने समस्या को लेकर मुख्य चिकित्सा अधिकारी को पत्र लिखा है।बिल्डिंग की मरम्मत कराने व बिजली पानी की व्यवस्था कराने की मांग की है।

- मरम्मत के अभाव में खस्ता हाल हो रही बिल्डिंग

जिला अस्पताल में बनी आयुष विंग बिल्डिंग में बैठने वाले डाक्टरों के पास मरीज भी बहुत कम पहुंचते हैं। क्योंकि ओपीडी से करीब 100 मीटर की दूरी पर अंदर है। जहां तक मरीज पहुंच ही नहीं पाते हैं। जिन तीन डाक्टरों को बिल्डिंग में बिठाया गया है उनमें से दो डाक्टरों को ओपीडी में अब शिफ्ट कर दिया गया है जिसके बाद अब एक डाक्टर पंकज सिंह ही बिल्डिंग में बैठ कर मरीज देखते हैं लेकिन बिजली पानी न होने के कारण वह भी पूरे समय नहीं बैठ पाते हैं। इसी बिल्डिंग में आयुर्वेद का योग सेंटर है जहां बिजली न होने के कारण शाम को योग भी नहीं सिखाया जाता है। योग शिक्षिका ने बताया कि पूरे दिन अंधेरा रहता है। फर्श टूट गया है दीवारों को सीमेंट टूट रहा है। खिड़की नहीं हैं। इसका मुख्य गेट गलत दिशा में बना है जिससे मरीजों को योग करने वालों को यहां तक आने में परेशानी होती है।

> जो बिल्डिंग बनी खड़ी थी उसको उपयोग में लाया जा रहा है। मरम्मत के लिए अभी पैसा नहीं है। यदि इस मद में कुछ आएगा तो मरम्मत की जाएगी। फिलहाल पानी की व्यवस्था कराने पर विचार किया जा रहा है। बिल्डिंग में पानी की पाइप लाइन से सप्लाई देने का प्रयास किया जाएगा।
>
> -डॉ. रामेश्वर मिश्रा, मुख्य चिकित्सा अधिकारी

महिला जीजा के साथ फरार, पुलिस से शिकायत

विजय नगला, अमृत विचार: रामपुर के थाना शाहाबाद क्षेत्र निवासी ग्रामीण ने बिनावर पुलिस को तहरीर देकर बताया कि बेटे की शादी लगभग ढाई साल पहले बिनावर क्षेत्र के एक गांव निवासी युवती से की थी। शादी के कुछ दिन तो परिवार में सब कुछ ठीक चल रहा था। इसके बाद पुत्रवधू मुजरिया क्षेत्र के एक गांव निवासी सगे जीजा से मोबाइल फोन पर बात करने लगी। इस कारण घर में कलेश होना शुरू हो गया था। ग्रामीण ने समधी को इस बारे में बताया, लेकिन संबंधी ने शिकायत पर ध्यान नहीं दिया। इसके बाद पुत्रवधू सोने-चांदी के जेवर लेकर जीजा के साथ चली गई। समधी ने कोई मदद नहीं की तो ग्रामीण ने पुलिस से शिकायत की। पुलिस ने जांच करने के बाद कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

आकाश अध्यक्ष और उत्कर्ष वर्मा बनाए जिला महामंत्री

चुनाव के बाद फूल माला पहने पदाधिकारी। ● अमृत विचार

- विकास भवन सभागार में हुआ ग्राम्य विकास मिनिस्टीरियल एसोसिएशन का चुनाव

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : ग्राम्य विकास मिनिस्टीरियल एसोसिएशन, जनपद शाखा का द्विवार्षिक चुनाव मंगलवार को विकास भवन सभागार में सम्पन्न हुआ। निर्वाचन अधिकारी संजय तोमर, वरिष्ठ प्रान्तीय उपाध्यक्ष, ग्राम्य विकास मिनिस्टीरियल एसोसिएशन की देखरेख में निर्वाचन कार्य सम्पन्न कराया गया।

संजय कुमार आर्य अध्यक्षता में बैठक की कार्यवाही प्रारम्भ की गई। निवर्तमान अध्यक्ष मनोज कुमार गुप्ता ने पूर्व कार्यकारिणी को भंग करते हुए नवीन कार्यकारिणी के निर्वाचन की कार्यवाही प्रारम्भ की। निर्वाचन में मनोज कुमार गुप्ता व संजय कुमार आर्य को संरक्षक बनाया गया है, जबकि आकाश सक्सेना अध्यक्ष, अनुज सक्सेना व कमलकान्त गौतम वरिष्ठ उपाध्यक्ष, उत्कर्ष वर्मा जिला महामंत्री, अशोक कुमार सम्प्रेक्षक शेष नारायण कोषाध्यक्ष, प्रीतिका पन्त संगठन मंत्री के रूप में निर्विरोध निर्वाचित किए गए। निर्वाचन अधिकारी ने नवनिर्वाचित कार्यकारिणी को पद की शपथ दिलाई।

चोरी की बाइक के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

बदायूं, अमृत विचार: सदर कोतवाली पुलिस ने वाहन चोरी की दो शातिर आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से चोरी की गई एक बाइक बरामद हुई। दोनों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज आरोपियों को जेल भेजा गया है।

चोरों ने शहर के मोहल्ला कटरा ब्रह्मपुरा निवासी अबरार हुसैन की बाइक चोरी कर ली गई थी। पुलिस ने 5 जनवरी को चोरी की रिपोर्ट दर्ज की थी। पुलिस ने सीसीटीवी कैमरों की फुटेज चेक की। इसके आधार पर बाइक चोरी के आरोपी जिला कासगंज के गांव नौरथा निवासी अवनीत शर्मा और सदर कोतवाली क्षेत्र की काशीराम कॉलोनी निवासी फैजान को कादरी दरगाह तिराहे से गिरफ्तार किया। जिनके पास से चोरी की गई अबरार हुसैन की बाइक बरामद हुई है। गिरफ्तारी करने वाली टीम में उपनिरीक्षक रवेंद्र, कांस्टेबल पाती राम और भूपेंद्र चौधरी रहे।

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 7 जनवरी 2026

न्यूज ब्रीफ

मां को मृत दर्शाकर बेटे के नाम करा दी जमीन

बदायूं, अमृत विचार : तहसील सहसवान क्षेत्र के गांव सिरसा खुर्द निवासी महक लता ने डीएम से शिकायत करके बताया कि उनके पति बन्नू सिंह उर्फ भानु प्रताप की दो साल पहले मौत हो गई थी। आरोप है कि हल्का लेखपाल ने उनके बेटे के साथ मिलकर कागजों में उन्हें मृत दर्शा दिया और पूरी जमीन उनके बेटे के नाम कर दी। इस धोखाधड़ी की वजह से उनके पास जमीन नहीं बची है। और बेटे ने भी घर से निकाल दिया है। वह बेघर हैं। वह एक साल से न्याय के लिए भटक रही हैं।

मस्जिद तोड़ने की सांसद बर्क ने की निंदा

संभल, अमृत विचार : पिछले पांच दिन में संभल में प्रशासन द्वारा दो मस्जिद, एक मदरसा व दो घर ध्वस्त करने की कार्रवाई की सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने निंदा की। कहा कि संभल में जो कुछ हुआ, वह सामान्य प्रशासनिक कार्रवाई नहीं बल्कि सत्ता की बेरुखी और जबरदस्ती का खुला प्रदर्शन है। सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने एक्स पर लिखे अपने संदेश में कहा कि पहले यह कहा गया कि लोगों ने खुद मस्जिद को तोड़ा, इसके बाद बुलडोजर चलाकर मदरसा गिरा दिया गया। कहीं दो मस्जिदें, कहीं एक मदरसा और हर जगह निशाने पर गरीब, कमजोर और बेबस लोग रहे। क्या यही कानून है? क्या बिना बातचीत, बिना इंसानियत, सिर्फ बुलडोजर से इंसाफ होगा? सांसद बर्क ने आरोप लगाया कि सरकारी जमीन के नाम पर लोगों को बेघर किया जा रहा है, धार्मिक स्थलों को तोड़ा जा रहा है और बाद में खबरों के जरिए सफाई दी जा रही है।

उर्वरक वितरण में गड़बड़ी पर होगी रिपोर्ट

संभल, अमृत विचार : जनपद में उर्वरकों की उपलब्धता, वितरण और प्रवर्तन व्यवस्था को लेकर जिलाधिकारी राजेंद्र पैंसिया की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में जिला कृषि अधिकारी ने बताया कि जनपद में वर्तमान में यूरिया 14,501 मीट्रिक टन, डीएपी 4,091 मीट्रिक टन और एनपीके 9,095 मीट्रिक टन उपलब्ध है।1 अक्टूबर 2025 से 5 जनवरी 2026 तक 50,010 मीट्रिक टन यूरिया की बिक्री हो चुकी है, जो गत वर्ष की इसी अवधि की तुलना में 5,759 मीट्रिक टन अधिक है। सहकारी पैक्स के माध्यम से भी लगातार विक्रय किया जा रहा है। अधिकारियों ने बताया कि इस समय गेहूं की फसल में टॉप ड्रेसिंग के लिए नाइट्रोजन का प्रयोग किया जा रहा है।

हलधर किसान यूनियन की बैठक में संगठन का विस्तार

बैठक में सदस्यता ग्रहण करने वाले सदस्य। ● अमृत विचार

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार : भारतीय हलधर किसान यूनियन के प्रादेशिक कैंप कार्यालय पर जिलाध्यक्ष राहुल सोलंकी की अध्यक्षता व राष्ट्रीय महासचिव व्यापार मोर्चा अवधेश लड्ढा एवं मृगांक जैन के नेतृत्व में बैठक की गई। बैठक में सैकड़ों लोगों को सदस्यता ग्रहण करा कर संगठन का विस्तार किया गया।

राष्ट्रीय अध्यक्ष धीरेन्द्र सोलंकी ने कहा कि किसानों के हित के लिए सरकार से किसान आयोग गठन की मांग की जा रही है। इसके बारे में किसानों को बताया गया। जिलाध्यक्ष राहुल सोलंकी ने कहा कि किसानों के हित में काम करते रहेंगे। इस मौके पर प्रदेश सचिव बिजनेस सोलंकी, प्रदेश उपाध्यक्ष प्रदीप चौहान, प्रदेश सचिव अनूप, संध्या शुक्ला, शाहनवाज अल्वी, अजीत गुर्जर, उमेश वार्ष्णेय, सहित अनेकों लोग मौजूद रहे।

एसआईआर : ड्राफ्ट मतदाता सूची का सभी मतदान केंद्रों पर किया अनंतिम प्रकाशन

जिले के 4.94 लाख मतदाताओं के नाम सूची से काटे

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : विधानसभावार फोटोयुक्त मतदाता सूची के विशेष सघन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान के बाद जिले की ड्राफ्ट मतदाता सूची मंगलवार को सभी मतदान केंद्रों पर सार्वजनिक रूप से प्रकाशित की गई। अभियान के दौरान करीब 4.94 लाख मतदाताओं के नाम एएसडी श्रेणी में होने के कारण सूची से हटाए गए हैं। अब दावे और आपत्तियां मांगी जा रही हैं। 6 फरवरी तक प्राप्त होने वाले दावे और आपत्तियों का निस्तारण करने के बाद 6 मार्च को अंतिम प्रकाशन किया जाएगा।

जिले की सभी छह विधानसभा क्षेत्रों में पिछले साल 4 नवंबर को एसआईआर का काम शुरू हुआ था। एसआईआर कार्य समय पर पूरा न हो पाने वजह कई बार तिथियों को बढ़ाया गया। मतदाता सूची का अनंतिम प्रकाशन 31 दिसंबर को होना था, लेकिन निर्वाचन आयोग की ओर से इसके प्रकाशन की तिथि 6 जनवरी कर दी गई। मंगलवार को ड्राफ्ट मतदाता सूची सभी विधानसभा क्षेत्रों के मतदान केंद्रों पर चस्पा कर दी गई। अब दावे और आपत्तियां मांगी जा रही है। इसका मतदाता का नाम पहली ड्राफ्ट सूची में नहीं हैं, वे 6 फरवरी तक फॉर्म 6 भरकर बीएलओ के पास जमा कर सकते हैं। ताकि उनका नाम जोड़ा जा सके। 6 मार्च 2026 को अंतिम सूची जारी की जाएगी।

● सभी विधानसभा क्षेत्रों में सूची जारी होने के बाद मांगे जा रहे दावे और आपत्तियां

मतदाता सूची को शुद्ध, अद्यतन और त्रुटिरहित बनाने के उद्देश्य से भारत निर्वाचन आयोग ने लगभग 22 वर्ष बाद विशेष सघन पुनरीक्षण अभियान चलाया। एसआईआर अभियान से पहले जिले के छह विधानसभा क्षेत्रों में कुल 24,18,408 मतदाता पंजीकृत थे। सत्यापन और चिन्हांकन के बाद ड्राफ्ट रोल में 119,23,804 मतदाता शेष रह गए हैं, जिनका मंगलवार को मतदान केंद्रों पर प्रकाशन किया गया। इसमें मृतक, स्थानांतरित, अनुपस्थित और डुप्लीकेट 4,94,651 मतदाताओं की पहचान कर उन्हें सूची से अलग किया गया है। ड्राफ्ट रोल के प्रकाशन के बाद छह जनवरी से छह फरवरी तक दावा और आपत्तियां दर्ज की जा सकेंगी। इस दौरान नाम जोड़ने, त्रुटि सुधार और आपत्तियों का निस्तारण किया जाएगा। सभी प्रक्रिया पूरी होने के बाद संशोधित और शुद्ध मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन छह मार्च को प्रस्तावित है।

मैप न होने वाले मतदाताओं को भेजा जाएगा नोटिस

एसआईआर अभियान के दौरान वर्ष 2003 की मतदाता सूची में शामिल अधिकांश मतदाताओं के फॉर्म तो प्राप्त हुए, लेकिन उनके नाम आयोग के पोर्टल पर मैप नहीं हो पाए। ऐसे 1,60,799 मतदाताओं को भारत निर्वाचन आयोग की व्यवस्था के तहत नोटिस जारी किए जाएंगे। इन मामलों के निस्तारण के बाद ही सूची को अंतिम रूप दिया जाएगा।

मतदाता ड्राफ्ट सूची का प्रकाशन सभी विधानसभा क्षेत्रों के मतदान केंद्रों पर कर दिया गया है। सूची प्रकाशित होने के बाद दावे और आपत्तियां छह फरवरी तक प्राप्त की जाएगी। इस अवधि में पात्र मतदाताओं, विशेषकर युवा मतदाताओं के नाम अधिक से अधिक संख्या में निर्वाचक नामावली में शामिल कराने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

– डॉ. वैभव शर्मा, एडीएम/उप जिला निर्वाचन अधिकारी

घने कोहरे के बीच हुआ सवेरा, दृश्यता रही शून्य

कक्षा एक से 12 तक के बच्चों का 7 जनवरी तक अवकाश घोषित

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● यातायात प्रभावित, कोहरे में कांपते हुए घर से निकले कामकाजी लोग ● अधिकतम तापमान 18, न्यूनतम 6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया

घने कोहरे के बीच लाइट जलाकर जाते वाहन चालक। ● अमृत विचार

अमृत विचार : कड़ाके की ठंड से पूरा जनपद चपेट में है। मंगलवार भोर से घना कोहरा छाया रहा। दिन के 3 बजे के बाद कुछ देर के लिए निकली धूप ने थोड़ी राहत दी, लेकिन शीतलहर का प्रकोप कम नहीं हुआ। सर्द हवाएं शरीर को कंपकंपाती रहीं। बढ़ती ठंड के कारण तापमान में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही है, जिससे जनजीवन प्रभावित है। ठंड के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए प्रशासन ने कक्षा एक से 12 के बच्चों का छह और सात जनवरी तक के लिए अवकाश घोषित कर दिया गया है। कृषि विभाग के अनुसार आने वाले कुछ दिनों तक मौसम का मिजाज ऐसा ही बने रहने की संभावना है।

मंगलवार की सुबह से ही घना कोहरा छाया रहा। कोहरे का असर दोपहर 12 तक रहा। दृश्यता शून्य रही। 50 मीटर तक दिखाई नहीं दे रहा था। घना कोहरा होने की वजह से यातायात प्रभावित रहा। चालक वाहनों को लाइट जलाकर बेहद धीमी गति से चल रहे थे। इस कोहरे के बीच कामकाजी लोग काम पर निकले। बाजार भी देर से खुला। दोपहर तक कोहरा होने की वजह से सड़कों पर अधिक भीड़ भाड़ दिखाई नहीं दी। जरुरी काम से निकलने वाले लोग ही सड़कों पर दिख रहे थे। तीन बजे के आस पास सूरज ने कुछ चमक बिखेरी, लेकिन एक घंटे बाद ही सूरज की रोशनी भी गायब हो गई। पूरे दिन लोग अलाव सहारे ही बैठे रहे।

गर्म कपड़े और मास्क का प्रयोग करने की सलाह

चिकित्सकों ने लोगों को सलाह दी है कि वे सुबह और शाम के समय अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से बचें और गर्म कपड़े व मास्क का प्रयोग करें। मंगलवार को अधिक कोहरा होने और सूरज न निकलने पर अधिकतम तापमान अधिकतम 18 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम तापमान 6 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मौसम के जानकार बुधवार को भी घना कोहरा छाए रहने की संभावना व्यक्त कर रहे हैं।

विद्यालय में शिक्षक अभिभावक संगोष्ठी का किया आयोजन

बिल्सी, अमृत विचार : बाबा इंटरनेशनल स्कूल में मंगलवार को शिक्षक-अभिभावक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। कक्षा-9 से 12 तक के विद्यार्थियों के अभिभावक विद्यालय में उपस्थित हुए। संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के पीरियोडिक टेस्ट 3 व प्री-बोर्ड परीक्षा–1 के परीक्षा परिणामों की जानकारी अभिभावकों को देना एवं विद्यार्थियों की शैक्षणिक प्रगति पर विस्तृत चर्चा करना था।

शिक्षकों ने अभिभावकों को आगामी बोर्ड परीक्षाओं को ध्यान में रखते हुए नियमित अध्ययन, पुनरावृत्ति, समयबद्ध अभ्यास तथा अनुशासित दिनचर्या अपनाने की सलाह दी। विद्यालय प्रशासन की ओर से यह अपील की गई कि अभिभावक घर पर बच्चों को पढ़ाई के लिए सकारात्मक एवं अनुशासित वातावरण उपलब्ध कराएं।

संगोष्ठी में शिक्षक और अभिभावक।

कड़ाके की ठंड से बचाने को गोवंश पर डाली झूल

गोशाला में बीमार गोवंश पर पड़ी झूल। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : कड़ाके की ठंड में गोवंश को बचाना बड़ा मुश्किल काम है। गोशालाओं में कमजोर और बीमार गोवंश को झूल डाली जा रही है। इससे वह ठंड से बच सकें। करीब सात गोशालाओं में गोवंश को झूले डाली गई हैं। बीमार गोवंश का उपचार किया जा रहा है।

विकासखंड सलारपुर के गांव ढकिया रसूलपुर की गोशाला में करीब चार दर्जन गोवंश हैं। इनमें करीब पांच गोवंश बीमार हैं। कई गोवंश कमजोर हैं। इनको ठंड से बचाने को पशु चिकित्सा अधिकारी ने झूलें डाली हैं। जिससे ठंड से गोवंश को बचाया जा सके। इस ब्लॉक क्षेत्र की सात गोशालाओं में बीमार और कमजोर गोवंश पर झूल डाली जा चुकी है। उधर, रफियाबाद की गोशाला में दो गोवंश बीमार हैं जिन पर झूल डाली गई हैं। बीमार गोवंश का उपचार किया जा रहा है। पशु चिकित्सक संजीव कुमार भुइयार ने बताया कि अधिक ठंड में कमजोर गोवंशों के बीमार होने का खतरा रहता है। इसलिए उनके ऊपर झूल डाली जा रही है। जिससे गोवंश को ठंड से बचाया जा सके। बताया कि गोशाला में बिजली की हर समय व्यवस्था की गई है। गोशालाओं को पन्नी से ढका गया है जिससे गोवंश को शीत लहर से बचाया जा सके।

नेत्र शिविर में ग्रामीणों की आंखों का किया परीक्षण

बिल्सी, अमृत विचार : तहसील क्षेत्र के ग्राम गुधनी में स्थित आर्य समाज मंदिर पर मंगलवार को रोटरी क्लब बिसौली द्वारा निःशुल्क नेत्र जांच शिविर लगाया। इसमें चिकित्सकों ने ग्रामीणों की आंखों का परीक्षण किया। साथ ही आवश्यक दवाइयां मुफ्त में वितरित की।

शिविर का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को आंखों से संबंधित बीमारियों के प्रति जागरूक करना और समय रहते उपचार उपलब्ध कराना था। शिविर में बड़ी संख्या में ग्रामीणों ने पहुंचकर अपनी आंखों की जांच कराई और विशेषज्ञ चिकित्सकों से परामर्श लिया। नेत्र जांच शिविर को सफल बनाने में ऑप्टोमेट्रिस्ट टीम का विशेष योगदान रहा। टीम में दिनेश मधु, ठाकुर जीतू सिंह, आकांक्षी वार्ष्णेय, कशिश वार्ष्णेय, आचार्य संजीव रूप रजनीश शामिल रहे।

आंखों का परीक्षण करते चिकित्सक।

बावट में श्रद्धालुओं ने निकाली प्रभात फेरी

प्रभात फेरी निकालते श्रद्धालु। ● अमृत विचार

संवाददाता, कुंवर गांव

अमृत विचार : सलारपुर ब्लॉक क्षेत्र के गांव बावट में माघ महीने में माघ स्नान करने वाले श्रद्धालुओं द्वारा गांव के प्राचीन शिव मंदिर से प्रतिदिन भजन कीर्तन के साथ प्रभात फेरी निकाली जा रही है। प्रभात फेरी गांव के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई फिल्मी गानों की तर्ज पर भजन कीर्तन के साथ निकाली जाती है। मंगलवार को गांव में प्रातः प्रभात फेरी निकाली गई, ग्रामीणों द्वारा प्रभात फेरी में शामिल श्रद्धालुओं का जगह-जगह स्वागत किया गया। इस मौके पर ओम श्री देवी, बाबूराम, अनुराग, अरुण पटेल, अभिषेक, कौशल, दीपांशु, बुधू, सौरभ पटेल, आयुष आदि श्रद्धालु मौजूद रहे।

ड्राफ्ट मतदाता सूची की दी जानकारी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : एसआईआर के बाद ड्राफ्ट मतदाता सूची का मंगलवार को प्रकाशन कर दिया गया। इस संबंध में डीएम ने सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों को अवगत कराया। साथ ही उन्हें खंड शिक्षक निर्वाचक नामावलियों की जानकारी भी दी।

डीएम अवनीश कुमार राय ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से निर्वाचन नामावलियों के अद्यतन, दावे एवं आपत्तियों के निस्तारण, बीएलओ की नियुक्ति की स्थिति तथा मतदान स्थलों के समायोजन आदि बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा की। कहा कि निर्वाचक नामावली का प्रारूप प्रकाशन कर दिया गया है। दावे एवं आपत्तियां दर्ज कराने की अवधि मंगलवार तक निर्धारित की गई है। नामावलियों से संबंधित सुनवाई, सत्यापन एवं निर्णय की प्रक्रिया 27 फरवरी तक पूर्ण की जाएगी, जबकि अंतिम निर्वाचक नामावली का प्रकाशन 6 मार्च को किया जाएगा। बताया कि जनपद की सभी छह विधानसभा क्षेत्रों में विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा बीएलओ की नियुक्ति की गई हैं, जिससे पुनरीक्षण कार्य को पारदर्शी एवं प्रभावी बनाया जा सके। बैठक में उपस्थित सभी राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से अपील की गई कि वे अधिक से अधिक नागरिकों को मतदाता के रूप में पंजीकरण कराने के लिए प्रेरित करें। इसके अलावा उन्होंने कहा कि खंड शिक्षक निर्वाचक नामावलियों का अंतिम प्रकाशन भी कर दिया है। इसमें जनपद में बनाए गए 10 बूथों पर 3893 मतदाता हैं। इस अवसर एडीएम एफआर सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते डीएम अवनीश कुमार राय।

● ड्राफ्ट मतदाता सूची के संबंध में जिला अधिकारी ने राजनीतिक दलों के साथ की बैठक

जंगली सूअरों ने खेत में आलू को किया तहस-नहस

बदायूं, अमृत विचार : ग्रामीण क्षेत्रों में जंगली सूअर किसानों को मुसीबत बने हुए हैं। आलू के खेतों में सूअर रात भर चौकड़ी काटते हैं।

ग्राम उघैनी निवासी राजाराम ने बताया कि उनके तीन बीघा खेत में आलू हैं। रात को वह खेत पर ही रहते हैं। खेत के चारों ओर तार लगाए हैं फिर भी जंगली सूअर रात को खेत में घुस जाते हैं। जंगली सूअर अपने मुंह से आलू को उखाड़ देते हैं जिससे पूरी कुड़ी केआलू खराब होते हैं। सूअरों ने आलू को तहस नहस कर दिया। वह रात दो बजे खेत पर पहुंचे तो सूअर खेत में चक्करी काट रहे थे। उन्होंने गांव से कुछ और लोगों को बुलाया जिसके बाद लाठी भाला लेकर सूअरों को खेत से निकाला। इसी तरह कई अन्य किसानों ने जंगली सूअरों से नुकसान की बात कही है।

जीवन ज्योति सेवा संस्था ने किया कंबल का वितरण

कंबल का वितरण करतीं अपर जिला जज शिवकुमारी व प्रभारी निरीक्षक ज्योति सिंह।

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : मुजरिया क्षेत्र के कोल्हाई पर ज्योति सेवा संस्था की ओर से आयोजित कार्यक्रम में अपर जिला जज शिवकुमारी और प्रभारी निरीक्षक ज्योति सिंह ने सौ गरीब व जरूरतमंद महिला व पुरुषों को कंबल वितरित किए।

उन्होंने कहा कि मानव सेवा धर्म एक आदर्श मार्ग प्रशस्त करता है। कड़ाके की ठंड की वजह से समाजसेवी संस्था के पदाधिकारियों ने कंबल वितरण का निर्णय लिया है। संस्था की ओर से अजरा परवीन, अबरार अहमद, प्रथमा पाठक आदि पदाधिकारी मौजूद रहे।

आदेश

महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्र–छात्राओं की अपार आईडी बनाना किया अनिवार्य

बिना अपार आईडी छात्रों को नहीं मिलेगा टैबलेट

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

● रुहेलखंड विश्वविद्यालय की ओर से सभी कॉलेजों के लिए जारी किया पत्र ● छात्रवृत्ति में भी अपार आईडी को अनिवार्य करने की चल रही तैयारी

अमृत विचार : परिषदीय, माध्यमिक के बाद अब डिग्री कॉलेज में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए भी अपार आई बनवाना अनिवार्य कर दिया है। यह व्यवस्था वर्तमान सत्र से ही लागू कर दी गई है। अपार आईडी न बनवाने की स्थिति में छात्र-छात्राओं को टैबलेट नहीं दिया जाएगा। रुहेलखंड विश्वविद्यालय की ओर से सभी कॉलेजों को पत्र मिलने के बाद कॉलेजों में विद्यार्थियों से अपार आईडी बनाने के लिए कहा जा रहा है।

परिषदीय और माध्यमिक विद्यालय के बच्चों की पिछले साल से अपार आईडी बनाई जा रही है। जिले के विद्यालयों में यह कार्य जारी है। परिषदीय और माध्यमिक के बाद अब डिग्री कॉलेजों के विद्यार्थियों को भी अनिवार्य कर दिया है। यह व्यवस्था वर्तमान सत्र से ही लागू कर दी गई है। एनएमएसएन दास डिग्री कॉलेज के प्राचार्य आशीष कुमार सक्सेना ने बताया कि इस शैक्षिक सत्र से अपार आईडी अनिवार्य कर दी गई है।

रुहेलखंड विश्वविद्यालय का पत्र मिलने के बाद विद्यार्थियों को इसकी सूचना दी जा रही है। बताया कि अभी तक महाविद्यालयों में संचालित प्रोफेशनल कोर्स में ही अपार आईडी बनवाना अनिवार्य किया गया था, लेकिन अब बीए, बीएससी जैसे कोर्स भी शामिल कर दिए गए हैं। बताया कि विद्यार्थियों के लिए अपार आईडी बनाना जरूरी है। इसमें विद्यार्थियों का शैक्षणिक ब्योरा डिजिटल रूप में दर्ज होता है। इसे किसी भी कॉलेज में देखा जा सकता है। अगर विद्यार्थी अपार आईडी नहीं बनवाते हैं तो टैबलेट नहीं दिया जाएगा और न ही अन्य योजनाओं का लाभ दिया जाएगा। विद्यार्थियों से अपार बनवाने के लिए कहा जा रहा है साथ ही चेतावनी भी दी जा रही है अगर उनके द्वारा इसे नहीं बनवाया गया तो उनका नाम टैबलेट वितरण कार्यक्रम की सूची से हटा दिया जाएगा। बताया कि छात्रवृत्ति में भी इसे अनिवार्य करने की तैयारी चल रही है। महाविद्यालय की ओर से लगातार इसकी सूचना छात्र-छात्राओं को दी जा रही है। छात्र खुद भी अपनी अपार आईडी बना सकते हैं।

छात्र-छात्राएं स्वयं बना सकते हैं अपार आईडी

दास कॉलेज के प्राचार्य ने बताया कि अपार आईडी अनिवार्य है। जिसे छात्र-छात्राएं स्वयं ही बना सकते हैं। इसके लिए विद्यार्थियों को गूगल पर एबीसी आईडी लिखकर सर्च करना होगा। इससे एकेडमिक बैंक ऑफ क्रेडिट्स की वेबसाइट आ जाएगी। इस पर क्लिक कर लॉग-इन पर जाएं। यहां अपनी कोई भी एक पहचान आईडी आधार, पैन, ड्राइविंग लाइसेंस आदि का चयन करें। आईडी दर्ज करने के बाद संबंधित मोबाइल नंबर पर एक ओटीपी आएगा। ओटीपी भरते ही साइन-इन पर क्लिक करें। 12 अंकों की अपार आईडी बनकर तैयार हो जाएगी। इसके बाद उसे महाविद्यालय में जमा करेंगे।

मुख्य आरक्षी मारूफ ने आर्म रेसलिंग में जीता स्वर्ण

संभल, अमृत विचार : उत्तर प्रदेश संगठन आर्म रेसलिंग द्वारा आगरा पब्लिक स्कूल आगरा में 2 से 5 जनवरी तक आयोजित उत्तर प्रदेश स्टेट आर्म रेसलिंग चैंपियनशिप में डायल 112 में तैनात मुख्य आरक्षी मोहम्मद मारूफ ने स्वर्ण पदक जीता

मंगलवार को पुलिस कार्यालय बहजोई में पुलिस अधीक्षक कृष्ण कुमार विश्नोई ने मोहम्मद मारूफ को मेडल पहनाकर सम्मानित किया तथा उन्हें एक ट्रैकसूट भेंट कर प्रोत्साहित किया। पुलिस अधीक्षक ने उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि ऐसे खिलाड़ी पुलिस बल के लिए प्रेरणास्रोत होते हैं। एसपी ने कहा कि पुलिस कर्मियों को खेल प्रतियोगिताओं का हिस्सा बनना चाहिए। ऐसा करने से जहां उनकी शारीरिक फिटनेस ठीक रहेगी वहीं खेल के दम पर वह पदोन्नति के अवसर भी पा सकते हैं।

राज्याभिषेक के साथ कथा का समापन

अंतिम दिन की कथा सुनाते कथा वाचक प्रेममूर्ति पंकज मिश्रा। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : बिसौली के शरह बरौलिया स्थित सिद्ध बाबा इंटर कॉलेज में चल रही श्रीराम कथा राज्याभिषेक के साथ संपन्न हुई। कथा वाचक प्रेममूर्ति पंकज मिश्र ने कथा का सजीव वर्णन किया। इससे भक्त भाव विभोर हो गए।

यह प्रसंग रामायण के उत्तरकांड का महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसमें भगवान राम का अयोध्या लौटने और राजा बनने का वर्णन है। उन्होंने भक्तों को बताया कि श्री राम कथा में राम के राजतिलक का प्रसंग रामायण के उत्तरकांड का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो बनवास के बाद, लंका विजय के बाद भगवान राम के अयोध्या लौटने और राजा बनने की घटना है।

जहां उनके राज्याभिषेक से तीनों लोकों में सुख-शांति फैल जाती है, सभी शोक दूर होते हैं और राम राज की स्थापना होती है। कथा के अंतिम दिवस के अवसर पर मुख्य यजमान सत्य देव मिश्रा, गोविंद मिश्रा, पंडित श्यामलाल पाठक, बृजेश शंखधार, सत्य पाल शर्मा, सुभाष चौधरी, पंकज शर्मा, टिंकू कटिया, रामबहादुर शंखधार, मनोहर गुप्ता, विनीत कटिया, हरद्वारी लाल, राजेश शंखधार, शैलेश पाराशरी, श्रीकृष्ण, अवनीश पाठक, संजीव पाठक आदि उपस्थित रहे। कथा के अंतिम दिन कॉलेज के कर्मचारी अब्दुल शकील अहमद ने 501 रुपये का दान किया।

न्यूज ब्रीफ

ऑटो चालक की मौत हत्या करने का आरोप

संभल, अमृत विचार : थाना असमोली क्षेत्र में विनोद गांव मढ़न स्थित एक एकेडमी से शिक्षकों को लेने के लिए ऑटो लेकर गया था। लौटते समय उसकी असमोली के निकट एक बाइक से टक्कर हो गई। इसी बात को लेकर दोनों पक्षों में विवाद हो गया, जो मारपीट में बदल गया। आरोप है कि मारपीट के दौरान ऑटो चालक के साथ बेरहमी से मारपीट की गई। बाद में पुलिस उसे थाने लेकर आ रही थी, तभी रास्ते में उसकी हालत बिगड़ गई। पुलिस उसे अस्पताल ले गई, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। मृतक की पत्नी कमलेश ने पुलिस को दी तहरीर में फरमान पुत्र जमील अहमद निवासी गांव मवई ढोल सहित तीन-चार अन्य लोगों पर मारपीट कर हत्या करने का आरोप लगाया है। मृतक की पत्नी की तहरीर के आधार पर मामला दर्ज कर लिया गया है।

बाल विवाह के खिलाफ होगा जन आंदोलन

संभल, अमृत विचार : बेटियों के सुरक्षित और उज्ज्वल भविष्य को सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश सरकार ने बाल विवाह जैसी कुरीति के खिलाफ डिजिटल मोर्चा खोला तो इसकी सफलता के लिए संभल जनपद में भी प्रशासन ने काम शुरू कर दिया है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर प्रदेश भर में 'बाल विवाह मुक्त भारत' अभियान को युद्ध स्तर पर लागू कर ऑनलाइन शपथ और सर्टिफिकेट आधारित व्यवस्था शुरू की है। इस अभियान की खास बात यह है कि अब आम नागरिक डिजिटल पोर्टल के माध्यम से बाल विवाह के खिलाफ शपथ ले सकते हैं। शपथ लेते ही उन्हें ऑनलाइन सर्टिफिकेट मिलेगा।

कार्रवाई से 181 करोड़ रुपये का हुआ फायदा

संभल, अमृत विचार : संभल में बिजली चोरी रोकने और विद्युत इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत करने के लिए सितंबर 2024 से शुरू किए गए संयुक्त अभियान ने बड़े स्तर पर असर दिखाया है। बिजली विभाग, पुलिस और प्रशासन की सख्त कार्रवाई से जहां लाइन लॉस 60 से घटकर 27 प्रतिशत पर आ गया वहीं विभाग को करीब 181 करोड़ रुपये का वित्तीय लाभ हुआ। एक साल के दौरान के प्रयासों व प्रभावों की जानकारी जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षकव विद्युत विभाग के अधीक्षण अभियंता ने संयुक्त पत्रकार वार्ता में दी। पूरे जनपद का औसत लाइन लॉस भी करीब 40 प्रतिशत था।

जिले से होकर गुजर रहा जंबूद्वीप रोड होगा चौड़ा

30589.50 लाख की लागत से 10 मीटर चौड़ा किया जाएगा रोड

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- उसहैत, कादरचौक अटेना पुल तक होगा रोड का चौड़ीकरण
- लोक निर्माण विभाग ने प्रस्ताव तैयार कर शासन को भेजा

अमृत विचार : मेरठ से बदायूं होकर गुजर रहा 72 किलोमीटर रोड चौड़ा किया जाएगा। वर्तमान में रोड सात मीटर है। इसे 10 मीटर चौड़ा किया जाना है। इसके निर्माण में 30589.50 लाख रुपये खर्च होने हैं। लोक निर्माण विभाग की ओर से प्रस्ताव बनाकर शासन में भेजा है।

मेरठ जैन मंदिर से प्रयागराज तक जाने वाला मार्ग जंबूद्वीप के नाम से जाना जाता है। यह रोड मेरठ से बुलंदशहर, डिबाई, संभल होते हुए बदायूं से होकर गुजर रहा है। यह रोड सभी जैन तीर्थ स्थलों को जोड़ता है। जैन तीर्थ स्थलों को जोड़ने के चलते ही इसे जंबूद्वीप नाम दिया गया है। बदायूं में 72 किलोमीटर के हिस्से की चौड़ाई कम है। यह एरिया बदायूं से कादरचौक, कादरचौक से गढ़िया हरदुआ पट्टी टिकरी ततारपुर होते हुए कोरी कलां कटरा अटेना होकर फर्रुखाबाद की ओर निकल जाता है। इस 72 किलोमीटर के हिस्से का चौड़ीकरण होना है। वर्तमान में यह मार्ग सात मीटर है। अब इसे 10 मीटर चौड़ा किया जाएगा। इसके निर्माण में करीब 30589.50 लाख रुपये खर्च होने हैं। इसका प्रस्ताव शासन के भेजकर लोक निर्माण विभाग ने बजट की मांग की है।

डेढ़-डेढ़ मीटर रोड किया जाएगा चौड़ा

बदायूं से कादरचौक, कादरचौक से गढ़िया हरदुआ पट्टी टिकरी ततारपुर होते हुए कोरी कलां कटरा अटेना होकर फर्रुखाबाद की ओर जाने वाले मार्ग अभी सात मीटर चौड़ा है। इसे 10 मीटर चौड़ा किया जाना है। दोनों ओर से रोड को डेढ़-डेढ़ मीटर चौड़ा किया जाएगा। इससे वाहन चालकों को आसानी रहेगी। रोड चौड़ा करने के लिए लोक निर्माण विभाग ने प्रस्ताव भेजकर बजट की मांग की है।

> बदायूं से कादरचौक होते हुए उसहैत अटेना तक जाने वाला रोड चौड़ा होगा। इसके निर्माण के लिए प्रस्ताव भेजा है। प्रस्ताव की स्वीकृति मिलने के बाद निर्माण कार्य कराया जाएगा।
> – नरेश कुमार सिंह, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग

हाथरस के सनी का था जुनावई में मिला शव

संभल, अमृत विचार: तहसील गुन्नौर के थाना जुनावई क्षेत्र के गांव पूरन पट्टी के जंगल में दबोई खुर्द जाने वाले चकरोड पर 2 जनवरी की सुबह एक युवक का शव पड़ा मिला था। पुलिस ने शव की शिनाख्त कराने का प्रयास किया था लेकिन उस समय शव की शिनाख्त नहीं हो पाई थी। मरने वाले के सीने और हाथ पर अंग्रेजी में सनी लव नेहा लिखा था। पुलिस को मौके से एक बैग भी मिला, जिसमें दो-तीन जोड़ी कपड़े रखे थे। मृतक की पहचान के लिए पुलिस ने संभलके अलावा अलीगढ़, बुलंदशहर और बदायूं पुलिस से संपर्क किया। साथ ही सार्वजनिक स्थानों, पेट्रोल पंप, रेलवे स्टेशन, रोडवेज और प्राइवेट बस अड्डों पर युवक की फोटो चस्पा कराई गई थी। 80 घंटे बाद अब मृतक की शिनाख्त सनी (22) पुत्र हीरालाल के रूप में हुई है। सनी के सीने पर लिखा नेहा नाम उसकी पत्नी का है। उसकी छह साल की एक बेटी भी है। थाना प्रभारी अखिलेश प्रधान ने बताया कि सनी पिछले 15 दिनों से घर से लापता था। परिजनों ने उसकी गुमशुदगी दर्ज नहीं कराई थी।

मांगें पूरी नहीं होने पर आशा और संगिनियों की हड़ताल जारी, नारेबाजी

हड़ताल स्थल पर नारेबाजी करतीं आशा व संगिनी। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- मालवीय आवास गृह पर 23 दिनों से दिया जा रहा धरना

अमृत विचार : मालवीय आवास गृह पर आशा और संगिनी की विभिन्न मांगों को लेकर मंगलवार को 23वें दिन भी हड़ताल जारी रही।

आशा कर्मियों को संबोधित करते हुए जिलाध्यक्ष जौली वैश्य ने सरकार की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि प्रदेश भर में 1 लाख से अधिक आशाकर्मी शांतिपूर्ण ढंग से आंदोलन कर रही हैं। सरकार की उदासीनता ने साबित कर दिया कि उनकी मंशा हमारी समस्याओं के समाधान की नहीं है, बल्कि वह गुलामी का सिलसिला जारी रखना चाहती है। उन्होंने कहा कि मेहनतकशों ने अपने हक अधिकार के लिए महान संघर्षों से बदलाव का इतिहास लिखा है। हम उन्हीं के वारिस हैं। इस बार आर पार की लड़ाई होगी। धीरे-धीरे सरकार के प्रति गुस्सा बढ़ता जा रहा है। सरकार को अपनी हठधर्मिता का खामियाजा भुगतना होगा। जिला सचिव मुनिशा ने कहा कि सरकार के एक मंत्री के बयान ने सरकार की सोच और महिलाओं, गरीबों के बारे में उनकी धारणा को स्पष्ट कर दिया है। मेहनतकश लोगों को खासकर महिला कामगारों को इस अपमान जनक बयान के पीछे की घिनौनी मानसिकता को भी समझना चाहिए। उन्होंने कहा कि 9 जनवरी को मंडलायुक्त कार्यालय पर प्रदर्शन के बाद अगर सरकार ने कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाया तो संगठन भी कुछ कड़े निर्णय लेने के लिए बाध्य होगा। हड़ताल करने वालों में सीमा, दुर्गा, नीलम, अलका, निर्दोष, मीना, राजेश्वरी, दर्शना, उर्मिला, रूबी, प्रेमवती आदि आशाएं मौजूद रहीं।

कोल्हाई में विधिक सेवा सहायता केंद्र किया शुरू

फीता काटकर केंद्र का आरंभ करतीं अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश शिवकुमारी।

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से तहसील सहसवान के कोल्हाई में स्थापित विधिक सहायता केंद्र का मंगलवार को आरंभ किया गया। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश व जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव शिवकुमारी ने फीता काटा। उन्होंने कानूनी सलाह के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। लोगों से संवाद करके विभिन्न जानकारी दी।

बाल संरक्षण अधिकारी रवि कुमार ने शासन की योजनाओं की जानकारी देते हुए कन्या सुमंगला योजना, वृद्धावस्था योजना, विधवा योजना, मुख्यमंत्री विवाह योजना आदि के बारे में बताया। विधिक सहायता केंद्र का उद्देश्य ग्राम पंचायत के पंचायत घर पर स्थापित कर जनता की हर समस्या की सुनवाई करने से है। खंड विकास अधिकारी सतीश कुमार, नायब तहसीलदार सहसवान, एडीओ पंचायत, ग्राम प्रधान मीना देवी, पंचायत सचिव अजयपाल, थाना मुजरिया प्रभारी निरीक्षक ज्योति सिंह, स्वास्थ्य विभाग आदि उपस्थित रहे।

मुड़ा पुख्ता पुल को लेकर प्रदर्शन

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : मुड़ा पुख्ता पुल निर्माण की मांग को लेकर कांग्रेस ने दातागंज तहसील पर प्रदर्शन किया। इसके बाद उपजिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपा। कांग्रेसियों ने चेतावनी दी कि एक सप्ताह में पुल निर्माण कार्य शुरू नहीं हुआ तो सत्याग्रह शुरू किया जाएगा।

मंगलवार को कांग्रेसियों ने दातागंज तहसील पर प्रदर्शन करते हुए क्षेत्र के ग्राम मुढ़ा पुख्ता पर अधूरे पुल को पूरा कराने की मांग की। जिलाध्यक्ष अजीत यादव के नेतृत्व में प्रदर्शन किया और तहसीलदार सतीश चंद्र मिश्रा को उपजिलाधिकारी के नाम ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में अधूरे मुढ़ा पुख्ता पुल का निर्माण शुरू कराने, आवारा पशुओं से फसलों की सुरक्षा करने, समरेर में मुढ़ा गांव के पास छुट्टा पशुओं को गोशाला बनाने, सभी भूमिहीनों को एक एकड़ कृषि भूमि का पट्टा देने, पात्रों को राशन कार्ड, वृद्धा विधवा पेंशन देने,

तहसीलदार को ज्ञापन देते कांग्रेस जिलाध्यक्ष व अन्य। ● अमृत विचार

- एक सप्ताह में पुल का निर्माण कार्य शुरू न कराने पर कांग्रेसियों ने दी सत्याग्रह की चेतावनी

राजमिस्त्री बेलदार बढ़ई लोहार समेत निर्माण मजदूरों का पंजीकरण कर योजनाओं का लाभ देने की मांग की। कहा कि एक हफ्ते में पुल निर्माण शुरू नहीं हुआ तो कांग्रेसी सत्याग्रह करेंगे। उपाध्यक्ष धर्मेंद्र कश्यप ने कहा कि खाद्य सुरक्षा कानून कांग्रेस सरकार ने बनाया उसको भी भाजपा सरकार ठीक तरीके से लागू नहीं कर पा रही है। हर गांव में सैकड़ों लोगों के राशन कार्ड नहीं बने हैं। जिनके राशन कार्ड बने हैं उनकी पूरी यूनिट दर्ज नहीं हैं। जिला महासचिव सत्यम यादव ने कहा कि कांग्रेस दातागंज में जनता की आवाज उठाएगी। कार्यक्रम में सुधीर यादव, विजय बहादुर यादव, विजयवीर, ओमवीर दद्दा, आशीष यादव, जिला उपाध्यक्ष धर्मेंद्र कश्यप, दातागंज विधानसभा प्रभारी कुंवरपाल सिंह, सहित अनेक कार्यकर्ता मौजूद रहे।

दुष्कर्म के दोषी को 20 साल कारावास, 45 हजार जुर्माना

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- पुलिस ने छेड़छाड़ में दर्ज की थी रिपोर्ट, कोर्ट ने लिया था संज्ञान

अमृत विचार : नाबालिग लड़की से दुष्कर्म करने के आरोपी को विशेष न्यायाधीश पॉक्सो एक्ट के न्यायाधीश दिनेश तिवारी ने दोषी पाते हुए 20 साल के कठोर कारावास समेत 40 हजार रुपये का जुर्माने की सजा सुनाई है। जुर्माने की पूरी धनराशि पीड़िता को देने का आदेश दिया है। इस मामले में कोतवाली बिसौली पुलिस ने छेड़छाड़ की रिपोर्ट दर्ज की थी, लेकिन कोर्ट ने संज्ञान लेते हुए दुष्कर्म में मामला दर्ज किया था।

अभियोजन पक्ष के अनुसार 2 जुलाई 2019 को एक व्यक्ति ने बिसौली पुलिस को तहरीर देकर बताया था कि उसकी 16 साल की बेटी शाम साढ़े 6 बजे खेत पर घास काटने गई थी। यहां घात लगाए बैठे रंजीत ने बदनीयत से उसे दबोच लिया और दुष्कर्म करने का प्रयास किया। लड़की ने शोर मचाया तो लोग एकत्र हो गए। आरोपी रंजीत मौके से भाग गया। सूचना मिलने पर वह बेटी को लेकर जा रहे थे। रंजीत के छोटे भाई वालेश, हरवंश और अवनीश ने मारपीट की। अपने बयान में पीड़िता ने बताया कि वह घास काट रही थी, तो रंजीत और सोनू आ गए थे। रंजीत ने उसके साथ गलत काम किया और सोनू खड़ा होकर देखता रहा था। न्यायालय में गांव धर्मपुर बिहारीपुर निवासी रंजीत पर नाबालिग लड़की से दुष्कर्म करने के आरोप का मुकदमा चलाया गया। न्यायाधीश ने पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्य का अवलोकन किया। विशेष लोक अभियोजक अमोल जौहरी व बचाव पक्ष के अधिवक्ता की दलीलों को सुनने के बाद आरोपी रंजीत को दोषी पाते हुए सजा सुनाई है।

जरूरतमंदों को बांटे कंबल

जरूरतमंदों को कंबल बांटते एसडीएम प्रेमपाल सिंह।

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार : गल्ला मंडी में मंगलवार को ठंड से बचाव के लिए जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए गए। कंबल पाकर जरूरतमंदों के चेहरे खुशी से खिल उठे।

कंबल वितरण कार्यक्रम में प्रशासनिक, राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र से जुड़े लोगों ने सहभागिता निभाई। एसडीएम प्रेमपाल सिंह, विधायक हरीश शाक्य के भाई एवं प्रतिनिधि नवनीत शाक्य, कोतवाल मनोज कुमार सिंह, व्यापार संघ के जिला अध्यक्ष सुधीर सोमानी, भाजपा नगराध्यक्ष आदित्य महेश्वरी, पालिकाध्यक्ष के पति ओमप्रकाश सागर तथा समाजसेवी मनोज जैन ने जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए। व्यापारी मनोज जैन ने बताया कि कड़ाके की ठंड को देखते हुए व्यापारियों की ओर से 500 जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किए गए हैं। इस मौके पर गौरव वार्ष्णेय, संजीव वार्ष्णेय, लोकेश वार्ष्णेय, दीपक चौहान, अर्पित शर्मा, राहुल माहेश्वरी आदि मौजूद रहे।

शेखूपुर चीनी मिल ने किया चार करोड़ रुपये का गन्ना भुगतान

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- दो हजार किसानों के खातों में पहुंचे रुपये, चीनी मिल ने 16 करोड़ रुपये का खरीदा गन्ना

अमृत विचार : शेखूपुर सहकारी चीनी मिल ने मंगलवार को दो हजार किसानों के खातों में चार करोड़ का भुगतान किया है। मिल प्रबंधन ने अब तक 4 दिसंबर से 12 दिसम्बर तक का भुगतान कर दिया है। मिल ने अब तक करीब 16 करोड़ का गन्ना खरीदा है।

सहकारी चीनी मिल शेखूपुर ने अपने क्षेत्र के गन्ना किसानों को तीन बार भुगतान किया है। चीनी मिल ने मंगलवार को करीब दो हजार गन्ना किसानों को चार करोड़ का भुगतान किया है। जिससे किसानों को बड़ी राहत मिली है। मिल ने अब तक करीब साढ़े चार लाख क्विंटल गन्ने की खरीद की है। जो करीब 16 करोड़ से अधिक धनराशि की है। मिल प्रबंधन ने पिछले दिनों तीन करोड़ का भुगतान किया था। अब तक मिल ने आठ करोड़ 20 लाख का भुगतान किया है। मिल प्रशासन ने बताया कि शासन के निर्देश हैं कि गन्ना खरीदने के 14 दिन के अंदर ही किसानों को भुगतान किया जाना चाहिए। इसलिए शासन के निर्देशों का पालन करते हुए लगातार किसानों का भुगतान किया जा रहा है। चीनी मिल ने अब तक करीब पचास प्रतिशत भुगतान कर दिया है। सहकारी चीनी मिल शेखूपुर ने गन्ना पेराई सत्र शुरू करने के बाद से अब तक करीब 38 हजार क्विंटल चीनी तैयार की है। क्षेत्र का 40 प्रतिशत गन्ना खरीदा जा चुका है।गन्ना किसानों के पास अभी 60 प्रतिशत गन्ना खेतों में खड़ा है जो अगले दो महीने तक किसान चीनी मिल पर लाएंगे। किसानों की आमद बढ़ने से चीनी मिल परिसर में गन्ना लदे वाहनों की कतार लगी है।जिसकी दिन रात तौल की जा रही है।

> इस बार सूखा गन्ना नहीं आ रहा है। मिल चालू होने के बाद कुछ किसान सूखा गन्ना लाए थे, जो वापस कर दिया गया। लेकिन अब गन्ना ठीक आ रहा है जिससे चीनी परता भी 10 प्रतिशत का निकल रहा है। चीनी मिल के सुपरवाइजर गांवों में गन्ना किसानों से संपर्क कर रहे हैं। जल्दी गन्ना लाने की बात कही जा रही है जिससे मिल को नो केन से बचाया जा सके।
> – मणि अरोड़ा, महा प्रबंधक चीनी मिल

शिक्षक के बंद मकान का ताला तोड़कर चोरी

संवाददाता, इस्लामनगर

अमृत विचार : इस्लामनगर के मोहल्ला लालबाग निवासी मुजाहिद पुत्र सिराजुद्दीन अध्यापक तीन दिन पहले रिश्तेदारी में गए हुए थे। इसी दौरान बंद पड़े मकान को चोरों ने खंगाल डाला। सूचना मिलने पर थाना इस्लामनगर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल शुरू की। पुलिस ने मकान के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज चेक की। इसमें तीन से चार संदिग्ध युवक एक-एक करके मकान के अंदर घुसते हुए दिखाई दे रहे हैं। हालांकि घटना के समय कोहरा अधिक होने के कारण चोरों की पहचान स्पष्ट नहीं हो पा रही है। फिलहाल अध्यापक के बाहर होने के कारण यह साफ नहीं हो सका है कि चोर घर से क्या-क्या सामान चोरी कर ले गए हैं। पुलिस का कहना है कि अध्यापक के लौटने के बाद ही चोरी गए सामान की पूरी जानकारी मिल सकेगी। पीड़ित की तरफ से अभी कोई तहरीर नहीं दी गई है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज के आधार पर आरोपियों की तलाश में जुटी है।

विधायक ने किया मॉडल राशन की दुकान का शिलान्यास और सड़क का लोकार्पण

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

गांव में मॉडल राशन दुकान का शिलान्यास करते सदर विधायक महेश चंद्र गुप्ता।

अमृत विचार : सदर विधायक व पूर्व राज्यमंत्री महेश चंद्र गुप्ता ने मंगलवार को सदर विधानसभा क्षेत्र के गांव सिताब नगर में मॉडल राशन की दुकान का शिलान्यास किया। साथ ही शहर के मोहल्ला नेकपुर में विधायक निधि से निर्मित 15 लाख की सीसी मार्ग का लोकार्पण भी किया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि मॉडल राशन की दुकान का शिलान्यास हुआ है। यहां पर सरकार की तरफ से एक दुकान बनाई जाएगी। जहां पर सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी। सभी चीजें सरकारी कीमत पर मिलेगी। राशन के साथ रोज उपयोग में आने वाली घरेलू चीज भी एक छत के नीचे मिलेंगी। जिससे ग्रामीणों को काफी फायदा होगा। सरकार की मंशा है कि राशन की सभी सुविधाएं उच्च गुणवत्तापूर्ण जनता को उपलब्ध हो। वर्तमान में डबल इंजन सरकार गरीब लोगों को निशुल्क में राशन उपलब्ध करा रही है। सदर विधानसभा में शत प्रतिशत राशन वितरण हो रहा है। शासन की मंशा है कि गरीबों को सभी मूलभूत सुविधाएं मिलनी चाहिए। नेकपुर में सीसी मार्ग के लोकार्पण के दौरान कहा कि हस मार्ग की बहुत जरूरत थी। शहर में लगातार सड़कों का निर्माण कराया जा रहा है। विधायक निधि में डूडा के माध्यम से उनका प्रयास है कि खराब सड़कें जल्द सही कराई जाएं। गांव सिताब नगर में मंडल अध्यक्ष रामचरण पाल, आर्येंद्र पटेल, महेश पाल, अंकित शाक्य, हरवंश पाल, गोपाल शर्मा, अरुण प्रकाश, मनोज चंदेल, केएल गुप्ता, डीवी सिंह, रामनरेश गौतम, प्रेमलता सिंह, अजय मथुरिया, नितेश वार्ष्णेय, पंकज शर्मा आदि उपस्थित रहे।

अलाव के नाम पर डाली जा रहीं गीली लकड़ियां

संवाददाता, उझानी

अमृत विचार: नगर पालिका द्वारा ठंड से बचाव के लिए बांटी जा रही अलाव की लकड़ी पर गंभीर सवाल उठ रहे हैं। आरोप है कि यह लकड़ी गीली और अधपकी है, जिससे आग जलाना मुश्किल हो रहा है और लोग ठंड से ठिठुरने को मजबूर हैं।

भीषण ठंड में नगर पालिका द्वारा कस्बे के विभिन्न स्थानों पर अलाव की व्यवस्था की है। लेकिन अलाव में गीली लकड़ी भेजी जा रही है। जिसका कस्बे के लोगों ने विरोध किया है। आजाद समाज सेवा के प्रदेश अध्यक्ष सिपट्टर सिंह सोलंकी ने आरोप लगाते हुए कहा कि कस्बे में अलाव के लिए पहुंचाई जा रही लकड़ी की गुणवत्ता इतनी खराब है कि इससे ठंड से बचाव तो दूर, आग जलाना भी संभव नहीं हो पा रहा है।

अलाव जलाते नगर पालिका के कर्मचारी।

अलाव के भेजी जा रही लकड़ी जलने के बजाय केवल धुआं देती है। आरोप है कि लकड़ी केवल कुछ चुनिंदा स्थानों पर ही डाली जा रही है। नगर पालिका के कर्मचारी आग जलाने के लिए तेल का इस्तेमाल करते हैं, तस्वीरें खींचते हैं और कागजी खानापूर्ति कर देते हैं। समाजसेवी ने नगर पालिका के साथ ही प्रशासनिक अधिकारियों से अलाव के लिए सूखी लकड़ी डलवाने की मांग की है।

क्लीनिक संचालक की दुर्घटना में मौत

संभल, अमृत विचार: जनपद संभल के रजपुरा थाना क्षेत्र में पैदल घर जा रहे क्लीनिक संचालक को अज्ञात वाहन ने कुचल दिया। इलाज के दौरान क्लीनिक संचालक की मौत हो गई। मृतक मूलरूप से कन्नौज का रहने वाला था।

तहसील गुन्नौर के थाना रजपुरा क्षेत्र अंतर्गत गंवा-बबराला मार्ग पर गांव देवपुरा के पास हादसा हुआ। क्लीनिक संचालक पुनीत कुमार पैदल घर जा रहे थे, तभी तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में वह गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास मौजूद लोगों की मदद से उन्हें बुलंदशहर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां सोमवार देर रात उनकी मौत हो गई। पुनीत कुमार (40) मूलरूप से गांव मुसाईया, जनपद कन्नौज के रहने वाले थे वह पिछले करीब 18 वर्षों से कस्बा गंवा में अपने परिवार के साथ रहकर क्लीनिक चला रहे थे। थाना रजपुरा पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया। मंगलवार दोपहर पोस्टमार्टम के बाद परिजन शव को उनके पैतृक गांव ले गए।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पहले मेरा नाम दिलीप कुमार था जिसे बदलकर अब मैंने दिलीप कुमार बेलानी रख लिया है। भविष्य में मुझे दिलीप कुमार बेलानी के नाम से ही जाना व पहचाना जाये। **दिलीप कुमार बेलानी पुत्र स्व. टहल राम निवासी 169 फर्राशी टोला, आलमगिरीगंज जिला बरेली।**

सूचना

मैंने अपना नाम MOHAMMAD PERVEZ से बदल कर MOHD PARVEZ ANSARI रख लिया है। भविष्य में मुझे MOHD PARVEZ ANSARI (मो. परवेज अंसारी) पुत्र श्री बशीर अहमद अंसारी (BASHER AHMAD ANSARI) मोहल्ला दयाल पुरा तहसील नवाबगंज जिला बरेली के नाम से ही जाना व पहचाना जाये।

सूचना

हमने अपने पुत्र नितिन कुमार व पुत्रवधू रानी से उनके दुर्व्यवहार के कारण सम्बन्ध विच्छेद कर अपनी समस्त चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में वह अपने लेन-देन, कृत्यों आदि के स्वयं जिम्मेदार होंगे। हमारा व हमारे परिवार का कोई वास्ता नहीं होगा। **विनोद कुमार श्रीवास्तव पुत्र जागन लाल, उषा देवी पत्नी विनोद कुमार श्रीवास्तव निवासीगण- 07, ब्रजधाम कॉलोनी, रामपुर रोड किला, बरेली।**

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

सूचना

सूचित है, कि मेरे आधारकार्ड में मेरा नाम रितिक यादव दर्ज है, जबकि शैक्षिक प्रमाणपत्रों में मेरा नाम सही व वास्तविक नाम आदित्य यादव है, मैं अपने आधारकार्ड में आदित्य यादव करवाना चाहता हूँ, रितिक यादव व आदित्य यादव एक ही व्यक्ति के नाम है। **आदित्य यादव पुत्र देशपाल सिंह नि.-ग्राम सहोड़ा खुर्द, तह-फरीदपुर, जिला बरेली।**

सूचना

सूचित किया जाता है कि मैंने अपने पुत्र संजय कुमार व उसकी पत्नी सुलेखा को उनके गलत आचरण एवं दुर्व्यवहार के कारण उन्हें अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में उनके द्वारा किये गये किसी भी कृत्य का मुझसे व मेरे परिवार के किसी भी सदस्य से कोई सरोकार नहीं होगा। **राजबहादुर पुत्र श्री परमेश्वर निवासी दाऊदपुर जहानपुर थाना फूलबेहड़ जिला खीरी**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने कक्षा 10 की परीक्षा वर्ष 2018 जिसका रोल नं. 1081822 व 12 की परीक्षा वर्ष 2020 में उत्तीर्ण किया है जिसका रोल नं. 0809629 है। मेरी हाईस्कूल व इण्टर की मार्कशीट वास्तव में कहीं खो गयी है। काफी तलाशने के बाद अभी तक नहीं मिली। **सर्वजीत सिंह पुत्र बलदेव सिंह नि.0 ग्राम हंसनगर पो. सम्पूर्णा नगर तह. पलिया कलां, लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)**

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पहले मेरा नाम अनीता देवी था जिसे बदलकर अब मैंने अनीता रख लिया है। भविष्य में मुझे अनीता के नाम से ही जाना व पहचाना जाये। **अनीता पत्नी दिलीप कुमार बेलानी नि. 169 आलमगिरीगंज थाना प्रेम नगर, जिला बरेली।**

न्यूज ब्रीफ

गोल्ड मेडल जीतकर नाम रोशन किया

मोहम्मदी, अमृत विचार : दून पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने हिंदी विकास संस्थान दिल्ली द्वारा आयोजित सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए विद्यालय का नाम रोशन किया है। प्रतियोगिता में विद्यार्थियों ने गोल्ड, सिल्वर एवं ब्रॉन्ज मेडल जीतकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। विद्यालय की सान्वी वर्मा, अर्पणा गुप्ता, मानवी तिवारी, आर्यन पाल, आरुष राज एवं हरलीन कौर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल प्राप्त कर परचम लहराया। वहीं इकजोत कंबोज, अभिनव, मनदीप कौर एवं अन्वी ने रजत पदक, जबकि आयुष, ओम जी, प्रियांशी, गुरांश एवं श्रेष्ठ शुक्ला ने कांस्य पदक जीतकर विद्यालय का मान बढ़ाया। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक डॉ. गुरु मेजर सिंह ने प्रतिभागी सभी विद्यार्थियों को बधाई दी। प्रधानाचार्य कविता शर्मा एवं व्यवस्थापक विमल अवस्थी ने भी बच्चों की सराहना की।

वसीम को छह माह के लिए किया जिला बदर

बरेली, अमृत विचार : डीएम अविनाश सिंह ने पिछले दिनों तीन बदमाशों को जिला बदर करने के निर्देश दिए थे। इनमें से एक बदमाश वसीम को थाना बारादरी पुलिस ने मंगलवार को छह माह के लिए जिला बदर करते हुए पीलीभीत की सीमा में ले जाकर छोड़ा। बारादरी थाना प्रभारी धनंजय पांडे ने बताया कि 26 दिसंबर को डीएम ने बारादरी क्षेत्र के ईंट पजाया चौराहा निवासी वसीम उर्फ गंठा को जिला बदर करने के आदेश दिए थे। मंगलवार को आदेश की प्रति रिसीव कराकर वसीम को पीलीभीत सीमा पर ले जाकर 6 माह के लिए जिला बदर किया गया। वसीम को चेतावनी दी गई है।

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

निम्नलिखित कार्य के लिए ई-निविदा भारत के राष्ट्रपति की ओर से उप मुख्य विद्युत इंजीनियर, यॉंत्रिक कारखाना, पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर द्वारा आमंत्रित की जाती है। **निविदा निविदा सं. एवं कार्य का विवरण: EL-MWS-GKP-2025-26-20** रिप्लेसमेंट ऑफ आइसोलेशन स्विच फॉर स्टार्टिंग बैट्री इन 2200 पावर कार्स @ रु.136476.44/– (डब्ल्यू बी आइटम नं0 818/2025–26), एलॉटेड क्वालिटी 130 नं0 पावर कार्स। **अनुमानित लागत: ₹1,12,01,733.60/- बयाने की राशि: ₹2,06,000/- निविदा प्रपत्र का मूल्य:** शून्य **कार्य पूर्ण करने की समय/अवधि स्वीकार पत्र जारी होने के तिथि से : 24 महीना।** • ऑन लाइन ई-निविदा जमा करने की तिथि 27.01.2026 समय 11:30 बजे तक। • पूर्ण विवरण एवं निविदा की प्रस्तुत करने के लिए भारतीय रेल के वेबसाइट www.ireps.gov.in पर देखें। • यदि निविदा सूचना में हिन्दी एवं अंग्रेजी में अन्तर होता है तो निविदा सूचना में अंग्रेजी संस्करण ही मान्य होगा।

उप मुख्य विद्युत इंजी./(कार) गोरखपुर

मुजाधि/विद्युत–237

ट्रेनों में बीड़ी/सिगरेट न पियें

मस्जिद में नई परंपरा को लेकर देवबंदी, बरेलवी पक्ष में मारपीट

धारदार हथियार और लाठी-डंडे चले, तमंचे लहराए, छह आरोपी गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता अमरोहा

पुलिस की गिरफ्त में मारपीट के आरोपी। ●अमृत विचार

अमृत विचार: मस्जिद में नई परंपरा को लेकर देवबंदी और बरेलवी पक्ष आमने सामने आ गए। जमकर मारपीट हुई और धारदार हथियार, लाठी-डंडे से हमला कर दिया। इतना ही नहीं तमंचा भी लहराया गया। कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने बमुश्किल हालात संभाले। गांव में तनाव की स्थिति को देखते हुए पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। पुलिस ने 6 आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

थाना अमरोहा देहात क्षेत्र के गांव तेलीपुरा माफी में मुस्लिम समुदाय के देवबंदी और बरेलवी मसलक के लोग रहते हैं। दोनों पक्षों के बीच वर्षों से मस्जिद को लेकर विवाद चल रहा है। करीब 15 साल पहले दोनों पक्षों में मस्जिद में कोई भी नई परंपरा शुरू नहीं करने की सहमति बनी थी। सोमवार को फज्र की नमाज के लिए देवबंदी पक्ष के जुबैर अहमद मस्जिद गए थे। नमाज के बाद बरेलवी से संबंध रखने वाले तसद्दुक उर्फ इमरान, सिकंदर, अल्ताफ, इलियास, शाहिद, फिरोज, अजनबी, नूर, अलाउद्दीन ने मस्जिद में नई परंपरा शुरू कर दी। जुबैर अहमद ने विरोध किया तो आरोपियों ने मारपीट शुरू कर दी। मौके पर भगदड़ मच गई।

शोर सुनकर जुबैर अहमद के परिवार के लोग व अन्य देवबंदी पक्ष के लोग आ गए। आरोपियों ने उनके साथ भी धारदार हथियार, लाठी- डंडों से मारपीट की और पथराव किया। जुबैर अहमद और उनके परिवार के सदस्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस के आते ही आरोपी भाग निकले। तनाव की स्थिति को देखते हुए गांव में पुलिस बल तैनात कर दिया गया है। एसपी अमित कुमार आनंद ने बताया कि गांव में शांति व्यवस्था कायम है। मामले में चार सगे भाइयों सहित 10 आरोपी इमरान, सिकंदर, अल्ताफ, इलियास, साजिद, शाहिद, फिरोज, अजनबी, नूर, अलाउद्दीन के खिलाफ संबंधित धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। जिसमें 6 आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया है। अन्य आरोपियों को भी जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।

प्रदेश में गोरखपुर के बाद शाहजहांपुर का सबसे ठंडा रहा दिन

बरेली, अमृत विचार: जिले के लोग कड़ाके की ठंड से बेहाल हो रहे हैं। कभी दिन तो कभी रात का तापमान रोजाना प्रदेश में रिकॉर्ड बना रहा है। सोमवार को तो पूरे दिन सूरज के दर्शन ही नहीं हुए, इसकी वजह से सीजन का सबसे ठंडा दिन रिकॉर्ड किया गया। यही नहीं प्रदेश में तीसरे नंबर पर सबसे ठंडा दिन रहा। रात में भी लोगों को ठंड से राहत नहीं मिली। देर रात से शुरू हुआ घना कोहरा सुबह देर तक गिरा, जिससे दृश्यता 25 मीटर तक जा पहुंची और लोग घरों में ही दुबके रहे।

मौसम विभाग के मुताबिक जिले का अधिकतम तापमान सामान्य से 6.4 डिग्री सेल्सियस कम 12.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। इससे कम अधिकतम तापमान सिर्फ गोरखपुर का 11.6 और शाहजहांपुर और आजमगढ़ का 12-12 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। वहीं न्यूनतम तापमान सामान्य से 1.6 डिग्री सेल्सियस कम 6.4 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। मौसम विभाग के मुताबिक इससे पूर्व के बरसों में जनवरी के महीने में इससे कम भी अधिकतम तापमान रिकॉर्ड किया गया है।

मिलेट्स से बने खाद्य पदार्थों की लगाई प्रदर्शनी

प्रदर्शनी में भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की छात्राएं और अतिथि।

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश श्री अन्न (मिलेट्स) पुनरुद्धार कार्यक्रम के अंतर्गत एक दिवसीय जनपद स्तरीय मिलेट्स मेला सह प्रदर्शनी, मिलेट्स रेसिपी विकास एवं उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) में संपन्न हुआ। कार्यक्रम का उद्देश्य मिलेट्स के पोषण मूल्य, स्वास्थ्य लाभ व दैनिक जीवन में इनके उपयोग को बढ़ावा देना रहा।

कार्यक्रम में मिलेट्स से बने विभिन्न खाद्य पदार्थों की प्रदर्शनी लगाई गई, जहां विशेषज्ञों ने श्री अन्न के बारे में बताया कि मिलेट्स पोषक तत्वों से भरपूर होने के साथ मधुमेह, हृदय रोग एवं मोटापे जैसी बीमारियों से बचाव में सहायक हैं। आमजन को संतुलित आहार अपनाने और मिलेट्स को नियमित भोजन में शामिल करने के लिए प्रेरित किया गया। इस मौके पर भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय की छात्राओं ने भी सक्रिय सहभागिता निभाई। महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर गीता शुक्ला के निर्देशन एवं असिस्टेंट प्रोफेसर (अर्थशास्त्र) वीना चौरसिया के मार्गदर्शन में छह छात्राओं शालू विश्वकर्मा, अनामिका, विधि, शुभी, श्वेता दीक्षित एवं शुभ्रा श्रीवास्तव ने मिलेट्स से तैयार रेसिपी प्रस्तुत कर लोगों को इनके स्वास्थ्य लाभों की जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन पर सभी प्रतिभागियों को उनके सराहनीय योगदान के लिए मेडल एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

माध्यमिक में छात्र पढ़ेंगे व्यावसायिक पाठ्यक्रम

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

● **बिजली फिटिंग, ब्यूटीशियन, प्लंबरिंग, डोमेस्टिक डाटा एंट्री व अन्य ट्रेड का मिलेगा प्रशिक्षण**

अमृत विचार: अब जिले के माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों को केवल किताबी शिक्षा ही नहीं, बल्कि रोजगारपरक व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। नए शिक्षा सत्र से माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को पढ़ाई का अनिवार्य हिस्सा बनाया जा रहा है। इसके तहत छात्र-छात्राओं को बिजली फिटिंग, ब्यूटीशियन, प्लंबरिंग, रिटेल, डोमेस्टिक डाटा एंट्री सहित अन्य व्यावसायिक ट्रेड का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर बनाना और माध्यमिक स्तर से ही उन्हें रोजगार के लिए तैयार करना है।

औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान (आईटीआई) की तर्ज पर माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार किसी एक ट्रेड में प्रशिक्षण प्राप्त कर सकेंगे। इससे माध्यमिक की पढ़ाई पूरी करने के बाद वे स्वयं का रोजगार शुरू करने के साथ-साथ निजी क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकेंगे। जिला विद्यालय निरीक्षक विनोद कुमार मिश्र ने बताया कि व्यावसायिक शिक्षा को सुदृढ़ करने के लिए शासन स्तर से प्राप्त ट्रेड ढाई लाख रुपये की धनराशि निर्गत की गई है। जिले में इसके लिए 31 राजकीय और 23 सहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा की ट्रेड स्थापित की जानी है। इस योजना के अंतर्गत जिले को कुल दो करोड़ 20 लाख रुपये की धनराशि शासन से प्राप्त हो चुकी है। उन्होंने बताया कि नए शिक्षा सत्र की शुरुआत के साथ ही एक अप्रैल से चयनित विद्यालयों में ट्रेड की स्थापना की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी, ताकि नए सत्र में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का लाभ मिल सके। डीआईओएस ने यह भी बताया कि जिले के आठ माध्यमिक विद्यालयों में पहले से ही व्यावसायिक शिक्षा की ट्रेड स्थापित कर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इनमें जिला मुख्यालय स्थित राजकीय इंटर कॉलेज, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज, राजकीय कन्या इंटर कॉलेज खीरी टाउन के अलावा निघासन, मोहम्मदी, कुकरा, फूलबेहड़ और धौरहरा के राजकीय विद्यालय शामिल हैं। शिक्षा विभाग के अधिकारियों का मानना है कि इस योजना से विद्यार्थियों की व्यावहारिक दक्षता बढ़ेगी और युवाओं में बढ़ती बेरोजगारी की समस्या को कम करने में मदद मिलेगी। व्यावसायिक शिक्षा से छात्र कम उम्र में ही हुनरमंद बनकर आत्मनिर्भर हो सकेंगे।

खनन पट्टा आवंटन के विरोध में धरना जारी

● **जौरहा नाले पर पुल के विरोध में बैठे किसान और सिख संगठन**

संवाददाता, सिंगाही

प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते धरने पर बैठे किसान। ●अमृत विचार

अमृत विचार: सिंगाही थाना क्षेत्र के मांझा गांव के पास बह रहे जौरहा नाले पर खनन ठेकेदार को पट्टा आवंटित करने और नाले पर बनाए गए अवैध अस्थाई पुल को हटाए जाने की मांग को लेकर किसानों और ग्रामीणों का चल रहा धरना पांचवे दिन भी जारी रहा है। दिन-रात चल रहे धरने पर अब लंगर भी शुरू कर दिया है। प्रशासन के संज्ञान न लेने पर धरने को और तेज किए जाने की रणनीति बनाई गई।

किसान और ग्रामीण भीषण ठंड में जौराहा नाले के किनारे टैंट लगाकर धरने पर बैठे हैं। पांच दिन बाद भी कोई प्रशासनिक अफसर उनकी सुधि लेने नहीं पहुंचा है। इससे किसानों और ग्रामीणों में रोष है। लगातार दिन-रात जारी इस धरना स्थल पर लंगर की भी व्यवस्था चालू कर दी गई है। किसान अपनी मांग पर अड़े हैं। उनका कहना है कि जब तक खनन पट्टा निरस्त नहीं हो जाता और अवैध अस्थाई पुल को हटाया नहीं जाता। तब तक उनका धरना लगातार जारी रहेगा। पांचवे दिन धरने पर बैठे लोगों ने प्रशासन के संज्ञान न लेने पर रोष जताया और धरने को और अधिक तेज करने की रणनीति बनाई। धरने पर बैठे किसान परमजीत सिंह पम्मी ने बताया कि जल्द किसानों की मांगे नहीं मानी गई तो किसान चक्का जाम करेंगे। इस दौरान भाकियू टिकैत के विधानसभा अध्यक्ष प्रगट सिंह, सुच्चा सिंह, पाल सिंह, कुलविंदर सिंह, अमन सिंह, काला सिंह, जसवीर सिंह बाजवा, वीरेंद्र सिंह, कश्मीर सिंह, सोनी औलख, टहल सिंह, केवल सिंह, रणजीत सिंह, मनजीत सिंह, कर्मजीत सिंह, गुरुमुख सिंह, हरभजन सिंह, संतोष कुमार, सुरेंद्र उर्फ भंडारी यादव सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

कार्यालय ग्रा.पं. गुलड़िया महिपत वि.खं. भदपुरा तह. नवाबगंज (बरेली)

निविदा आमंत्रण सूचना

समस्त अधिकृत फर्मों व विक्रेताओं को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत गुलड़िया महिपत में मनरेगा योजना के अन्तर्गत निम्न निर्माण कार्य हेतु सामग्री आपूर्ति हेतु पंजीकृत फर्मो से निविदा आमंत्रित की जाती है। सामग्री विवरण निम्नवत् है-ईट, बजरफुट, सरिया, सीमेंट, रेता व अन्य सामग्री जो प्राक्कलन में लिखित है। निविदा पंचायत कार्यालय पर दिनांक 07.01.2026 से 10.01.2026 अपरान्ह 2 बजे तक जमा की जाती है जो उसी दिन सायं 4 बजे खोली जायेगी। कार्य हेतु सामग्री आपूर्ति आदि की सूचना किसी कार्यालय दिवस में देखी जा सकती है।

क्र.सं.	कार्य का नाम	अनु. लागत
1.	तोताराम के घर से हरप्रसाद के घर तक सी.सी. रोड निर्माण कार्य	2,95,000/-

डी.पी. यादव-ग्राम प्रधान **बृजेश यादव-सचिव**

दुकान में घुसे चोर आहट होने पर भागे

खुटार, अमृत विचार: गांव सलनहा निवासी अभिषेक कुमार ने बताया कि खुटार रोड के तिकुनियां-पूरनपुर रोड पर सोलर पैनल की दुकान है। दुकान के ऊपर उनका गोदाम है। जिसमें सोलर पैनल रखे हुए हैं। सोमवार रात दुकान बंद करके अपने घर चले गए थे। रात में चोरों ने गोदाम का ताला तोड़ दिया और अंदर चले गए। लेकिन कुछ ले नहीं जा सके।

जमीन कब्जा मुक्त कराने को हुई पैमाइश

● **अवैध रूप से बनाई गई सड़क तुड़वाई गई**

संवाददाता, खुटार

अमृत विचार: गांव रामपुर कला में पुवायां रोड पर कुछ लोगों के नाम पर हरियाली पट्टा कुछ साल पहले किए गए थे, जो बाद में निरस्त कर दिए गए। इसके बाद उक्त भूमि को ग्राम समाज में दर्ज कर दिया गया था। इसके ठीक सामने ही गाटा संख्या 132 में मरघट और 137 में सरकारी चक मार्ग दर्ज है। इन तीनों सरकारी भूमि पर कुछ साल से भू माफिया कब्जा कर प्लाटिंग की जा रही थी, जिसकी शिकायत गांव में रहने वाले अवनीश कुमार शुक्ला और विजय कुमार ने जिलाधिकारी से की गई थी। इसके बाद जिला प्रशासन ने मामले की जांच कराई तो शिकायत सही पाई गई। जिला अधिकारी के आदेश पर मंगलवार को नायब तहसीलदार युसुफ कुमार, कानूनगो अरुण मिश्रा, चंद्रिका प्रसाद, लेखपाल रोहित मिश्रा पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और सरकारी चकमार्ग, ग्राम समाज के साथ ही मरघट की भूमि की पैमाइश कराई। इसके साथ ही उस पर किए जा रहे अवैध कब्जे को तत्काल प्रभाव से हटवाते हुए ग्राम समाज की भूमि पर माफिया की ओर से बनाई गई सड़क को तत्काल हटवा दिया। पुलिस प्रशासन की इस कार्रवाई से अवैध कब्जा करने वालों में हड़कंप मचा हुआ है।

पैमाइश करती राजस्व विभाग की टीम। ●अमृत विचार

यूपीआई पर 40 हजार ट्रांसफर करा युवक फरार

● **सीसीटीवी कैमरे में कैद हुआ आरोपी, तलाश में जुटी पुलिस**

संवाददाता, भानपुर

कैमरे में कैद आरोपी। ●अमृत विचार

अमृत विचार: थाना भीरा की पुलिस चौकी बिजुआ के कस्बा बिजुआ में यूपीआई के माध्यम से धोखाधड़ी का एक मामला सामने आया है। बुधवार शाम करीब 5:30 बजे सीएचसी के सामने स्थित मिनी बैंक ऑफ बड़ौदा केंद्र पर एक युवक ने 40 हजार रुपये की ठगी की घटना को अंजाम दिया और मौके से भाग निकला।

मिनी बैंक ऑफ बड़ौदा के संचालक गांव भानपुर निवासी सुमित ने बताया कि उनके पास एक युवक आया और उसने एक कंपनी की यूपी आईडी पर झांसा देकर 40 हजार रुपये ट्रांसफर करा लिए। कुछ देर बाद वह चकमा देकर मौके से भाग निकला। घटना के बाद संचालक सुमित और आसपास मौजूद लोगों ने उसका पीछा किया, लेकिन वह भागने में सफल रहा। पूरी घटना मिनी बैंक में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। युवक की तस्वीरें सोशल मीडिया पर वायरल हो रही हैं। मिनी बैंक संचालक सुमित ने बिजुआ चौकी पर तहरीर देकर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने फुटेज कब्जे में लेकर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता,

नलकूप खण्ड द्वितीय बरेली

ई-प्रोक्योरमेंट अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या–06/अधि0अभि0/2025–26

(बजट की प्रत्याशा में)

महामहिम राज्यपाल महोदय उत्तर प्रदेश की ओर से निम्नलिखित कार्य हेतु आनलाईन निविदा (http://etender.up.nic.in) ई-टेंण्डरिंग के माध्यम से सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश में वर्गीकृत श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो से निविदा आंमत्रित की जाती है। सिंचाई विभाग उ0प्र0 में यांत्रिक ''ए'' श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदार फिक्स दरों पर दिनांक 28.01.2026 को अपरान्ह 16:00 बजे तक आनलाईन ई-निविदाएं निर्धारित बिड फार्म यथा (1) तकनीकी बिड एवं (2) फाईनेन्शियल बिड में आमंत्रित की जाती है जो दिनांक–29.01.2026 को अपरान्ह 13:00 बजे, व दिनांक–30.01.2026 को अपरान्ह 13:00 बजे जैसा की निम्नांकित है, खोली जायेगी। बिड जमा करने का विस्तृत विवरण ई-निविदा प्रपत्र में ई-प्रोक्योंरमेन्ट की वेबसाईट (http://etender.up.nic.in) पर उपलब्ध है। फर्म/ठेकेदार जो सिंचाई विभाग के क्लास 'ए' (यांत्रिक) में पंजीकृत है।

ई-निविदा हेतु प्रपत्र का मूल्य व धरोहर धनराशि ई-निविदा पोर्टल पर ऑनलाईन रूप से जमा करना अनिवार्य होगा। ई-निविदा पोर्टल पर ऑनलाईन रूप से जमा किये जाने वाली बिड सिक्यूरिटी एवं निविदा प्रपत्र मूल्य के आनलाईन भुगतान न किये जाने पर पोर्टल पर अग्रेतर कार्यवाही नहीं हो सकेगी। निविदा प्रपत्र में निर्धारित तकनीकी विशिष्टियों/शर्तो में कोई विचलन/परिवर्तन मान्य नहीं होगा। एक या समस्त निविदाओं को बिना कारण बताये निरस्त करने का पूर्ण अधिकार अधोहस्ताक्षरी को होगा। निविदा हेतु कार्य एवं अन्य विवरण निम्नानुसार है।

क्र0 सं0	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (लाख रु0 में)	धरोहर धनराशि (लाख रु0 मं)	कार्य पूर्ण करने की अवधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य स्टेशनरी चार्ज सहित (रु0 में)	पंजीकृत श्रेणी
1	3	4	5	6	7	8
1.	Providing and Fixing on foundation and testing on full load of Transformer 630KVA with cable connection for incoming/outgoing including 33KV Cable jointing kit connection with Cable jointing kit Complete in all respect. rate including all material with cost, labour and t&p required at site for proper Completion of work at Fatehganj East Pump Canal District Bareilly.	15.11 + जी0एस0टी0 अतिरिक्त	0.31	21 दिवस	300+ 18% जी0एस0टी0+ स्टेशनरी चार्ज 2000.00	''ए'' अथवा उच्च श्रेणी ''यॉंत्रिक''

Table 02

(क)	वेबसाइट पर निविदा प्रपत्र की उपलब्धता की तिथि एवं समय	दिनांक 08.01.2026 को पूर्वान्ह 11:00 बजे से दिनांक 28.01.2026 को अपरान्ह 16:00 बजे तक
(ख)	बिड प्रस्तुत/अपलोड करने की अवधि जिसके साथ निविदा प्रपत्र शुल्क, धरोहर धनराशि/इन्डस्ट्रीज रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र, धरोहर धनराशि में छूट हेतु एवं अन्य आवश्यक प्रपत्र पी0डी0एफ/एक्स.एल.एस फार्मेट में।	दिनांक 08.01.2026 को पूर्वान्ह 11:00 बजे से दिनांक 28.01.2026 को अपरान्ह 16:00 बजे तक
(ग)	प्री-बिड मीटिग की तिथि एवं समय	–
(घ)	निविदा प्रपत्र शुल्क, धरोहर धनराशि मूलरूप एवं अन्य वांछित अभिलेख सम्बन्धित कार्यालय में जमा करने की निर्धारित तिथि एवं समय।	दिनांक 28.01.2026 को पूर्वान्ह 11:00 बजे
(ड)	आनलाईन तकनीकी भाग खोले जाने की तिथि एवं समय।	दिनांक 29.01.2025 को पूर्वान्ह 13:00 बजे
(च)	आनलाईन वित्तीय भाग खोले जाने की तिथि एवं समय	दिनांक 30.01.2025 को पूर्वान्ह 13:00 बजे
(छ)	प्री बिड़ मीटिग एवं बिड खोले जाने का स्थान	कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, नलकूप खण्ड द्वितीय बरेली।

नोट–

1. निविदा सूचना विभाग की वेबसाइट (http://information.up.nic.in)एवं सिंचाई विभाग की वेबसाइट (http://idup.gov.in) पर उपलब्ध है। निविदा प्रपत्र ई-प्रोक्योरमेन्ट वेबसाइट (http://etender.up.nic.in) से डाउनलोड किये जा सकते है।
2. ई-निविदा में कोई भी संशोधन होने पर ई-टेण्डर वेबसाइट पर अपलोड करने के साथ-साथ नोटिस बोर्ड पर चस्पा कर दिया जायेग।
3. अवकाश होने की दशा में यह निविदा अगले कार्यालय दिवस में उसी समय खोली जायेगी।

UP – 243564 **दिनांक:** 05/01/2026
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in **पर उपलब्ध है।**

अधिशासी अभियन्ता
नलकूप खण्ड–द्वितीय बरेली।

बीडीए ने नक्शा पास न कराने पर ऑटो शोरूम किया सील

कार्यालय संवाददाता, सीबीगंज

● **बिना अनुमति 1520 वर्गमीटर में हॉल और शोरूम बनाया, परसाखेड़ा औद्योगिक क्षेत्र के रोड नंबर दो का मामला**

अमृत विचार : बरेली विकास प्राधिकरण (बीडीए) ने बिना नक्शा पास कराए किए गए अवैध निर्माण पर बड़ी कार्रवाई करते हुए सीबीगंज में ऑटो शोरूम को सील कर दिया। कार्रवाई के दौरान शोरूम में कार्यरत सभी कर्मचारियों को बाहर निकालकर गेटों पर सील लगा दी गई। अधिकारियों के मुताबिक 30 दिसंबर को शोरूम संचालक अल्पित अग्रवाल को नोटिस जारी कर संशोधित शमन मानचित्र प्रस्तुत करने के निर्देश दिए गए थे, इसका पालन नहीं करने पर कार्रवाई की गई है।

परसाखेड़ा औद्योगिक क्षेत्र के रोड नंबर दो पर अल्पित अग्रवाल का कार का शोरूम है। बीडीए के मुताबिक शोरूम के लगभग 1520 वर्गमीटर क्षेत्रफल में निर्मित भूतल एवं प्रथम तल पर बड़े-बड़े हॉल और शोरूम प्राधिकरण से नक्शा पास कराए बिना बनाए गए थे। जांच में यह निर्माण उत्तर प्रदेश नगर योजना एवं विकास अधिनियम, 1973 के अंतर्गत अनधिकृत पाया गया। इस पर प्रवर्तन की कार्रवाई करते हुए शोरूम को सील किया गया। इधर, बीडीए की इस कार्रवाई से शोरूम में काम कर रहे कर्मचारियों में खलबली मच गई।

बीडीए ने यह कार्रवाई विशेष कार्याधिकारी अजीत कुमार के नेतृत्व में की। मौके पर सहायक अभियंता धर्मवीर सिंह, अवर अभियंता संदीप कुमार, सीताराम, अजीत कुमार साहनी सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे। उधर, शोरूम के एमडी अर्पित अग्रवाल से इस मामले में पक्ष जानने का प्रयास किया गया, लेकिन उनसे संपर्क नहीं हो सका। बीडीए उपाध्यक्ष डॉ. ए. मनिकंडन ने साफ कहा कि अवैध निर्माणों की जांच लगातार चल रही है। इसमें किसी भी प्रकार की शिथिलता नहीं बरती जाएगी।

युवराज दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय में प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं शुरू

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार : युवराज दत्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय में लखनऊ विश्वविद्यालय से संबद्ध स्नातक एवं स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर की परीक्षाएं मंगलवार से शांतिपूर्ण एवं सुव्यवस्थित वातावरण में प्रारंभ हो गईं।

परीक्षाओं के पहले दिन तृतीय पाली में बीए संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रथम सेमेस्टर की परीक्षा सम्पन्न हुई। इस दौरान कुल 406 पंजीकृत परीक्षार्थियों में से 396 छात्र-छात्राओं ने परीक्षा में सहभागिता की, जबकि 10 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे।

परीक्षा को नकलविहीन संपन्न कराने के लिए महाविद्यालय प्रशासन ने प्रवेश से पूर्व परीक्षार्थियों की सघन तलाशी ली। परीक्षा केंद्र पर सुरक्षा एवं

कॉलेज में कक्षाओं में प्रवेश से पहले लाइनों में लगे परीक्षार्थी। ●अमृत विचार

● **सघन तलाशी के बाद परीक्षा कक्षों में दिया प्रवेश**

अनुशासन के कड़े इंतजाम किए गए हैं।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. हेमंत पाल ने बताया कि शासन एवं विश्वविद्यालय के निर्देशों के अनुरूप पारदर्शी, अनुशासित एवं नकल-विहीन परीक्षाओं के सफल संचालन के लिए, महाविद्यालय पूर्णतः प्रतिबद्ध है। परीक्षा की अनुशासन व्यवस्था एवं निगरानी हेतु चीफ प्रॉक्टर प्रो. सुभाष चन्द्रा के नेतृत्व में प्रो. ज्योति पंत, डॉ. अमित सिंह, धर्म नारायण एवं सौरभ वर्मा को सचल दल सदस्य के रूप में तैनात किया गया है, जो परीक्षा केंद्र पर लगातार निगरानी बनाए हुए हैं।

न्यूज ब्रीफ

अजय कुमार शुक्ला बने प्रमुख सचिव सहकारिता

अमृत विचार, लखनऊ : राज्य सरकार ने आईएएस अधिकारी अजय कुमार शुक्ला को एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार के सहकारिता विभाग का प्रमुख सचिव नियुक्त किया गया है। वर्ष 2001 बैच के आइएएस अधिकारी अजय कुमार शुक्ला को इससे पूर्व जल निगम (शहरी) के प्रबंध निदेशक का अतिरिक्त प्रभार भी दिया गया था। वह नगर विकास विभाग के सचिव और अमृत योजना के राज्य मिशन निदेशक भी रह चुके हैं। 1 जनवरी 2026 को ही उन्हें पदोन्नत कर प्रमुख सचिव बनाया गया है।

पेयजल परियोजनाओं को मिली स्वीकृति

अमृत विचार, लखनऊ : मुख्य सचिव एसपी गोयल की अध्यक्षता में अमृत 2.0 योजनान्तर्गत 16वीं राज्य स्तरीय उच्चाधिकार संचालन समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कुल 186172.22 लाख रुपये की अनुमानित लागत वाली 33 पेयजल परियोजनाओं को स्वीकृति दी गई। इनमें 42749.09 लाख रुपये अनुमानित लागत वाली 05 परियोजनाएं, 62329.37 लाख रुपये अनुमानित लागत वाली 11 परियोजनाएं और 81093.76 लाख रुपये अनुमानित लागत वाली 17 परियोजनाएं शामिल हैं। इन परियोजनाओं के माध्यम से 2,87,801 गृह संयोजन करने के लिए नए नलकूपों का निर्माण, रिबोर नलकूपों का कार्य, पूर्व निर्मित उच्च जलाशयों की मरम्मत, वाटर ट्रीटमेंट प्लांट, पंप हाउस तथा संबंधित कार्य कराए जाएंगे।

दो निजी अस्पतालों को कारण बताओ नोटिस जारी

अमृत विचार, लखनऊ : आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत प्रदेश में अनियमितता का मामला सामने आया है। जांच में पाया गया कि कुछ सूचीबद्ध निजी अस्पताल पात्र लाभार्थियों को योजना के अंतर्गत उपचार देने से इनकार कर रहे हैं। प्रारंभिक जांच और समीक्षा के बाद स्टेट हेल्थ एजेंसी, उत्तर प्रदेश ने गौतम बुद्ध नगर स्थित सुरभि हॉस्पिटल और गाजियाबाद स्थित जीवन ज्योति हॉस्पिटल को कारण बताओ नोटिस जारी किया है।

विकास के लिए 1098.02 लाख मंजूर

अमृत विचार, लखनऊ : राज सरकार ने प्रदेश के कृषि क्षेत्र को सुदृढ़ करने और किसानों के हित में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए हैं। राज्य सरकार द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए कृषि क्षेत्र की क्षमता, कौशल विकास और उत्पादन वृद्धि की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए कुल 383.00 लाख रुपये की वित्तीय स्वीकृति प्रदान की गई है। इस धनराशि का उपयोग मुख्य रूप से कृषि परियोजनाओं के अनुरक्षण और कंप्यूटर हार्डवेयर की खरीद के लिए किया जाएगा, जिससे विभाग की कार्यप्रणाली में आधुनिकता और कुशलता आएगी। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के अंतर्गत कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों में नवीन अवस्थापनाओं और परिसंपत्तियों के विकास को गति देने के लिए सरकार ने 1098.02 लाख रुपये (दस करोड़ अट्ठानवे लाख दो हजार मात्र) की राशि स्वीकृत की है। इस बजट के माध्यम से प्रदेश में कृषि विभाग की विभिन्न परियोजनाओं को धरातल पर उतारा जाएगा, जिससे ग्रामीण स्तर पर कृषि संबंधी आधारभूत ढांचे का विस्तार होगा। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार ने किसानों को अनावश्यक आर्थिक बोझ से बचाने के लिए एक कड़ा निर्णय लिया है। प्रदेश में यूरिया आपूर्ति करने वाली संस्थाओं द्वारा अनुदानित उर्वरकों के साथ गैर-अनुदानित उत्पादों (टैगिंग उत्पादों) की जबरन बिक्री पर रोक लगा दी गई है।

सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए कैपेसिटी बिल्डिंग अनिवार्य : मुख्यमंत्री

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- योगी ने की मिशन कर्मयोगी की प्रगति व कार्ययोजना की समीक्षा
- आईगॉट पोर्टल पर पाठ्यक्रम अपलोड करने के निर्देश
- प्रमोशन और एसीआर से भी जोड़ा जाएगा कार्यक्रम

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि प्रदेश के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए कैपेसिटी बिल्डिंग कार्यक्रम अनिवार्य किया जाएगा। सात दिवसीय प्रशिक्षण को चरणबद्ध तरीके से लागू करते हुए इसे आगे चलकर प्रमोशन और एसीआर से भी जोड़ा जाएगा।

मुख्यमंत्री ने यह निर्देश मंगलवार को 'मिशन कर्मयोगी' के अंतर्गत राज्य में अब तक हुई प्रगति और आगामी कार्ययोजना की उच्च स्तरीय समीक्षा बैठक में दिए। बैठक में कैपेसिटी बिल्डिंग कमीशन की चेयरपर्सन एस. राधा चौहान ने प्रदेश में मिशन कर्मयोगी के क्रियान्वयन की स्थिति और आगे की कार्ययोजना प्रस्तुत की। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि मिशन कर्मयोगी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की परिवर्तनकारी पहल है, जिसका उद्देश्य वैश्विक दृष्टिकोण के साथ भारतीय लोकाचार में निहित मूल्यों को आत्मसात करते हुए सक्षम, संवेदनशील और परिणामोन्मुख मानव संसाधन तैयार करना है। यह पहल शासन व्यवस्था को भविष्य की चुनौतियों के अनुरूप ढालने में निर्णायक भूमिका निभा रही है।

मुख्यमंत्री योगी ने निर्देश दिए कि सभी विभाग अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम तैयार कर आईगॉट पोर्टल पर अपलोड करें। उपाम सहित सभी प्रशिक्षण केंद्रों में समयानुकूल कैपेसिटी बिल्डिंग कोर्स विकसित किए जाएं। उन्होंने पाठ्यक्रमों में एआई और साइबर सिक्योरिटी को अनिवार्य रूप से शामिल करने, 'अमृत ज्ञान कोश' पर प्रदेश की श्रेष्ठ केस स्टडीज अपलोड करने और प्रशिक्षण की गुणवत्ता, नियमित मूल्यांकन व व्यावहारिक उपयोगिता पर विशेष ध्यान देने को कहा।

अपने सरकारी आवास पर मिशन कर्मयोगी की बैठक के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। अमृत विचार

यूपी आईगॉट क्रियान्वयन देश का अग्रणी राज्य

- बैठक में यह भी बताया गया कि आईगॉट कर्मयोगी के क्रियान्वयन में उत्तर प्रदेश देश का अग्रणी राज्य बनकर उभरा है। प्रदेश से 18.8 लाख से अधिक कार्मिक प्लेटफॉर्म पर ऑनबोर्ड हो चुके हैं, जो वर्ष 2025 में देशभर की कुल ऑनबोर्डिंग का 93 प्रतिशत है। वहीं, 10 लाख से अधिक उपयोगकर्ताओं ने कम से कम एक पाठ्यक्रम पूरा किया है और 72 लाख से अधिक पाठ्यक्रम पूर्ण हुए हैं, जो वर्ष 2025 की देशव्यापी कुल पूर्णताओं का 99 प्रतिशत है।

फील्ड कर्मियों पर विशेष फोकस

- मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि एएनएम, आशा कार्यकर्ता, पुलिस कांस्टेबल, पंचायती राज संस्थाओं और नगरीय निकायों से जुड़े फील्ड कर्मियों के लिए व्यवहारिक, कार्य-आधारित और जरूरतों के अनुरूप प्रशिक्षण को प्राथमिकता दी जाए, ताकि जमीनी स्तर पर सेवाओं की संवेदनशीलता और प्रभावशीलता में निरंतर सुधार हो सके।

3 करोड़ कार्मिकों को जोड़ने का लक्ष्य

- मुख्यमंत्री को बताया गया कि मिशन कर्मयोगी के तहत केंद्र में 30 लाख से अधिक सिविल सेवकों, राज्यों में लगभग 2.2 करोड़ कार्मिकों तथा शहरी स्थानीय निकायों और पंचायती राज संस्थाओं में लगभग 50 लाख कार्मिकों को क्षमता संवर्धन से जोड़ने का लक्ष्य है। देशभर के 790 से अधिक सरकारी प्रशिक्षण संस्थानों को सुदृढ़ किया जा रहा है। आईगॉट प्लेटफॉर्म पर अब तक 1.45 करोड़ से अधिक उपयोगकर्ता पंजीकृत हैं। यहां 4,179 प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं।

पारिवारिक विवादों में आएगी बड़ी कमी

पैतृक संपत्ति के बंटवारे की रजिस्ट्री अब सिर्फ 10 हजार रुपये में होगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

कैबिनेट के निर्णय

- तीन पीढ़ियों से अधिक वंशजों में पैतृक अचल संपत्ति का होगा आसान विभाजन
- किराया रजिस्ट्रेशन पर 90 प्रतिशत तक शुल्क में कटौती
- आम नागरिक आसानी से करा सकेंगे रेंट एग्रीमेंट का पंजीकरण

ये बड़े फायदे

- मकान मालिक और किरायेदार आसानी से रेंट एग्रीमेंट पंजीकृत करा पाएंगे
- पारदर्शिता बढ़ेगी और कानूनी सुरक्षा मजबूत होगी
- संपत्ति विवादों में कमी आएगी
- अवैध और कच्चे समझौतों पर रोक लगेगी

अमृत विचार: राज्य सरकार ने उत्तर प्रदेश में आम जनता को बड़ी राहत देते हुए पैतृक संपत्ति के बंटवारे और किराया रजिस्ट्रेशन से जुड़े नियमों में महत्वपूर्ण बदलाव किए हैं। इस फैसले से जहां पारिवारिक विवादों में कमी आएगी, वहीं किरायेदारों और मकान मालिकों दोनों को सीधा लाभ मिलेगा।

निर्णय के तहत अब पैतृक संपत्ति के बंटवारे के लिए मात्र 10,000 रुपये में रजिस्ट्री कराई जा सकेगी। इसमें 5,000 रुपये स्टांप ड्यूटी और 5,000 रुपये निबंधन शुल्क शामिल होंगे। यह व्यवस्था तीन पीढ़ियों से अधिक पारंपरिक वंशजों के बीच लागू होगी। बंटवारा केवल पैतृक अचल संपत्ति का ही किया जाएगा, जिसमें कृषि, आवासीय और वाणिज्यिक संपत्तियां शामिल हैं। संपत्ति का विभाजन उत्तराधिकार कानून के तहत प्राप्त हिस्से के अनुपात में किया जाएगा।

दूसरी तरफ, सरकार ने किराया रजिस्ट्रेशन को भी बेहद आसान और सस्ता बना दिया है। अब स्टांप ड्यूटी और निबंधन शुल्क में 90 प्रतिशत तक की कमी की गई है। नई दरों के अनुसार अलग-अलग किराया अवधि और वार्षिक किराया श्रेणियों में पहले की तुलना में शुल्क में भारी गिरावट आई है, जिससे आम नागरिक आसानी से रेंट एग्रीमेंट का पंजीकरण करा सकेंगे।

कैबिनेट के फैसलों की जानकारी देते मंत्री सुरेश खन्ना, नंदी और अन्य।

खेल विभाग में क्षेत्रीय क्रीड़ा अधिकारियों की भर्ती

- कैबिनेट ने खेल विभाग में क्षेत्रीय अधिकारी के रिक्त पदों की भर्ती प्रक्रिया में संशोधन को भी मंजूरी दी। विभाग में कुल 18 पद स्वीकृत हैं। पहले व्यवस्था थी कि 50 प्रतिशत पद पदोन्नति से और 50 प्रतिशत अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता खिलाड़ियों से भरे जाएंगे। अब मंत्रिपरिषद के निर्णय के अनुसार दो-तिहाई (12 पद) पदोन्नति से और एक-तिहाई (6 पद) अंतरराष्ट्रीय पदक विजेता खिलाड़ियों (ओलंपिक, एशियन गेम्स, कॉमनवेल्थ गेम्स) से भरे जाएंगे। इससे अनुभवी अधिकारियों और उत्कृष्ट खिलाड़ियों दोनों को अवसर मिलेगा।

कानपुर में 37वीं वाहिनी पीएसी के पुराने भवन ध्वस्त होंगे

- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को लोकभवन में हुई मंत्रिपरिषद की बैठक में कैबिनेट ने 37वीं वाहिनी पीएसी, कानपुर के पुराने और जर्जर आवासीय भवनों को ध्वस्त करने की अनुमति दी गई। ध्वस्तीकरण के बाद वहां टाइप-वन स्पेशल के 108 नए आवास बनाए जाएंगे, जिससे पीएसी जवानों को बेहतर आवासीय सुविधाएं मिल सकेंगी।

पीलीभीत में नया बस स्टेशन

- टनकपुर रोड पर मुख्यालय के पास एक नवीनतम बस स्टेशन की स्थापना को मंजूरी दी गई है। यह बस स्टेशन राजस्व विभाग की 1.317 हेक्टेयर (लगभग 7,000 वर्गमीटर) भूमि पर बनाया जाएगा, जिसे राज्य सरकार ने उत्तर प्रदेश परिवहन निगम को 30 वर्षों की लीज पर देने का निर्णय लिया है, जिसे 90 वर्ष तक के लिए बढ़ाया जा सकेगा। नए बस स्टेशन के निर्माण से उत्तराखंड और नेपाल जाने वाले यात्रियों को बड़ी सुविधा मिलेगी। कैबिनेट मंत्री ने बताया कि बस स्टेशन का निर्माण कार्य दो वर्षों के भीतर पूरा किए जाने का लक्ष्य रखा गया है।

दो उप निबंधक कार्यालय भवनों को भूमि आवंटन को मंजूरी

- कैबिनेट की बैठक में स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग से जुड़े दो अन्य महत्वपूर्ण प्रस्तावों को भी स्वीकृति प्रदान की गई। इसके तहत कैबिनेट ने जनपद कुशीनगर की तहसील कप्तानगंज में उप निबंधक कार्यालय भवन के निर्माण हेतु ग्राम बसहिया उर्फ कप्तानगंज स्थित तहसील परिसर की भूमि में से 0.0920 हेक्टेयर (920 वर्गमीटर) भूमि को स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग के पक्ष में नि:शुल्क हस्तांतरित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी। वर्तमान में उप निबंधक कार्यालय जीर्ण-शीर्ण भवन में संचालित है, जिसे ध्वस्त कर नए भवन का निर्माण किया जाएगा।

वाराणसी में बनेगा 500 बेड का मल्टी सुपर स्पेशलिटी अस्पताल

- कैबिनेट ने शिव प्रसाद गुप्ता एसएसपीजी मंडलीय जिला चिकित्सालय, वाराणसी परिसर में पहले से मौजूद 11 जर्जर और निष्प्रयोज्य भवनों को ध्वस्त कर 500 शैय्या वाला मल्टी सुपर स्पेशलिटी अस्पताल बनाए जाने को मंजूरी दे दी है। यह अस्पताल 315 करोड़ 48 लाख रु. की लागत से बनाया जाएगा और इसका निर्माण कार्य चार वर्षों में पूरा किया जाएगा। इस परियोजना में 60 प्रतिशत धनराशि केंद्र सरकार (लगभग 189 करोड़ रु.) और 40 प्रतिशत राज्य सरकार (लगभग 126 करोड़ रु.) द्वारा वहन की जाएगी। इस निर्णय से पूर्वांचल के मरीजों को अत्याधुनिक और उच्च स्तरीय चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध होंगी। कैबिनेट ने नेशनल फॉरेंसिक साइंस यूनिवर्सिटी, गांधीनगर, गुजरात के वाराणसी में ऑफ-कैंपस की स्थापना के लिए 50 एकड़ भूमि नि:शुल्क उपलब्ध कराने के प्रस्ताव को स्वीकृति दी। यह भूमि तहसील राजा तालाब, जनपद वाराणसी क्षेत्र में स्थित है, जिसे पशुधन विभाग से 99 वर्षों की लीज पर विश्वविद्यालय को दी जाएगी। इस कैंपस के खुलने से फॉरेंसिक साइंस, साइबर क्राइम और आपराधिक जांच के क्षेत्र में प्रदेश को बड़ी शैक्षणिक और तकनीकी मजबूती मिलेगी।

प्रदेश में निवेशकर्ताओं को मिलेंगी बंपर सुविधाएं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

सेमीकंडक्टर इकाई

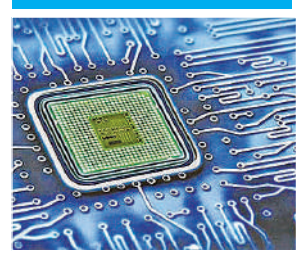

- ब्याज सब्सिडी, कर्मचारी लागत प्रतिपूर्ति, 10 वर्षों तक नेट एसजीएसटी में मिलेगी छूट
- यूपी के मूल निवासियों के लिए 100 प्रतिशत ईपीएफ प्रतिपूर्ति
- 10 वर्षों तक प्रति यूनिट 2 रु. बिजली बिल में मिलेगी राहत

अमृत विचार : मंत्रिपरिषद की बैठक में राज्य सरकार ने जनवरी 2024 में लाई गई सेमीकंडक्टर नीति के तहत बड़े निवेश को आकर्षित करने के उद्देश्य से 3,000 करोड़ रु. या उससे अधिक के निवेश पर विशेष प्रोत्साहन देने का निर्णय लिया है। सुरेश खन्ना ने बैठक के बाद बताया कि अमेरिका, यूरोप, जापान और ताइवान जैसे देशों में सेमीकंडक्टर का निर्माण बड़े पैमाने पर हो रहा है।

इसी क्रम में भारत और विशेष रूप से उत्तर प्रदेश को इस उभरते उद्योग का बड़ा केंद्र बनाने के लिए योगी सरकार ने केस-टू-केस आधार पर प्रोत्साहन देने की स्वीकृति दी है। उन्होंने बताया, इसके तहत सेमीकंडक्टर इकाइयों को ब्याज सब्सिडी, कर्मचारी लागत प्रतिपूर्ति, 10 वर्षों तक नेट एसजीएसटी में छूट, यूपी के मूल निवासियों के लिए 100 प्रतिशत ईपीएफ प्रतिपूर्ति (अधिकतम 2,000 रु. प्रतिमाह), जल मूल्य में छूट और 10 वर्षों तक प्रति यूनिट 2 रु. बिजली बिल में छूट दी जाएगी। उन्होंने कहा कि इस नीति का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में बड़े पैमाने पर निवेश और रोजगार के अवसर सृजित करना है।

ग्लोबल सर्विस हब बनेगा प्रदेश

- उत्तर प्रदेश वैश्विक क्षमता केंद्र (जीसीसी) नीति-2024 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए नियमावली-2025 को मंजूरी दी गई। इस नियमावली के लागू होने से प्रदेश को वैश्विक निवेश, उच्च स्तरीय सेवाओं और बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन में नई गति मिलेगी। इसके लिए इन्वेस्ट यूपी को नोडल एजेंसी नामित किया गया है। औद्योगिक विकास मंत्री नंद गोपाल गुप्ता नंदी ने बताया कि प्रदेश में निवेश का माहौल बेहतर हुआ है, जिसके चलते निवेश करने के लिए उद्योग घराने और मल्टीनेशनल कंपनियां हमारे संपर्क में हैं। जीसीसी नीति हमारे लिए बहुत लाभप्रद है और आज हम इसकी एसओपी लेकर आए हैं। यूपी में जीसीसी के निवेश में लगातार वृद्धि हो रही है। 21 कंपनियों ने इसमें निवेश शुरु कर दिया है।

यूपी के विस चुनाव पर लोकतंत्र का दारोमदार : अखिलेश

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: योगी मंत्रिमंडल के विस्तार की संभावनाओं के बीच समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने आरोप लगाया है कि भाजपा जनता को धोखा देने के लिए मंत्रिमंडल विस्तार करेगी।

इसी क्रम में उन्होंने कहा, समाजवादी पार्टी के नेताओं, कार्यकर्ताओं को बूथ पर काम करना है। यूपी के विधानसभा चुनाव पर लोकतंत्र का दारोमदार है। भाजपा के षड्यंत्र को विफल करना है। जनता 2027 में भाजपा को हटाने का निश्चय कर चुकी है। मंगलवार को समाजवादी पार्टी के राज्य मुख्यालय लखनऊ में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये कार्यकर्ताओं और नेताओं से मुलाकात के बाद अखिलेश यादव ने कहा कि एसआईआर में निर्वाचन आयोग की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगा है। भाजपा लोकतंत्र को कमजोर कर रही है। हर मतदाता का नाम मतदाता सूची में जुड़वायें। पार्टी के सभी लोग बूथ पर मजबूती से जुटे। सपा प्रमुख ने कहा कि 2027 में प्रदेश में समाजवादी पार्टी की सरकार बनाकर सामाजिक न्याय के राज की स्थापना करनी है। सबको सम्मान और न्याय मिलेगा। प्रदेश का विकास होगा। समाजवादी सरकार में गोमती रिवरफ्रंट पर महाराजा बिजली पासी की सोने की प्रतिमा लगाई जाएगी।

सपा मुख्यालय लखनऊ में प्रदेश के विभिन्न जिलों से आये कार्यकर्ताओं और नेताओं को संबोधित करते अखिलेश यादव।

कृषि निर्यात बढ़ाएगा 'इंडस फूड एक्सपो-2026'

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

- 8 से 10 जनवरी को ग्रेटर नोएडा में आयोजन, तैयारी तेज
- 25 देशों के सामने प्रदर्शित किए जाएंगे यूपी के उत्पाद

अमृत विचार : 8 से 10 जनवरी को इंडियन एक्सपो सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में आयोजित ''इंडस फूड एक्सपो-2026'' में उत्तर प्रदेश भी प्रतिभाग करेगा। इस आयोजन में शामिल होने वाले 25 देशों के समक्ष कृषि उत्पाद और उससे बने खाद्य पदार्थ प्रदर्शित करके निर्यात बढ़ाया जाएगा। कृषि विपणन एवं विदेश व्यापार निदेशालय ने कार्यक्रम की तैयारी तेज कर दी है।

इस कार्यक्रम में निर्यातक और एफपीओ द्वारा उत्तर प्रदेश के फल, सब्जी, बासमती और सामान्य चावल समेत कई उत्पाद और इनसे बने खाद्य पदार्थ स्टॉलों पर प्रदर्शित करेंगे। कृषि विपणन एवं विदेश व्यापार निदेशालय ने प्रतिभाग करने के लिए लखनऊ, बुलंदशहर, नोएडा और अयोध्या से छह निर्यातक और एफपीओ चयनित किए हैं। जिन्हें 25 देशों के सामने अपने उत्पाद प्रदर्शित करने का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

इस आयोजन में क्रेता-विक्रेता आपस में सीधे अपने उत्पादों की खासियत, पहचान, दाम आदि बताएंगे और समन्वयक बनाकर सीधे आर्डर लेंगे। इससे निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। विभाग को कार्यक्रम स्थल में एक हजार वर्ग फिट का पवेलियन मिला है। इसमें फल, सब्जी व अन्य उत्पादों के स्टॉल, वाल प्रचार, जीआई गैलरी आदि बनाई जाएगी।

महिला आयोग | न्याय, सहानुभूति और संवाद के माध्यम बनी पारिवारिक विवाद निवारण क्लिनिक

वैवाहिक विवादों को दंडात्मक कार्रवाई के बजाय परामर्श से सुलझाना होगा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: राज्य महिला आयोग अध्यक्ष बबिता सिंह चौहान ने उत्तर प्रदेश पुलिस द्वारा संचालित पारिवारिक विवाद निवारण क्लिनिक को महिलाओं, बच्चों एवं परिवार की गरिमा और अधिकारों की रक्षा की दिशा में एक अत्यंत सराहनीय, जन-केंद्रित और दूरदर्शी पहल बताया है।

बबिता सिंह चौहान ने कहा कि इसका मूल उद्देश्य पारिवारिक कलह, घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न एवं वैवाहिक विवादों को दंडात्मक कार्रवाई के बजाय संवेदनशील परामर्श, मध्यस्थता और आपसी संवाद के माध्यम से सुलझाना है, ताकि पीड़ितों को लंबी कानूनी प्रक्रिया, सामाजिक कलंक और मानसिक उत्पीड़न से बचाया जा सके। यह पहल कानून और करुणा के बीच संतुलन स्थापित करते हुए न्याय को अधिक मानवीय बनाती है।

उन्होंने बताया कि वर्ष 2019 में गौतम बुद्ध नगर (नोएडा) पुलिस और शारदा विश्वविद्यालय के मध्य हुए एमओयू से प्रारंभ यह प्रयोगात्मक पहल आज एक प्रभावी मॉडल के रूप में उभर कर सामने आई है। 10 जुलाई 2020 को औपचारिक रूप से उद्घाटित इस क्लिनिक ने पारिवारिक विवादों के समाधान का एक ऐसा वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत किया है, जिससे न्यायालयों और पुलिस तंत्र पर बढ़ते बोझ में भी उल्लेखनीय कमी आई है।

राज्य महिला आयोग अध्यक्ष बबिता सिंह चौहान।

पंचायती राज विभाग के कैलेंडर में दिखेगा महिला सशक्तिकरण

- **अमृत विचार, लखनऊ :** महिलाओं के सशक्तिकरण और ग्राम पंचायतों में उनकी वास्तविक एवं सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से पंचायती राज विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण पर आधारित विशेष कैलेंडर जारी किया गया है। यह कैलेंडर केवल तिथियों का संकलन नहीं, बल्कि पंचायतों में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करने का एक प्रभावी माध्यम है। कैलेंडर के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि ग्राम पंचायतों में महिलाएं केवल नाम की प्रधान या प्रतिनिधि न रहें, बल्कि विकास कार्यों और निर्णय प्रक्रिया में उनकी सार्थक भागीदारी सुनिश्चित हो। यह पहल महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका निभाने, अपनी बात मजबूती से रखने और पंचायत संचालन में सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित करती है। यह कैलेंडर ग्राम पंचायतों, पंचायत भवनों एवं विभागीय कार्यालयों में प्रदर्शित किया जाएगा, जिससे जनप्रतिनिधियों और आम नागरिकों में महिलाओं की सहभागिता को लेकर सकारात्मक सोच विकसित हो सके। पंचायती राज विभाग का यह प्रयास ग्रामीण स्तर पर महिलाओं को आगे बढ़ाने और उन्हें निर्णय प्रक्रिया का अहम हिस्सा बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पंचायती राज विभाग का कैलेंडर जारी करते कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर।

जब पंचायतों में महिलाएं सशक्त होंगी और निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाएंगी, तभी गांवों का समग्र विकास संभव होगा। यह कैलेंडर महिला हितैषी सोच को जन-जन तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम बनेगा।

-ओमप्रकाश राजभर, पंचायती राज मंत्री

हाईटेक और नागरिक केंद्रित होंगी प्रदेश की तहसीलें

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- जून तक सर्वे और विस्तृत फ्रेमवर्क का काम होगा पूरा
- तहसीलें होंगी मॉडल प्रशासनिक केंद्र, थमेगा भ्रष्टाचार

अमृत विचार: प्रदेश सरकार राजस्व प्रशासन को अत्याधुनिक, डिजिटल और भविष्य की जरूरतों के अनुरूप बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठा रही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर प्रदेश भर में फ्यूचर रेडी तहसीलों का निर्माण किया जाएगा। इसका उद्देश्य तहसील स्तर पर नागरिकों को तेज, भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी और तकनीक-आधारित राजस्व सेवाएं उपलब्ध कराना है।

फ्यूचर रेडी तहसीलें उत्तर प्रदेश में डिजिटल इंडिया और ई-गवर्नेंस के माध्यम से प्रशासनिक क्रांति लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल हैं, जो नागरिक-केंद्रित शासन को मजबूत करने के साथ राज्य के समग्र विकास को नई रफ्तार देंगी। इन तहसीलों में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म, ई-फाइलिंग सिस्टम, ऑनलाइन रिकॉर्ड मैनेजमेंट और स्मार्ट वर्कस्पेस जैसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी। इसके लिए सभी तहसीलों का सर्वे और विस्तृत फ्रेमवर्क तैयार करने का कार्य चल रहा है, जिसे जून 2026 तक पूरा करने की समय सीमा तय की गई है। भूमि अभिलेख, नामांतरण, प्रमाण-पत्र जारी करना, विवाद निपटारा और अन्य राजस्व सेवाएं पूरी तरह ऑनलाइन की जाएंगी। नागरिकों को बार-बार तहसील कार्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ेंगे और घर बैठे सेवाएं उपलब्ध होंगी, जिससे समय और संसाधनों की बचत होगी।

अमृत विचार

बुधवार, 7 जनवरी 2026

देशभक्ति मूल रूप से यह विश्वास है कि एक विशेष देश, दुनिया का सबसे अच्छा देश है, क्योंकि आप उसमें पैदा हुए हैं।

–जॉर्ज बर्नार्ड शॉ, आइरिश विचारक

यह हिंसा कैसे रुकेगी

बीते 19 दिनों में बांग्लादेश में छह हिंदुओं की हत्या, व्यापक हिंसक दुर्व्यवहार और संगठित अपराध की घटनाएं भारत के लिए सीमापार में मानवीय संकट तो है ही, उसके लिए यह सीधी चुनौती है। इससे सीमा पार अप्रवासन, सांप्रदायिक तनाव और कूटनीतिक दबाव बढ़ सकता है। धर्म निरपेक्ष कहलवाने वाले बांग्लादेश के लिए भी यह उसकी लोकतांत्रिक, अंतर्राष्ट्रीय बहुलतावादी साख की गंभीर परीक्षा है। अल्पसंख्यकों की सुरक्षा किसी भी आधुनिक राज्य की बुनियादी जिम्मेदारी होती है। इसमें चूक पड़ोसियों की सुरक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता और अंतर्राष्ट्रीय भरोसे को डगमगाती है। चुनावी मौसम में हिंदुओं के विरुद्ध हिंसा की तेज़ी के पीछे कई वजहें हैं, जैसे चुनावी ध्रुवीकरण, कट्टरपंथी नेटवर्कों का उभार, दंडहीनता की संस्कृति और प्रशासनिक शिथिलता। स्थानीय नेता, कारोबारी, अधिकारी, पत्रकार, छात्र और महिलाएं, हर वर्ग के हिंदुओं का हिंसा की चपेट में आना बताता है कि समस्या केवल धार्मिक नहीं, गहरे राजनीतिक उपयोग से भी जुड़ी है।

पहचान को 'वोट-ब्लॉक' या 'विरोधी खेमे' के रूप में चिन्हित कर भय का वातावरण बनाना आसान हो जाता है। हिंदुओं पर हिंसा की तेजी से वृद्धि के पीछे राजनीतिक अस्थिरता प्रमुख है। यह घृणा धार्मिक दिखती है, मगर जड़ें राजनीतिक हैं। नफरत का बीज जेहादी संगठनों और कट्टर राजनीति ने बोया है, जिसे सरकारें अनदेखा करती रहीं। अल्पसंख्यकों को वोट बैंक के रूप में कुचलना और हिंदुओं को राजनीति की मुख्यधारा से बाहर रखना, उनकी आवाज को मंच न देकर दबा देना प्रछन्न नीति रही है। चुनावों में सुरक्षा बढ़ती है, ऐसी घटनाएं बताती हैं कि या तो व्यवस्था की इच्छाशक्ति कमजोर है या चरमपंथी दबावों के आगे वह झुक रहा है। यह इशारा करता है कि हिंसा राज्य प्रायोजित हिंसा है। यहां पहले भी ऐसी हिंसा होती रही है। 2001 के चुनाव बाद हिंदुओं पर व्यापक अत्याचार हुए, तब भारत सरकार ने कड़ा रुख अपनाया था। उसने राजनयिक दबाव बनाया, आर्थिक सहायता रोकी। 2024 में शेख हसीना के इस्तीफे के बाद 4 से 20 अगस्त तक 2010 से अधिक हमले हुए। मंदिर जलाए गए, घर लूटे गए। पर कूटनीतिक दबाव, सार्वजनिक-निजी संवाद और सीमा-स्तरीय सहयोग के जरिए मात्र चिंता जताई गई। उतनी कड़ाई नहीं बरती गई, जितना बरतना चाहिए था। सरकार के कदम अपर्याप्त प्रयासों के चलते त्वरित अभियोजन और संरचनात्मक सुधार नहीं हो सके।

कुछ हफ्ते पहले संघ प्रमुख ने कहा था, एकमात्र हिंदू बहुल देश भारत को सीमाओं में रहकर बांग्लादेश के हिंदुओं की अधिकतम मदद करनी चाहिए, जिसका आशय था बांग्लादेश पर दबाव, बहुपक्षीय मंचों पर मुद्दा उठाना, मानवीय सहायता और शरण-संबंधी संवेदनशीलता, लेकिन इस आह्वान के बाद फिलहाल इस ओर कोई ठोस कदम नहीं दिखा। न आश्रय, न वैश्विक मंच पर मुखरता। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद जो पहली घटना के बाद वैश्विक अभियान चलाने की बात कह रहे थी, उनकी भूमिका जनमत-संगठन, राहत और अंतर्राष्ट्रीय जागरूकता तक ही सीमित रह सकती है। वे विदेश नीति का स्थानापन्न नहीं बन सकते।

प्रसंगवश

आवाजें बहुत हैं लेकिन सुनने वाले बहुत कम

हमारे समय की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि हमारे चारों ओर आवाज़ें बहुत हैं, मगर सुनने वाले बहुत कम लोग है। ये शोर हर जगह है- परिवारों में, दफ्तरों में, सड़कों पर, सोशल मीडिया आदि। हम लगातार कुछ न कुछ कह रहे होते हैं, लेकिन आपाधापी में किसी और की बात सच में सुनने का धैर्य खो चुके होते हैं। यानी हम सबके पास समय का अभाव है।

हाल के वर्षों में हुए कुछ मनोवैज्ञानिक और सामाजिक अध्ययनों ने इस चिंता को वैज्ञानिक रूप से भी रेखांकित किया है। येल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने बताया कि मानव मस्तिष्क में 'सुनने' की प्रक्रिया केवल ध्वनि ग्रहण करने की क्रिया नहीं है, बल्कि इसमें जटिल मानसिक और भावनात्मक प्रक्रियाएं शामिल होती हैं। ध्यान, सहानुभूति और अर्थ-निर्माण। यह दर्शाता है कि जब हमारा ध्यान बंटा हुआ हो या मन थका हुआ हो, तो हम भले ही आवाज़ सुन लें, अर्थ नहीं पकड़ पाते हैं।

कुमार सिद्धार्थ

वरिष्ठ पत्रकार

वहीं एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि सक्रिय सुनने का अभ्यास यानी जब कोई व्यक्ति सचेत रूप से सामने वाले के भावों, शब्दों और मौन को ग्रहण करता है, संवाद की गुणवत्ता को गहराई से प्रभावित करता है। दिलचस्प बात यह है कि यह 'सुनने की क्षमता' कोई जन्मजात गुण नहीं, एक सीखी जाने वाली दक्षता है। यानी अगर हम चाहें, तो सुनने का कौशल दोबारा सीख सकते हैं।

आपने शायद गौर किया होगा, जब कोई बच्चा गुस्से में खिलौना फेंक देता है, कोई दोस्त अचानक चुप हो जाता है, या कोई सहकर्मी मीटिंग में बेरुखा बैठा रहता है, तो हम अक्सर जल्दबाज़ी में निष्कर्ष निकाल लेते हैं: 'वह गुस्सैल है', 'वह अभिमानी है', या 'उससे बात करना ही बेकार है', लेकिन क्या हमने कभी ठहरकर यह सोचा कि उसके भीतर उस क्षण क्या चल रहा था? शायद उसने अपनी बात कई बार कहने की कोशिश की होगी, पर कोई सच में सुनने वाला नहीं था। जब हम किसी को ध्यान से सुनते हैं, तो हम उसके लिए भीतर जगह बनाते हैं उसकी तकलीफ़, उलझन या अनुभव के लिए। यही जगह आगे चलकर भरोसे में बदलती है। एक हालिया अध्ययन में यह भी पाया गया कि जब लोगों को 'गुणवत्तापूर्ण रूप से सुना जाता है, तो न केवल बोलने वाला बल्कि श्रोता भी भावनात्मक रूप से संतुलित महसूस करता है। यानी सुनना सिर्फ़ सामने वाले के लिए नहीं, अपने भीतर शांति पैदा करने की क्रिया भी है। घर में जब बच्चे की बात सुनी जाती है, तो वह खुलकर अपनी राय रखता है। दफ्तर में किसी सहयोगी की राय को ध्यान से सुना जाए, तो वह अपने काम के प्रति ज़िम्मेदारी महसूस करता है।

अपने समाज में संवाद अक्सर 'बोलने' के इर्द-गिर्द घूमता है। वक्ता की काबिलियत को सराहा जाता है, श्रोता की सजगता को नहीं। पर असल में समाज में समझ और परिवर्तन की शुरुआत सुनने से होती है। 2024 के एक शोध में यह पाया गया कि 'सुनने का अभिनय' जैसे सिर हिलाना, बीच में हां-हां करना संवाद को ऊपर-ऊपर जोड़ता है, लेकिन भीतर से अलगाव बढ़ाता है। असली सुनना तब होता है जब हम बिना निर्णय के, पूरे ध्यान से, सामने वाले की स्थिति को समझने की कोशिश करते हैं।

हम ऐसे समाज में बड़े हुए हैं, जहां गलती को शर्म या दंड से जोड़ा जाता है। कोई व्यक्ति देर से पहुंचा और हमने झुंझलाकर कहा 'तुम हमेशा ऐसे ही करते हो!' जबकि वह कह सकता था 'आज रास्ते में किसी को मदद करनी पड़ी।' हमारी अधीरता ने उस संवाद का दरवाज़ा बंद कर दिया।

तेल के खेल में मादुरो महज बहाना

प्रो. आरके जैन

शिक्षाविद्

वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनकी पत्नी अमेरिकी हिरासत में हैं। ट्रंप ने स्पष्ट किया है कि वेनेजुएला अब अमेरिका के नियंत्रण में होगा। यह कदम मात्र सैन्य हस्तक्षेप नहीं, बल्कि ऐसा भू-राजनीतिक विस्फोट है, जो तेल कीमतों को हिला सकता है और वैश्विक संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करेगा। दुनिया के सबसे बड़े तेल भंडार वाले देश में अमेरिकी प्रभाव की यह सीधी स्थापना रूस, चीन और ईरान के लिए खुला संकेत है। यह संकट केवल ऊर्जा बाजारों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था की नींव को भी चुनौती देगा, जहां पेट्रो डॉलर की शक्ति और ब्रिक्स की आकांक्षाएं आमने-सामने खड़ी हैं।

वेनेजुएला का संकट अचानक नहीं, बल्कि वर्षों की विफल नीतियों का परिणाम है। इसकी नींव ह्यूगो शावेज के दौर में पड़ी, जब तेल आधारित समाजवादी मॉडल को समृद्धि का आधार बनाया गया। समय के साथ भ्रष्टाचार, प्रशासनिक अक्षमता और आर्थिक कुप्रबंधन ने इस व्यवस्था को खोखला कर दिया। 2014 में वैश्विक तेल कीमतों में गिरावट ने संकट को उजागर किया और देश अतिमुद्रास्फीति, खाद्य कमी व स्वास्थ्य आपदा में डूब गया। परिणामस्वरूप लाखों नागरिकों को पलायन करना पड़ा। सत्ता बचाने के लिए निकोलस मादुरो ने रूस, चीन और क्यूबा का सहारा लिया तथा अमेरिकी प्रतिबंधों को चुनौती दी।

इसके जवाब में ट्रंप प्रशासन ने दबाव बढ़ाया। सितंबर 2025 से कैरिबियन क्षेत्र में तस्करी से जुड़े जहाजों पर हमलों ने तनाव तेज कर दिया। अंततः डेल्टा फोर्स और सीआईए के संयुक्त अभियान में मादुरो गिरफ्तार हुए। ट्रंप ने इसे 'नार्को-आतंकवाद के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई' बताते हुए वेनेजुएला को 'सुरक्षित संक्रमण' तक ले जाने की बात कही। आलोचकों के अनुसार वास्तविक लक्ष्य विशाल तेल भंडारों पर नियंत्रण है, जो लैटिन अमेरिका में अमेरिकी प्रभुत्व की वापसी और क्षेत्रीय अस्थिरता का संकेत देता है। इस संकट का सबसे तात्कालिक प्रभाव वैश्विक तेल बाजार पर पड़ा है। वेनेजुएला फिलहाल वैश्विक आपूर्ति का लगभग एक प्रतिशत, यानी करीब दस लाख बैरल प्रतिदिन तेल उत्पादन करता है, लेकिन उसके भंडार दुनिया में सबसे बड़े हैं। हमले के बाद ब्रेंट कच्चे तेल की कीमतें साठ से इकसठ डॉलर प्रति बैरल के आसपास रहीं, पर भू-राजनीतिक जोखिम के कारण पांच से दस डॉलर की बढ़ोतरी की आशंका है।

यदि उत्पादन या निर्यात बाधित हुआ, जैसे- बंदरगाहों की नाकेबंदी या बीमा अड़चनें तो भारी कच्चे तेल की कमी से डीजल और परिष्कृत ईंधन महंगे हो सकते हैं। अभी बाजार में आपूर्ति की अधिकता है। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार लगभग अड़तीस लाख बैरल प्रतिदिन का सरप्लस मौजूद है, इसलिए तत्काल असर सीमित रहा, लेकिन संघर्ष लंबा चला तो तेल अस्सी से सौ डॉलर प्रति बैरल तक जा सकता है, जिससे वैश्विक मुद्रास्फीति तेज होगी। विशेषज्ञ इसे अल्पकालिक झटका और दीर्घकालिक संतुलन परिवर्तन मानते हैं।

दीर्घकाल में यह संकट तेल कीमतों पर दबाव भी बना सकता है। यदि अमेरिकी प्रतिबंध हटते हैं और शेवरॉन जैसी कंपनियां निवेश करती हैं, तो वेनेजुएला का उत्पादन दो से तीन मिलियन बैरल प्रतिदिन तक पहुंच सकता है। इससे भारी कच्चे तेल की अधिकता होगी और कीमतें पचास से साठ डॉलर के दायरे में सिमट सकती हैं। ट्रंप का कहना है कि अमेरिकी कंपनियां वेनेजुएला के तेल उद्योग को अत्यधिक लाभकारी बनाएंगी, जिससे पेट्रो डॉलर की पकड़ मजबूत होगी, लेकिन यदि गुरिल्ला प्रतिरोध, आंतरिक विद्रोह या रूस-चीन का प्रत्यक्ष हस्तक्षेप हुआ, तो उत्पादन में दस लाख बैरल की गिरावट कीमतों को तीस से चालीस डॉलर तक उछाल सकती है। इससे रूस और ईरान जैसी तेल-निर्भर अर्थव्यवस्थाओं को गहरा झटका लगेगा। साथ ही यह ब्रिक्स की डी-डॉलराइजेशन रणनीति को कमजोर कर सकता है, जबकि क्षेत्रीय अस्थिरता शिपिंग लागत बढ़ाकर नई चुनौतियां खड़ी करेगी।

वेनेजुएला संकट ने वैश्विक कूटनीति में तनाव की नई सीमाएं खींच दी हैं। रूस और चीन इसे प्रत्यक्ष अमेरिकी हस्तक्षेप मानते हैं। रूस पहले ही सैन्य सहायता दे चुका है, जबकि चीन वेनेजुएला के लगभग अस्सी प्रतिशत तेल निर्यात का आयात करता है। यदि अमेरिका पूर्ण नियंत्रण स्थापित करता है, तो रूस की यूक्रेन युद्ध फंडिंग पर सीधा प्रभाव पड़ेगा, वहीं ईरान को भी भारी कच्चे तेल के बाजार में नुकसान झेलना पड़ेगा। कुछ विश्लेषक इसे 'रिवर्स क्यूबन मिसाइल क्राइसिस' बता रहे हैं, जहां रूस या चीन लैटिन अमेरिका में सैन्य ठिकाने बनाने का प्रयास कर सकते हैं। क्षेत्रीय स्तर पर कोलंबिया, ब्राजील और निकारागुआ जैसे देशों में राजनीतिक अस्थिरता बढ़ने की आशंका है। यह कदम संयुक्त राष्ट्र चार्टर की भावना के विरुद्ध माना जा रहा है, जिससे वैश्विक कूटनीति कमजोर हो सकती है। इसके बावजूद ट्रंप प्रशासन इसे 'नार्को-टेररिज्म विरोधी कार्रवाई' बताकर वैध ठहराने का प्रयास कर रहा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव गहरा और बहुपक्षीय होगा। तेल कीमतों में उछाल से मुद्रास्फीति बढ़ेगी, जिसका सीधा असर भारत और चीन जैसे आयात-निर्भर देशों पर पड़ेगा। भारी कच्चे तेल के बड़े आयातक भारत को विशेष लागत दबाव झेलना पड़ सकता है। इसके विपरीत, कीमतों में गिरावट अमेरिकी उपभोक्ताओं को राहत दे सकती है और शेयर बाजारों में जोखिम लेने की प्रवृत्ति बढ़ा सकती है। सुरक्षा दृष्टि से अमेरिका पश्चिमी गोलार्ध में अपनी पकड़ मजबूत करेगा, लेकिन लैटिन अमेरिका में विरोध और असंतोष भी तेज होगा। कुछ विशेषज्ञ मानते हैं कि इससे पेट्रो डॉलर को अस्थायी संबल मिलेगा, जबकि ब्रिक्स देश वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों की ओर और तेजी से बढ़ेंगे। यदि संघर्ष पनामा नहर तक पहुंचा, तो वैश्विक व्यापार को गहरा झटका लगेगा।

> वेनेजुएला का शासन अब अमेरिका के नियंत्रण में होगा। यह कदम मात्र सैन्य हस्तक्षेप नहीं, बल्कि ऐसा भू-राजनीतिक विस्फोट है, जो वैश्विक संबंधों को नए सिरे से परिभाषित करेगा।

आमने

भरतपुर की संजना जाटव, चूरू के राहुल कस्वां और झुंझुनूं के बृजेंद्र सिंह ओला ने राजस्थान की जनता का पैसा हरियाणा के कैथल में विकास कार्यों के लिए भेजा है। नियमों के अनुसार सांसद अपने क्षेत्र में प्राथमिकता दें, ये सांसद राजनीतिक हित के लिए निधि का दुरुपयोग कर रहे हैं।

–जवाहर सिंह बेढ़म

गृह राज्य मंत्री, राजस्थान

सामने

नियमों के तहत सांसद निधि की 10 प्रतिशत राशि को किसी भी स्थान पर खर्च करने का अधिकार है। अनुशंसा सही है या नहीं इसका सत्यापन प्रशासनिक अधिकारी ही करते हैं। भुगतान और जांच की जिम्मेदारी जिला कलेक्टर तथा संबंधित अधिकारियों की होती है।

–राहुल कसवां

कांग्रेस सांसद

मानव विकास सूचकांक में सुधार भी जरूरी

प्रो. एचसी पुरोहित

दून विश्वविद्यालय

रिज़र्व बैंक के वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्याप्त अनिश्चितताओं के बावजूद भारत की वित्तीय स्थिति काफ़ी मज़बूत और सुदृढ़ है। भारतीय रिजर्व बैंक ने 2025-26 के लिए जीडीपी वृद्धि अनुमान को 6.8 प्रतिशत से बढ़ाकर 7.3 प्रतिशत कर दिया। विश्व बैंक, आईएमएफ, मूडीज, आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन (ओईसीडी), फिच और एसएंडपी जैसी अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों ने भी इस आशावादी रुख की पुष्टि की है। आज वैश्विक परिदृश्य पर नज़र डालें तो कई विकसित और उभरती अर्थव्यवस्थाएं बैंकिंग संकट, बढ़ते कर्ज़ के बोझ, मुद्रा अस्थिरता और वित्तीय बाज़ारों में उतार-चढ़ाव से जूझ रही हैं। ऐसे माहौल में भारत की वित्तीय प्रणाली का संतुलित और लचीला बने रहना एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

रिज़र्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय बैंकों की पूंजी पर्याप्तता, संपत्ति गुणवत्ता और लाभप्रदता में निरंतर सुधार, गैर-निष्पादित आस्तियों (एनपीए) का स्तर ऐतिहासिक रूप से निचले पायदान पर है, जिससे बैंकिंग तंत्र की मज़बूत सेहत का अनुमान लगाया जा सकता है। सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के बैंकों ने जोखिम प्रबंधन, ऋण मूल्यांकन और तकनीकी नवाचारों पर विशेष ध्यान दिया है। परिणामस्वरूप, ऋण विस्तार संतुलित ढंग से हो रहा है और वित्तीय प्रणाली किसी एक क्षेत्र पर अत्यधिक निर्भर नहीं है। साथ ही, गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफ़सी) की स्थिति भी पहले की तुलना में अधिक सुदृढ़ दिखाई देती है, जो नियामकीय सुधारों और संस्थानों की कड़ी निगरानी का प्रतिफल है। भारत की वित्तीय स्थिरता के पीछे रिज़र्व बैंक की सतर्क मौद्रिक नीति और नियामकीय दृष्टिकोण की अहम भूमिका रही है।

समय-समय पर किए गए स्ट्रेस टेस्ट, पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार और प्रभावी तरलता प्रबंधन ने बाहरी झटकों से अर्थव्यवस्था को बचाने में मदद की है। रेटिंग एजेंसी अर्न्स्ट एंड यंग (EY) की रिपोर्ट के अनुसार, इस आर्थिक विस्तार के साथ भारत की प्रति व्यक्ति आय 2.5 लाख रुपये से बढ़कर लगभग 13.5 लाख रुपये हो सकती है। EY का मानना है कि भारत अमेरिका और चीन के बाद दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहा है।

वैश्विक शक्ति बनना केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने की निरंतर प्रक्रिया भी है। इस क्रम में पहली चुनौती, आर्थिक समावेशन और सतत विकास की है। उच्च विकास दर के बावजूद क्षेत्रीय असमानताएं, रोजगार सृजन की गति, गुणवत्तायुक्त शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार, अनौपचारिक क्षेत्र की समस्याएं अब भी चिंता का विषय हैं। वैश्विक शक्ति बनने के लिए केवल जीडीपी वृद्धि पर्याप्त नहीं है। इसके साथ-साथ मानव विकास सूचकांक और प्रसन्नता/खुशहाली सूचकांक में भी सुधार आवश्यक है।

दूसरी, बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में भारत को रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए विभिन्न शक्ति केंद्रों—अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय संघ के साथ संतुलित संबंध रखने होंगे। किसी एक ध्रुव के अत्यधिक प्रभाव में आना भारत के दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों के विपरीत हो सकता है, इसलिए भू-राजनीतिक संतुलन जैसा कि रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान देखा गया आगे भी जारी रखना होगा।

तीसरी, तकनीकी आत्मनिर्भरता और साइबर सुरक्षा आज बड़ी चुनौती है। आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस, सेमीकंडक्टर, क्वांटम कंप्यूटिंग और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर में आत्मनिर्भरता के बिना वैश्विक शक्ति का दर्जा अधूरा रहेगा। इसके लिए प्रभावी उपाय करने होंगे और डिजिटली प्रशिक्षित समाज का निर्माण ही इसका समाधान है।

भारत के पास युवा आबादी, डिजिटल ताकत, मज़बूत स्टार्टअप इकोसिस्टम, मैन्युफैक्चरिंग क्षमता और ग्रीन एनर्जी की व्यापक संभावनाएं हैं। इन्हीं कारकों के बल पर देश की अर्थव्यवस्था वर्ष 2047 तक लगभग 26 ट्रिलियन डॉलर (2,314 लाख करोड़ रुपये) तक पहुंच सकती है, जो वर्तमान में लगभग 4.18 ट्रिलियन डॉलर (376 लाख करोड़ रुपये) है। पिछले वर्षों के सुधारों के कारण वैश्विक नवाचार सूचकांक में लगातार सुधार हो रहा है। साथ ही, बढ़ते साइबर हमले और डेटा सुरक्षा के ख़तरे राष्ट्रीय सुरक्षा के नए आयाम प्रस्तुत कर रहे हैं, इनके लिए तकनीकी रूप से प्रशिक्षण आवश्यक है।

चौथी, सामाजिक एकजुटता और आंतरिक स्थिरता की है। विविधताओं से भरे समाज में सामाजिक सद्भाव, संस्थागत विश्वास और कानून के शासन को मज़बूत बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। पांचवीं चुनौती, जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय क्षेत्र की है। वैश्विक नेतृत्व की आकांक्षा रखने वाले देश से यह अपेक्षा की जाती है कि वह कार्बन उत्सर्जन, नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु न्याय के मुद्दों पर ज़िम्मेदार और अग्रणी भूमिका निभाए।

> वैश्विक शक्ति बनना केवल उपलब्धियों का उत्सव नहीं, बल्कि बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने की निरंतर प्रक्रिया भी है।

सोशल फोरम

मौसम विज्ञानी है नन्हा पंछी

एक बिल्कुल छोटी सी चिड़िया है, गौरैया जैसी, नाम है 'वीरे' या 'वीरी' (Veery)। ये उत्तरी अमेरिका में पाई जाती है। पक्षी वैज्ञानिक जब इस चिड़िया का अध्ययन कर रहे थे, तो उन्होंने इसके माइग्रेशन यानी मौसम या प्रजनन के समय दूसरे इलाके में जाने के नियम को थोड़ा अटपटा पाया। वैसे दैनिक जीवन में ज़्यादातर पक्षी जो मौसम और प्रजनन के लिए सैकड़ों हज़ारों मील की दूरी तय करके दूसरे देश जाते हैं, उनका समय निश्चित होता है। यानी कोई पक्षी जो अक्टूबर में माइग्रेट करते है, वो ज़्यादातर समय उसी महीने में जाते हैं। मगर वैज्ञानिकों ने पाया कि ये छोटी सी चिड़िया 'वीरी' बड़े ही अनिश्चित समय में कभी भी अपना प्रवास बदल लेती है और अटलांटिक या अंध महासागर को पार करके ये बहुत दूर जाती है प्रजनन के लिए।

सिद्धार्थ ताबिश

ब्लॉगर

वैज्ञानिकों ने इनके प्रवास बदलने में कभी-कभी कई-कई हफ्तों और कई महीनों का भी अनिश्चित फासला देखा। वैज्ञानिक सालों इस गुत्थी में उलझे रहे मगर फिर अचानक एक वैज्ञानिक का ध्यान अंध महासागर के मौसम पर गया और उसने सागर में उठने वाले तूफ़ान और वीरी के माइग्रेशन के रिश्ते पर ध्यान दिया। उस वैज्ञानिक ने अंध महासागर के ख़राब मौसम का सालों का आंकड़ा इकट्ठा किया और फिर उसे इस छोटी सी चिड़िया के प्रवास बदलने के समय से मिलाया और फिर वैज्ञानिकों के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। वैज्ञानिकों ने पाया कि ये चिड़िया कई हफ्तों और कई महीनों बाद आने वाले समुद्री तूफ़ान का अंदाज़ा लगा कर समुद्र को पार करने की अपनी तारीख़ निर्धारित कर लेती है। चूंकि यात्रा बहुत लंबी होती है, इसलिए ये कई हफ़्तों और कभी महीनों पहले ही अपने प्रवास बदलने की तिथि तय कर लेती है और ये वो आंकड़े थे, जिनका अनुमान मौसम विभाग तक को नहीं था।

ये बिल्कुल छोटी सी चिड़िया और सिर्फ़ इस प्रकृति के साथ एकरूप होने के कारण, मौसम का पूरा और सटीक अनुमान लगा लेती है। लगभग सारे जीव जंतु, जिन्हें हम जानवर कहकर मुंह बनाते हैं, लगभग उन सभी के पास प्रकृति को समझने की कोई न कोई ऐसी शक्ति ज़रूर होती है और सोचिए थोड़ा कि इस छोटी से चिड़िया को जो समझ है, उतनी समझ के लिए इंसानों ने बरसों भौतिक और वाह्य चीजों पर काम करके सेटेलाइट बनाए और जाने कितने यंत्र बनाए, तब वो अब मौसम जानने लगे हैं और उसका अनुमान जानने लगें हैं।

–फेसबुक वॉल से

सामयिकी

एसिड अटैक, न्याय और राज्य की जवाबदेही

सोलह साल तक एक लड़की ने अपना चेहरा नहीं छिपाया। सोलह साल तक उसने अस्पतालों, अदालतों और समाज तीनों का सामना किया। 2009 में हरियाणा के पानीपत में उस पर तेज़ाब फेंका गया था। उस दिन उसका चेहरा झुलसा, लेकिन जीवन ख़त्म नहीं हुआ। उसने सर्जरियां झेलीं, सार्वजनिक नज़रों को सहा, रोज़गार और रिश्तों की असहज चुप्पियां झेलीं और हर कुछ महीनों में अदालत की तारीख़ पर पहुंची। इस उम्मीद के साथ कि एक दिन न्याय मिलेगा। उसका संघर्ष सिर्फ़ इलाज का नहीं था। वह रोज़-रोज़ अपने अस्तित्व को साबित करने का संघर्ष था। 2025 में, दिल्ली की रोहिणी अदालत ने वर्ष 2009 के पानीपत एसिड अटैक मामले में व्यस्क आरोपियों को बरी कर दिया। कारण यह नहीं था कि अपराध नहीं हुआ। कारण यह था कि राज्य उस अपराध को अदालत में सिद्ध नहीं कर सका।

जय प्रकाश पांडेय

लेखक

पीड़िता शाहीन मलिक थीं। सोलह वर्षों की लंबी सुनवाई के बाद अदालत का निष्कर्ष था। अपराध की भयावहता निर्विवाद है, पर अभियोजन वह साक्ष्य-शृंखला प्रस्तुत नहीं कर सका, जो 'संदेह से परे' दोष सिद्ध करने के लिए आवश्यक होती है। कॉल डिटेल रिकॉर्ड समय पर नहीं जुटे, डिजिटल साक्ष्य कमज़ोर रहे और एसिड की खरीद-आपूर्ति से जुड़ी कड़ियां अदालत तक मज़बूती से नहीं पहुंचीं। कानूनी दृष्टि से यह फ़ैसला तर्कसंगत हो सकता है, लेकिन सामाजिक दृष्टि से यह एक असहज प्रश्न छोड़ जाता है— क्या हमारे यहां एसिड अटैक जैसे अपराधों में न्याय, समय के साथ टिक पाता है?

एसिड अटैक साधारण हिंसा नहीं है। यह शरीर से पहले पहचान पर हमला करता है। चेहरा झुलसता है, तो रोज़गार, रिश्ते, सार्वजनिक उपस्थिति सब कुछ बदल जाता है। पीड़िता के लिए यह एक दिन की घटना नहीं, जीवन भर की अवस्था बन जाती है। न्याय-प्रणाली इसे अक्सर एक लंबी कानूनी फ़ाइल में बदल देती है, जहां तारीख़ें बढ़ती जाती हैं और समय साक्ष्यों का सबसे बड़ा शत्रु बन जाता है।

यहां यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि क़ानूनी ढांचा अपने आप में कमज़ोर नहीं है। भारत में एसिड अटैक को लेकर कानून पिछले एक दशक में सख़्त हुआ है। पहले भारतीय दंड संहिता की धारा 326A (एसिड से गंभीर क्षति) और धारा 326B (एसिड अटैक का प्रयास) ने इस अपराध को विशिष्ट श्रेणी में रखा। अब नए आपराधिक कानून भारतीय न्याय संहिता (BNS)में भी यही दृष्टि जारी है। कानून स्पष्ट कहता है कि तेज़ाब या किसी संक्षारक पदार्थ से स्थायी या आंशिक क्षति, जलन, विकृति या विकलांगता उत्पन्न करना अत्यंत गंभीर अपराध है, जिसके लिए न्यूनतम दस वर्ष से लेकर आजीवन कारावास तक की सज़ा दी जा सकती है। जुर्माना मात्र दंड नहीं, बल्कि पीड़िता के इलाज और पुनर्वास से जोड़ा गया है।

कानून इलाज के स्तर पर भी स्पष्ट है। भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) के तहत यह दायित्व तय किया गया है कि एसिड अटैक पीड़िता को तत्काल और निःशुल्क चिकित्सा मिले। सरकारी हो या निजी, कोई भी अस्पताल इलाज से इनकार नहीं कर सकता। इलाज से इनकार करना दंडनीय है। इसके साथ-साथ पीड़ित प्रतिकर योजना के अंतर्गत मुआवज़े का प्रावधान है, जो अंतिम फ़ैसले तक सीमित नहीं, बल्कि अंतरिम राहत के रूप में भी दिया जाना चाहिए।

एसिड अटैक में चेहरा एक क्षण में झुलसता है। न्याय में देरी से भरोसा धीरे-धीरे जलता है और जब भरोसा जलता है, तो कानून की सबसे सख़्त धाराएं भी खोखली लगने लगती हैं। न्याय का अर्थ केवल सज़ा नहीं है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

रंग-तरंग

हमारी संस्कृति के परिचायक महोत्सव

बीतों दिनों इटावा में चल रहे 116 वर्ष पुरानी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर इटावा महोत्सव के पंडाल कार्यक्रमों का रविवार को समापन हो गया, लेकिन डीएम ने महोत्सव की अवधि को 20 दिन और बढ़ाने की घोषणा की। अब लोग अगले करीब तीन सप्ताह तक प्रदर्शनी और मेले का लुत्फ उठा सकेंगे। विदाई की इस शाम में प्रखर गौर की सरस्वती वंदना और अजीत नारायण चतुर्वेदी के विदाई गीत ने माहौल को भावुक कर दिया। विशम्भर नाथ भटेले और रौनक इटावी ने अपनी गजलों के माध्यम से महोत्सव के गौरवशाली इतिहास का बखान किया। डीएम ने कहा कि इटावा महोत्सव अपनी सांस्कृतिक समृद्धि के कारण देश के चुनिंदा आयोजनों में शामिल है। यह केवल एक मेला नहीं, बल्कि जिले का लोक पर्व है।

औरंगाबाद में दाउदनगर महोत्सव का समापन बीते दिनों हुआ। महोत्सव के दूसरे दिन भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ दाउदनगर महोत्सव मनाया गया। वक्ताओं ने दाउदनगर महोत्सव की सराहना करते हुए कहा कि इसके माध्यम से अपने गौरवशाली इतिहास और वर्तमान को याद किया जा रहा है। ऐसे आयोजन सांस्कृतिक चेतना को सशक्त करते हैं। महोत्सव में दाउदनगर के गौरवशाली और इतिहास पर आधारित डॉक्यूमेंट्री का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

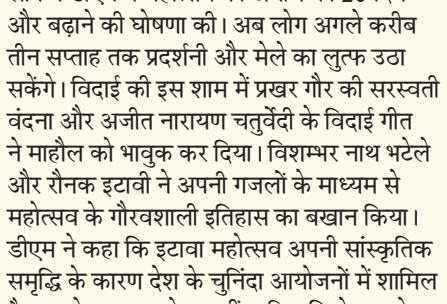

हरदा में लोकल फॉर वोकल के संकल्प को साकार करने के उद्देश्य से दस दिवसीय स्वदेशी मेले का आयोजन किया जा रहा है। यह स्वदेशी मेला अंतर्राष्ट्रीय ट्रेड शो की तर्ज पर आयोजित किया जा रहा है, जिसका मकसद है स्थानीय व्यापारियों, कारीगरों और महिलाओं के स्व-सहायता समूहों को मंच प्रदान करना है, ताकि वे अपने हुनर और उत्पादों को सीधे जनता तक पहुंचा सकें।

लाल इमारतों वाला वैभवशाली शहर बीकानेर

विनीत गुप्ता
कानपुर

राजस्थान में बीकानेर एक जीवंत शहर है, जिसका अपना अनूठा इतिहास है। इसे लाल शहर भी कहा जाता है। हालांकि बीकानेर का नाम आते ही भुजिया और नमकीन का स्वाद जुबान पर अनायास आ जाता है। बीकानेर का जूनागढ़ किला एक ऐतिहासिक और भव्य किला है। किले का मूल नाम चिंतामणि था और यह एक खाई से घिरा हुआ था। बाद में, 1902 में शाही परिवार के लालगढ़ नामक नए महल में स्थानांतरित होने के बाद इसका नाम बदलकर जूनागढ़ कर दिया गया, जिसका अर्थ है 'पुराना किला'। इसका निर्माण राजा राय सिंह ने 1589 से 1594 के बीच कराया था। यह लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर से बना है, जिसमें मुगल और राजस्थानी वास्तुकला का अद्भुत मिश्रण दिखता है। इसके भीतर कई खूबसूरत महल, जैसे बादल महल और अनूप महल स्थित हैं। जूनागढ़ किला न केवल एक ऐतिहासिक स्मारक है, बल्कि एक जीवंत संग्रहालय भी है।

चार महलों से घिरा डूंगर निवास चौक

जूनागढ़ किले ने अपने इतिहास में कई युद्ध और घेराबंदी देखी, लेकिन इस पर कभी किसी शत्रु का कब्जा नहीं रहा। यह किला लगभग 5 .28 हेक्टेयर क्षेत्र में फैला हुआ है और 37 बुर्जों और सात द्वारों वाली एक ऊंची दीवार से घिरा हुआ है। किले का मुख्य प्रवेश द्वार सूरज पोल है, जो पूर्व दिशा की ओर है और सूर्य देवता के चित्रों से सुशोभित है। अन्य द्वार दौलत पोल, चांद पोल, करण पोल, फतेह पोल, फूल महल पोल और लक्ष्मी नाथ पोल हैं। किले में कई प्रांगण हैं, जो अंदर स्थित विभिन्न संरचनाओं को आपस में जोड़ते हैं। इनमें सबसे प्रमुख प्रांगण डूंगर निवास चौक है, जो चार महलों करण महल, अनूप महल, चंद्र महल और गंगा महल से घिरा हुआ है। इन महलों की भव्य आंतरिक साज-सज्जा देखने वाली है। किले में हिंदू देवी-देवताओं को समर्पित कई मंदिर हैं, जैसे हर मंदिर (भगवान विष्णु का मंदिर), रतन बिहारी मंदिर (भगवान कृष्ण का मंदिर), लक्ष्मी नाथ मंदिर (भगवान विष्णु और लक्ष्मी का मंदिर) और शिव मंदिर हैं। ये मंदिर मूर्तिकला के उत्कृष्ट नमूने हैं। किले में कई संग्रहालय हैं, जिनमें बीकानेर के इतिहास व संस्कृति से संबंधित कलाकृतियों, हथियारों, वेशभूषा, आभूषणों, चित्रों, पांडुलिपियों और अन्य वस्तुओं का समृद्ध संग्रह प्रदर्शित किया गया है। यह देश का एकमात्र किला है, जहां पर्यटकों को महाराजा राय सिंह जी ट्रस्ट की ओर से निःशुल्क गाइड उपलब्ध कराए जाते हैं।

राजपूताना, इस्लामी और यूरोपीय वास्तुकला की झलक लालगढ़ पैलेस

महाराजा गंगासिंह ने 1902 में इस भव्य राजमहल का निर्माण, अपने स्वर्गीय पिता महाराजा लाल सिंह की स्मृति में करवाया था। इसके वास्तुशिल्प की रूपरेखा की अवधारणा, एक अंग्रेज वास्तुविद् 'सर स्विंटन जैकब' द्वारा की गई थी। यह महल लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है तथा राजपूताना, इस्लामी तथा यूरोपीय वास्तुकला के मिश्रण से इसे मूर्तरूप प्रदान किया गया है। वर्तमान में इसे हैरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है। इसके एक हिस्से में श्री सादुल म्युजियम है।

करणी माता का मंदिर

बीकानेर यात्रा के अगले दिन हम दुनियाभर में चूहों के लिए प्रसिद्ध करणी माता मंदिर पहुंचे। यह मंदिर बीकानेर से 30 किमी की दूरी पर देशनोक गांव में स्थित है। इसे 'टैम्पल ऑफ रैट्स' कहा जाता है। बताया गया कि यहां लगभग 25,000 काले चूहे हैं, जिन्हें 'कबा' कहते हैं। इनकी पवित्रता इस बात से उजागर होती है कि यदि किसी के पांव से कोई चूहा दबकर मर जाए, तो उसे चांदी का चूहा बनवाकर करणी माता के चरणों में चढ़ाना पड़ता है। एक किंवदंती के अनुसार करणी माता के सौतेले बेटे लक्ष्मण की एक तालाब में डूबने से मृत्यु हो गई थी। करणी माता ने यमराज से उन्हें जीवित करने के लिए प्रार्थना की। यमराज ने पहले मना कर दिया फिर इस शर्त पर मान गए कि उस दिन के बाद से लक्ष्मण तथा करणी माता के सभी वंशज चूहे के रूप में जिंदा रहेंगे। इसके बाद से चूहों को पवित्र मानकर मंदिर में भक्त लड्डू व दूध की बड़ी परातें चढ़ाते हैं, जिन्हें चूहे खाते-पीते हैं। चूहों का खाया हुआ प्रसाद सत्कार माना जाता है। गर्भगृह में करणी माता की मूर्ति स्थापित है। करणी माता मंदिर का द्वार सफेद संगमरमर से बनी एक सुंदर संरचना है। बड़ी संख्या में नवविवाहित यहां माता का आशीर्वाद लेने आते हैं।

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केंद्र

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र एशिया का अपनी तरह का एकमात्र केन्द्र हैं, जहां ऊंटों का रखरखाव तथा उन पर अनुसंधान और प्रजनन संबंधित कार्य किए जाते हैं। शहर के करीब स्थित यह केन्द्र 2000 एकड़ से अधिक भूमि पर फैला है तथा इसका संचालन भारत सरकार द्वारा किया जाता है।

राजसी वास्तुकला वाला प्रसिद्ध गजनेर पैलेस

गजनेर थार का अतुलनीय गहना है। 1784 में बीकानेर के महाराजा गज सिंह जी ने गजनेर पैलेस की स्थापना की थी। यह अपनी राजसी वास्तुकला, गजनेर झील के किनारे शांत वातावरण, वन्यजीव अभयारण्य और शाही जीवनशैली के अनुभव के लिए प्रसिद्ध है। यह महल लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। यहां पर अब लक्जरी सुविधाएं और प्रकृति-प्रेमी गतिविधियां जैसे सफारी, बर्ड वॉचिंग उपलब्ध हैं। यह शाही परिवार के साथ ही अतिथियों के लिए शिकारगाह और आराम गाह था। अब इसे एक हेरिटेज होटल में बदल दिया गया है।

आर्ट गैलरी

फ्रीडा की 'पोर्ट्रेट ऑफ एलिसिया गैलेंट'

'पोर्ट्रेट ऑफ एलिसिया गैलेंट' नाम की यह कलाकृति मशहूर कलाकार फ्रीडा काहलो ने 1927 में बनाई थी। यह पेंटिंग कैनवास पर ऑयल कलर से बनाई गई है। यह नैव आर्ट मूवमेंट, खासकर प्रिमिटिविज्म से जुड़ी है। इसमें एक पोर्ट्रेट दिखाया गया है और यह डोलोरेस ओल्मेडो कलेक्शन का हिस्सा है, जो मेक्सिको सिटी में है। इस कलाकृति में गहरे बैकग्राउंड के सामने बैठी हुई एक महिला दिख रही। इसमें एलिसिया गैलेंट को शांत और गंभीर अंदाज में दिखाया गया है। उसके बाल इस तरह से बनाए गए हैं, जो उसके चेहरे के लंबे आकार और उसकी शांत, गहरी नजरों को उभारते हैं। उसने गहरे रंग के कपड़े पहने हैं, जिसके गले पर लाल और सुनहरे रंग की डिजाइन है, जो उसके चेहरे पर ध्यान खींचती है। रंगों का हल्का इस्तेमाल पेंटिंग के गंभीर माहौल को दिखाता है। दाईं ओर पौधों के तत्वों की मौजूदगी एक प्राकृतिक मोटिफ पेश करती है, जो आकृति की शांति के साथ एक हल्का कंट्रास्ट पैदा करती है।

फ्रीडा के बारे में

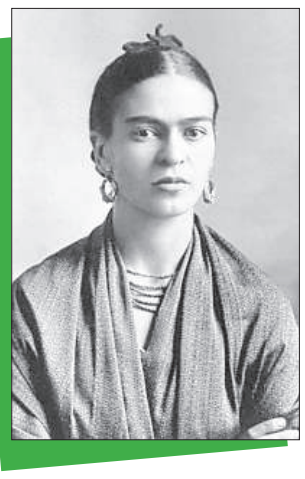

फ्रीडा काहलो प्रसिद्ध मैक्सिकन पेंटर थीं। वह छह जुलाई, 1907 को पैदा हुईं। फ्रीडा अपने सेल्फ-पोर्ट्रेट्स के लिए जानी जाती हैं। इसमें उन्होंने अपने जीवन के दर्द को दिखाया है। उन्होंने एक ऐसी विरासत बनाई, जिसने महिलाओं को अपनी कलात्मक प्रतिभा दिखाने के लिए प्रोत्साहित किया। फ्रीडा नेशनल प्रिपरेटरी स्कूल में एडमिशन पाने वाली पहली छात्रा थीं, जहां डिएगो रिवेरा के चल रहे काम ने उन्हें कला में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया। फ्रीडा मैक्सिकन क्रांति के दौरान बड़ी हुईं। इस कालखंड का उनके काम पर बहुत ज्यादा असर पड़ा। उनकी पेंटिंग्स में अक्सर चमकीले रंग और बोल्ड सिंबल होते हैं, जो मैक्सिको की संस्कृति और इतिहास को दिखाते हैं। एक जानलेवा एक्सीडेंट ने उन्हें बिस्तर पर ला दिया, जिसने फ्रीडा को पोर्ट्रेट पेंटिंग शुरू करने के लिए मजबूर किया। फ्रीडा डिएगो रिवेरा और अपने पिता विल्हेम काहलो से प्रभावित थीं। काहलो और रिवेरा ने आखिरकार 1929 में शादी कर ली। दोनों का रिश्ता उतार-चढ़ाव भरा रहा। अस्थिर रिश्तों के बीच, फ्रीडा ने अपनी छोटी-छोटी पेंटिंग्स बनाना जारी रखा। माना जाता है कि फ्रीडा की कला पर सर्रियलिज्म का बहुत ज्यादा प्रभाव था, जो बीसवीं सदी की शुरुआत में यूरोप में लोकप्रिय हुआ एक कला आंदोलन था। कई सर्रियलिस्ट कलाकारों के विपरीत, जो सपनों या कल्पनाओं को विषय बनाते थे, काहलो ने अपने कामों के लिए प्रेरणा के तौर पर अपने निजी अनुभवों का इस्तेमाल किया। उनका निधन 13 जुलाई, 1954 को हुआ। वह आज हर उस महत्वाकांक्षी महिला कलाकार के लिए एक रोल मॉडल हैं।

मेघालय का 'व्हिसलिंग विलेज' जहां नाम नहीं, सीटी है पहचान

पूर्वोत्तर भारत की हरी-भरी पहाड़ियों के बीच बसा मेघालय का एक छोटा-सा गांव कॉन्थोंग अपनी अनोखी परंपरा के कारण पूरी दुनिया में पहचाना जाता है। यहां लोग एक-दूसरे को नाम से नहीं, बल्कि सीटी की खास धुन से बुलाते हैं। यह कोई लोककथा या कल्पना नहीं, बल्कि गांव की जीवित और सदियों पुरानी सांस्कृतिक पहचान है। इसी वजह से कॉन्थोंग को 'व्हिसलिंग विलेज' भी कहा जाता है।

अनोखी परंपराएं

मेघालय कॉन्थोंग गांव में हर व्यक्ति की सीटी अलग होती है और वही उसकी पहचान बन जाती है। परंपरा के अनुसार, बच्चे के जन्म के बाद उसकी मां उसे एक विशेष सीटी की धुन देती है। यही धुन उसके नाम का स्थान ले लेती है और जीवनभर उसके साथ रहती है। समय के साथ यह सीटी परिवार, पड़ोस और पूरे गांव को याद हो जाती है, जिससे बिना देखे ही पहचान हो जाती है कि कौन बुला रहा है। यह अनोखी परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी मौखिक रूप से सिखाई जाती रही है।

कॉन्थोंग की सीटी भाषा सिर्फ संवाद का साधन नहीं, बल्कि सामुदायिक जुड़ाव का प्रतीक भी है। यहां के लोग मानते हैं कि यह परंपरा उन्हें प्रकृति के करीब रखती है और आपसी संबंधों को मजबूत बनाती है। आधुनिक तकनीक और मोबाइल फोन के दौर में भी गांव के लोग इस विरासत को संजोए हुए हैं, जो उनकी स्वदेशी पहचान को दर्शाती है।

कॉन्थोंग की भौगोलिक संरचना इसकी इस परंपरा की सबसे बड़ी वजह है। ऊंची पहाड़ियां, गहरी घाटियां और घना जंगल सामान्य आवाजों को दूर तक पहुंचने नहीं देते। ऐसे वातावरण में बातचीत के लिए सीटी सबसे प्रभावी माध्यम बन गई। इसकी तीखी और स्पष्ट ध्वनि बिना बाधा के पहाड़ों के आर-पार चली जाती है। खेतों में काम करते हुए, जंगल में लकड़ी काटते समय या दूर किसी ढलान पर मौजूद व्यक्ति को बुलाना हो, एक सीटी ही पर्याप्त होती है। आज यह अनूठा 'व्हिसलिंग कल्चर' कॉन्थोंग को वैश्विक पहचान दिला रहा है। देश-विदेश से पर्यटक इस परंपरा को देखने और सुनने यहां आते हैं। वे सीटी की धुनों के पीछे छिपी भाषा और भावनाओं को समझने की कोशिश करते हैं। कॉन्थोंग इस तरह संस्कृति, प्रकृति और परंपरा का सुंदर संगम बनकर भारत की विविध सांस्कृतिक धरोहर को जीवंत रूप में प्रस्तुत करता है।

पंजाब की फुलकारी: रंगों और परंपरा की कढ़ाई

लोकायन

फुलकारी पंजाब की फुलकारी एक प्रसिद्ध और अत्यंत प्रिय कढ़ाई कला है, जो राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न हिस्सा मानी जाती है। यह कला अपने जीवंत रंगों, बारीक हाथ की सिलाई और पारंपरिक प्रतीकों के लिए जानी जाती है। फुलकारी कढ़ाई में प्राय: रेशमी और रंगीन धागों का उपयोग किया जाता है। इसमें फूल, पत्तियां, जालियां, बेल-बूटे और कभी-कभी पशु-पक्षियों की आकृतियां उकेरी जाती हैं। कपड़े की उलटी सतह से की गई है। यह कढ़ाई सामने की ओर जादुई और चमकदार रूप में उभरती है। यह कला पीढ़ी-दर-पीढ़ी महिलाओं द्वारा सहेजी और आगे बढ़ाई गई है, जो उनके रचनात्मक कौशल और सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक है। फुलकारी केवल एक कढ़ाई कला नहीं, बल्कि पंजाब की स्त्री-परंपरा, संवेदनशीलता और सांस्कृतिक निरंतरता का जीवंत प्रतीक है। बदलते समय के साथ आधुनिक डिजाइनों में ढलकर भी फुलकारी आज अपनी पारंपरिक आत्मा को बनाए हुए है और भारतीय हस्तकला की अमूल्य धरोहर के रूप में पहचानी जाती है।

फुलकारी कढ़ाई के प्रमुख प्रकार

- **पाक फुलकारी**- यह फुलकारी की सबसे लोकप्रिय शैली मानी जाती है। इसमें कपड़े के अधिकांश हिस्से को घनी कढ़ाई से भर दिया जाता है। विभिन्न रंगों के धागों से फूलों और ज्यामितीय आकृतियों का निर्माण किया जाता है। यह शैली विशेष रूप से विवाह और उत्सवों में पहनी जाती है।
- **छम्मास फुलकारी**- छम्मास फुलकारी में एक ही रंग के चमकीले धागे से बारीक टांकों का प्रयोग किया जाता है। कई बार इसमें सोने या चांदी के धागों का भी उपयोग होता है, जिससे कढ़ाई अत्यंत आकर्षक दिखाई देती है। इसका प्रयोग दुपट्टों और साड़ियों में किया जाता है।
- **घुंघट बाग फुलकारी**- इस शैली में फूलों और पत्तियों की आकृतियां इस तरह बनाई जाती हैं कि वे घुंघट या बाग का आभास देती हैं। बहुरंगी धागों से सजी यह फुलकारी पारंपरिक पंजाबी महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय रही है।
- **सैंची फुलकारी**- सैंची फुलकारी अपने प्राचीन रंगों और विविध डिजाइनों के लिए जानी जाती है। इसमें लाल, हरा, नीला, पीला और सफेद जैसे रंगों का सुंदर संयोजन होता है। इसका उपयोग परिधानों के साथ-साथ टेबल कवर और सजावटी वस्तुओं में भी किया जाता है।
- **चोपे फुलकारी**- चोपे फुलकारी विवाह से जुड़ी एक विशेष शैली है। इसे पारंपरिक रूप से दुल्हन को भेंट किया जाता है। इसमें सीमित रंगों और नियमित पैटर्न का प्रयोग होता है, जो इसे गरिमामय और विशिष्ट बनाता है।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	85,063.34	26,178.70
गिरावट	376.28	71.60
प्रतिशत में	0.44	0.27

सोना 1,41,500 प्रति 10 ग्राम

चांदी 2,51,000 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, बुधवार, 7 जनवरी 2026

www.amritvichar.com

कारोबार

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन : तुलसी 2550, राज श्री 1820, फ़ॉर्चून कि. 2280, रविन्द्रा 2420, फॉर्चुन 13 किग्रा 2010, जय जवान 2005, सचिन 2030, सूरज 2005, अवसर 1875, उजाला 1950, गृहणी 13 किग्रा 1870, क्लासिक (किग्रा) 2175, मोर 2200, चक्र टिन 2315, ब्लू 2100, आशीर्वाद मस्टर्ड 2300, स्वास्तिक 2505

किराना : हल्दी निजामाबाद 17000, जीरा 24500, लाल मिर्च 14000-18000, धनिया 9400-12000, अजवायान 13500-20000, मेथी 6000-8000 सौंफ 9000-13000, सोंठ 31000, (प्रतिकि.) लौंग 800-1000, बादाम 780-1080, काजू 2 पीस 840, किसमिस पीली 300-400, मखाना 800-1100

चावल प्रति कु. : डबल चाबी सेला 9700, स्पाइस 6500, शरबती कच्ची 5250, शर्बती स्टीम 5350, मंसूरी 4000, महबूब सेला 4050, गौरी रॉयल 8200, राजभोग 6850, हरी पत्ती (1किग्रा,5 किग्रा) 10100, हरी पत्ती नेचुरल 9100, जेनिथ 8800, गैलेक्सी 7400, सूमो 4000, गोल्डन सेला 7900, मंसूरी पनघट 4050,लाडली 4000

दाल दलहन : मूंग दाल इंदौर 9800, मूंग धोवा 10000, राजमा चित्रा 12000-13400, राजमा भूटान नया 10100, मलका काली, 7250-7450 मलका दाल 7350-9200, मलका छांटी 7250, दाल उड़द बिलासपुर 7800-8500, मसूर दाल छोटी 10000-11600, दाल उड़द दिल्ली 10300, उड़द साबुत दिल्ली 9900, उड़द धोवा इंदौर 11800, उड़द धोवा 9800-10400,चना काला 7150, दाल चना 7250, दाल चना मोटी 7100, मलका विदेशी 7200, रूपकिशोर बेसन 7700, चना अकोला 6600, डबरा 6700-8400, सच्चा हीरा 8500, मोटा हीरा 9800, अरहर गोला मोटा 7700, अरहर पटका मोटा 8000, अरहर कोरा मोटा 8500, अरहर पटका छोटा 10000-10600, अरहर कोरी छोटी 11000

चीनी : पीलीभीत 4260, बहेड़ी 4200

हल्द्वानी मंडी

चावल : शरबती- 3000, मसूरी- 850, बासमती- 5400, परमल- 1200

दाल दलहन : काला चना- 2600, साबुत चना दाल- 1700, मूंग साबुत- 4600, राजमा- 8200-11200, दाल उड़द- 5000, साबुत मसूर दाल- 3200, मसूर दाल- 2200, उड़द साबुत- 4200, काबुली चना- 8200, अरहर दाल- 10300, लोबिया/करमानी- 1600

नए कारोबार के धीमे विस्तार से देश में सेवा क्षेत्र की गतिविधियां ढीलीं

उत्पादन में विस्तार की दर 11 महीनों में सबसे सुस्त, कंपनियों ने टाली अतिरिक्त भर्ती

नई दिल्ली, एजेंसी

देश के सेवा क्षेत्र की वृद्धि दर में दिसंबर में गिरावट दर्ज की गई। इस बीच नए कारोबार एवं उत्पादन में विस्तार की दर 11 महीनों में सबसे धीमी रही और कंपनियों ने अतिरिक्त कर्मचारियों की भर्ती से परहेज किया। मौसमी रूप से समायोजित एचएसबीसी इंडिया सेवा पीएमआई कारोबारी गतिविधि सूचकांक नवंबर के 59.8 से दिसंबर में 58.0 पर आ गया। यह जनवरी के बाद से सबसे धीमी विस्तार दर को दर्शाता है।

मासिक सर्वेक्षण के बाद मंगलवार को इस संबंध में आंकड़े जारी किए गए। क्रय प्रबंधक सूचकांक (पीएमआई) की भाषा में 50 से ऊपर अंक का मतलब गतिविधियों में विस्तार से और 50 से कम का आशय संकुचन से होता है। सर्वेक्षण के अनुसार, कंपनियां वृद्धि की संभावनाओं को लेकर आशावादी बनी रहीं लेकिन समग्र भावना लगभग साढ़े तीन वर्ष में अपने सबसे निचले स्तर पर आ गईं। एसएंडपी ग्लोबल मार्केट इंटेलिजेंस की अर्थशास्त्र कार्यकारी निदेशक पॉलियाना डी लीमा ने कहा, दिसंबर में भारत के सेवा क्षेत्र का प्रदर्शन अच्छा रहा लेकिन 2025 के अंत में कई सर्वेक्षण संकेतकों में आई गिरावट नए साल में वृद्धि की गति में नरमी का संकेत दे सकती है।

समग्र उत्पादन सूचकांक में भी आई गिरावट

दूसरी ओर, एचएसबीसी इंडिया समग्र उत्पादन सूचकांक नवंबर के 59.7 से दिसंबर में 57.8 पर आ गया। विनिर्माण और सेवा प्रदाताओं दोनों में मंदी के बीच यह जनवरी 2025 के बाद से सबसे कमजोर स्तर है। सर्वेक्षण के अनुसार, भारत के निजी क्षेत्र में कच्चे माल की लागत और उत्पादन शुल्क दोनों में मामूली वृद्धि जारी रही। दिसंबर में समग्र स्तर पर रोजगार सृजन में ठहराव आया जिसका कारण वस्तु उत्पादकों की वृद्धि में मंदी एवं सेवा प्रदाताओं में आंशिक छंटनी थी। इसमें कहा गया कि निजी क्षेत्र की कंपनियां वृद्धि की संभावनाओं को लेकर आशावादी बनी हुई हैं। हालांकि धारणा 41 महीने के निचले स्तर पर आ गई है।

बाह्य मांग के संदर्भ में सर्वेक्षण में शामिल कंपनियों ने एशिया, उत्तरी अमेरिका, पश्चिम एशिया तथा ब्रिटेन से मांग में वृद्धि दर्ज करते हुए एक और सुधार देखा। नए निर्यात ऑर्डर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सर्वेक्षण के अनुसार, कीमतों के मोर्चे पर कच्चे माल की लागत और उत्पादन शुल्क में मामूली वृद्धि हुई। इस बीच, भारतीय सेवा कंपनियां 2026 में व्यावसायिक गतिविधियों में वृद्धि को लेकर आश्वस्त दिखीं लेकिन बाजार में बढ़ती अनिश्चितता एवं विनिमय दर में उतार-चढ़ाव को लेकर चिंताओं के बीच सकारात्मक भावना का समग्र स्तर लगातार तीसरे महीने घटकर लगभग साढ़े तीन वर्ष में सबसे निचले स्तर पर पहुंच गया। वहीं निजी क्षेत्र के उत्पादन में दिसंबर में वृद्धि घटकर 11 महीनों के निचले स्तर पर आ गई।

मुनाफा वसूली से सेंसेक्स में 376 अंकों की गिरावट

मुंबई। विदेशों से मिले सकारात्मक संकेतों के बीच घरेलू शेयर बाजारों में मुनाफावसूली के कारण मंगलवार को लगातार दूसरे दिन गिरावट रही। बीएसई का 30 शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 376.28 अंक यानी 0.44 प्रतिशत टूटकर 85,063.34 अंक पर बंद हुआ। नेशनल स्टॉक एक्सचेंज की निफ्टी-50 सूचकांक 71.60 अंक यानी 0.27 फीसदी नीचे 26,178.70 अंक पर बंद हुआ।

टाटा समूह की रिटेल कंपनी ट्रेंट का शेयर 8.62 प्रतिशत से अधिक लुढ़क गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज में भी दबाव रहा और इसका शेयर 4.42 प्रतिशत टूटा। मझौली कंपनियों के निफ्टी मिडकैप-50 सूचकांक में 0.06 फीसदी और छोटी कंपनियों के निफ्टी स्मॉलकैप-100 सूचकांक में 0.22 प्रतिशत की गिरावट रही। तेल एवं गैस, रसायन और मीडिया सूचकांक लाल निशान में बंद हुए।

एमटेक ग्रुप के पूर्व चेयर पर्सन को 7,000 करोड़ की बैंक धोखाधड़ी में जमानत

नई दिल्ली, एजेंसी

- शीर्ष कोर्ट के तीन जजों की पीठ ने दिल्ली हाईकोर्ट का आदेश पलटा

सुप्रीम कोर्ट ने 27,000 करोड़ रुपये की बैंक धोखाधड़ी से जुड़े धन शोधन के मामले में एमटेक ग्रुप के पूर्व चेयरपर्सन अरविंद धाम को मंगलवार को जमानत दे दी। न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा, न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति आलोक आराधे की पीठ ने दिल्ली हाईकोर्ट के उस आदेश को रद्द कर दिया जिसमें धाम को जमानत देने से इन्कार कर दिया गया था।

न्यायमूर्ति आराधे ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अदालत ने इस मामले में धाम की अपील स्वीकार कर ली है।

दिल्ली हाईकोर्ट ने पिछले साल 19 अगस्त को धाम की जमानत याचिका खारिज कर दी थी और कहा था कि समय से पहले रिहाई जवाबदेही सुनिश्चित करने के प्रयासों को कमजोर कर सकती है। ईडी ने इस मामले में एमटेक ऑटो लिमिटेड, एआरजी लिमिटेड, एसीआईएल लिमिटेड, मेटलिस्ट फोर्जिंग लिमिटेड, कास्टेक्स टेक्नोलॉजीज लिमिटेड और एमटेक ग्रुप के प्रवर्तक अरविंद धाम के अलावा कुछ अन्य लोगों के खिलाफ भी कार्रवाई की है। इससे पहले, ईडी ने दिवालिया हो चुकी, मोटर वाहन कलपुर्जे बनाने वाली कंपनी एमटेक ग्रुप की कंपनियों की 550 करोड़ रुपये से अधिक की संपत्तियों को धन शोधन रोधी कानून के तहत अस्थायी रूप से जब्त कर लिया था।

सितंबर 2024 में एजेंसी ने 5,115.31 करोड़ रुपये की संपत्तियां जब्त कीं। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर 27 फरवरी 2024 को पीएमएलए के तहत ईडी ने जांच शुरू की। एजेंसी ने धाम को जुलाई 2024 में गिरफ्तार कर सितंबर 2024 में आरोपपत्र दायर किया था। जांच में पाया गया कि इन कंपनियों को समूह की अन्य कंपनियों के साथ दिवालियापन की प्रक्रिया से गुजारा गया जिसके समाधान के कारण बैंकों को 80 प्रतिशत से अधिक का नुकसान हुआ।

अमेजन पे ने शुरू की सावधि जमा योजना आठ प्रतिशत तक की मिलेगी ब्याज दर

नई दिल्ली, एजेंसी

- पांच बैंक और दो गैरबैंकिंग कंपनियों के साथ रणनीतिक साझेदारी से की शुरुआत

भुगतान सुविधा प्लेटफॉर्म अमेजन पे ने भारत में अपनी सेवाओं का विस्तार करते हुए मंगलवार को सावधि जमा सुविधा की शुरुआत की घोषणा की। अमेजन पे के मुताबिक उसने इसके लिए दो प्रमुख गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी श्रीराम फाइनेंस और बजाज फाइनेंस के अलावा पांच बैंक शिवालिक स्मॉल फाइनेंस बैंक, सूर्योदय स्मॉल फाइनेंस बैंक, साउथ इंडियन बैंक, स्लाइस और उत्कर्ष स्मॉल फाइनेंस बैंक के साथ रणनीतिक साझेदारी की है।

कहा गया है कि ग्राहक अमेजन पे पर सिर्फ 1,000 रुपये से सावधि जमा खाता खोल सकते हैं। इसके लिए उन्हें बैंक में बचत खाता खोलने की जरूरत नहीं होगी। साझेदार संस्थान आठ प्रतिशत सालाना तक ब्याज दर की पेशकश कर रहे हैं। सभी साझेदार वरिष्ठ नागरिकों को अतिरिक्त 0.5 प्रतिशत ब्याज प्रदान करते हैं। श्रीराम फाइनेंस महिला निवेशकों को भी 0.5 प्रतिशत तक अतिरिक्त ब्याज की पेशकश कर रहा है। अमेजन पे के सीईओ विकास बंसल ने कहा, भारत में सुनिश्चित आय वाले उपकरण काफी लोकप्रिय हैं, क्योंकि इनकी संरचना सरल होती है, रिटर्न सुनिश्चित होता है और जोखिम कम होता है। नए साल की शुरुआत में हम ग्राहकों के लिए विकल्पों का विस्तार कर रहे हैं और उन्हें अपनी बचत पर बेहतर रिटर्न पाने में मदद कर रहे हैं, ताकि वे 2026 के अपने वित्तीय लक्ष्यों के लिए मजबूत आधार बना सकें।

अगले वित्त वर्ष 6.9% रह सकती है जीडीपी वृद्धि दर

नई दिल्ली, एजेंसी

- इंडिया रेटिंग्स का अनुमान, जीएसटी और आयकर कटौती से बढ़ेंगी आर्थिक गतिविधियां

साख निर्धारित करने वाली इंडिया रेटिंग्स एंड रिसर्च ने आगामी वित्त वर्ष 2026-27 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर 6.9 प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। रेटिंग एजेंसी का कहना है कि जीएसटी तथा आयकर में कटौती जैसे प्रमुख सुधार और व्यापार समझौते, आर्थिक गतिविधियों को बढ़ाने के रूप में काम करेंगे। साथ ही अर्थव्यवस्था को वैश्विक उथल-पुथल से बचाएंगे।

इंडिया रेटिंग्स के मुख्य अर्थशास्त्री देवेंद्र कुमार पंत ने कहा कि अर्थव्यवस्था में अगले वित्त वर्ष में भी उच्च वृद्धि दर और कम महंगाई दर (औसतन 3.8 प्रतिशत खुदरा मुद्रास्फीति) की स्थिति बनी रहेगी। कम शुल्क वाले भारत-अमेरिका व्यापार समझौते से सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि के आंकड़ों में और इजाफा होगा।

एजेंसी ने चालू वित्त वर्ष में आधार वर्ष 2011-12 पर आधारित जीडीपी वृद्धि 7.4 प्रतिशत और बाजार मूल्य पर जीडीपी नौ प्रतिशत रहने का अनुमान लगाया है। इंडिया रेटिंग्स को उम्मीद है कि वित्त वर्ष 2026-27 में भारतीय रुपया औसतन 92.26 प्रति डॉलर रहेगा जो मौजूदा वित्त वर्ष में 88.64 प्रति डॉलर से अधिक है। एजेंसी ने यह भी कहा कि सरकार के विशेष रूप से न्यूजीलैंड, ब्रिटेन और ओमान के साथ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) विदेशी निवेश को बढ़ावा देंगे और अधिक विदेशी निवेश को आकर्षित करके चालू खाता घाटा (सीए) को कम रखने में मदद करेंगे।

पंत ने कहा कि सीमा शुल्क को युक्तिसंगत बनाना एवं विकसित भारत-राम-जी अधिनियम के तहत आवंटन एक फरवरी को निर्धारित 2026-27 के केंद्रीय बजट में अपेक्षित प्रमुख घोषणाएं होंगी। इसके अलावा, 16वें वित्त आयोग की रिपोर्ट को भी एक फरवरी को सार्वजनिक किया जाएगा। इसमें एक अप्रैल से शुरू होने वाले पांच वर्षों के लिए केंद्र और राज्यों के बीच कर हस्तांतरण के अनुपात का सुझाव दिया गया है। रेटिंग एजेंसी के अनुमान के अनुसार, चालू वित्त वर्ष में कर राजस्व में दो लाख करोड़ रुपये की कमी आएगी जिसकी भरपाई गैर-कर राजस्व संग्रह और पूंजीगत व्यय में मामूली कमी से की जाएगी। चालू वित्त वर्ष में राजकोषीय घाटा बजट में अनुमानित 4.4 प्रतिशत और वास्तविक रूप से 15.69 लाख करोड़ रुपये रहेगा। एजेंसी के अनुसार संशोधित अनुमानों में निरपेक्ष रूप से आंकड़ा बढ़ सकता है।

राष्ट्रीय

छात्र संघ की ओर से नारेबाजी सुप्रीम कोर्ट की सीधे तौर पर अवमानना

जेएनयू ने पुलिस को भेजा पत्र, आरोपी छात्रों के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने का आग्रह

नई दिल्ली, एजेंसी

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) ने मंगलवार को कहा कि विरोध प्रदर्शन के दौरान छात्र संघ की ओर से अत्यंत आपत्तिजनक और भड़काऊ नारेबाजी वाले वीडियो का उसने गंभीर संज्ञान लिया है। जेएनयू प्रशासन ने कहा कि यह कृत्य सीधे तौर पर सुप्रीम कोर्ट की अवमानना है और संवैधानिक संस्थाओं के प्रति जानबूझकर अनादर दर्शाता है। छात्रों पर सोमवार रात एक कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के खिलाफ नारे लगाने का आरोप है। जेएनयू प्रशासन ने पुलिस को पत्र भेजकर इस मामले में प्राथमिकी दर्ज करने का आग्रह किया है।

जेएनयू प्रशासन ने वसंत कुंज (उत्तर) के थाना प्रभारी को लिखे एक पत्र में कहा कि जेएनयूएसयू से जुड़े छात्रों की ओर से रात करीब 10 बजे 'गुरिल्ला ढाबे के साथ प्रतिरोध की रात' नामक एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें लगभग 30 से 35 छात्र उपस्थित थे। शुरू में ऐसा प्रतीत हुआ कि यह कार्यक्रम पांच जनवरी, 2020 की घटना की याद में आयोजित किया जा रहा है, लेकिन उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत याचिकाओं पर न्यायिक फैसले के बाद कार्यक्रम का स्वरूप बदल गया, जिसके बाद कुछ प्रतिभागियों ने कथित तौर पर भड़काऊ और आपत्तिजनक नारे लगाए। विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार द्वारा जारी बयान में कहा गया है, ऐसा कृत्य संवैधानिक संस्थाओं और सभ्य एवं लोकतांत्रिक संवाद के स्थापित मानदंडों के प्रति जानबूझकर अनादर दर्शाता है। सभी को असहमति, अपमानजनक टिप्पणी और घृणास्पद भाषण के बीच स्पष्ट अंतर को समझना चाहिए।

विश्वविद्यालय ने दिल्ली पुलिस को लिखे पत्र में कहा है कि कुछ छात्रों ने अत्यंत आपत्तिजनक और भड़काऊ नारे लगाए और सीधे तौर पर उच्चतम न्यायालय की अवमानना की। विश्वविद्यालय ने सभी से अनावश्यक गतिविधियों में शामिल होने से बचने और परिसर में शांति बनाए रखने में सहयोग का आग्रह करते हुए चेतावनी दी कि अन्यथा नियमों के अनुसार कड़ी कार्रवाई की जाएगी। बयान में कहा गया, जेएनयू प्रशासन ने साबरमती परिसर में आयोजित प्रदर्शन के प्रसारित वीडियो का गंभीर संज्ञान लिया है, जिसमें जेएनयू छात्र संघ के छात्रों के एक समूह ने बेहद आपत्तिजनक और भड़काऊ नारे लगाए।

पत्र में छात्रसंघ अध्यक्ष अदिति समेत कई नाम

विश्वविद्यालय ने पुलिस को लिखे पत्र में वर्तमान जेएनयूएसयू अध्यक्ष अदिति मिश्रा समेत कई छात्रों के नाम लेते हुए कहा है कि कार्यक्रम के दौरान कई बार इस तरह की नारेबाजी की गई। पत्र में कहा गया है कि सुरक्षा अधिकारी मौके पर मौजूद थे और स्थिति पर नजर रख रहे थे। पत्र के अनुसार, मुख्य सुरक्षा अधिकारी ने पुलिस से प्राथमिकी दर्ज करने का अनुरोध किया है। बयान में कहा गया, इस तरह की नारेबाजी लोकतांत्रिक असहमति के बिल्कुल विपरीत है और जेएनयू आचार संहिता का उल्लंघन है। ऐसे नारों से सार्वजनिक व्यवस्था, परिसर में सद्भाव और विश्वविद्यालय तथा राष्ट्र के सुरक्षा और संरक्षा माहौल के गंभीर रूप से प्रभावित होने की आशंका है। इस कार्यक्रम का एक कथित वीडियो भी ऑनलाइन सामने आया है।

सांपों के फन कुचले जा रहे, संपोले बिलबिला रहे

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के मंत्री कपिल मिश्रा, मनजिंदर सिंह सिरसा और आशीष सूद ने जेएनयू में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक नारे लगाने की मंगलवार को कड़ी आलोचना की। दिल्ली के कानून मंत्री कपिल मिश्रा ने कहा, सांपों के फन कुचले जा रहे हैं, संपोले बिलबिला रहे हैं। नक्सलियों, आतंकियों, दंगाइयों के समर्थन में नारे लगाने वाले हताश हैं क्योंकि उनके नापाक मंसूबे एक-एक करके ध्वस्त हो रहे हैं। पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ प्रदर्शन अस्वीकार्य है। अगर लोग अदालती फैसलों का विरोध शुरू कर देंगे तो व्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी। शिक्षा मंत्री आशीष सूद ने कहा कि कुछ नेता और पार्टियां गंभीर मामलों में आरोपी व्यक्तियों के साथ खड़े हैं, यह शांति भंग करने की एक बड़ी साजिश का हिस्सा है।

- जेएनयू में भड़काऊ नारेबाजी पर बोले दिल्ली सरकार के मंत्री

आवारा कुत्तेः सुप्रीम कोर्ट ने कहा- इन्सानों के मामलों में नहीं आते इतने आवेदन

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को आवारा कुत्तों के मामले में उसके समक्ष दायर किए जा रहे अंतरिम आवेदनों की संख्या पर संज्ञान लिया और कहा कि आमतौर पर इन्सानों से जुड़े मामलों में भी इतनी अधिक संख्या में आवेदन नहीं आते हैं।

एक अधिवक्ता ने बताया कि उन्होंने इस मामले में एक अंतरिम याचिका दायर की है। इस पर न्यायमूर्ति संदीप मेहता ने टिप्पणी करते हुए कहा, इन्सानों से जुड़े मामलों में भी आमतौर पर इतनी अधिक संख्या में याचिकाएं नहीं आतीं। पीठ ने कहा कि आवारा कुत्तों के मामले में बुधवार को सुनवाई की जाएगी। एक अन्य अधिवक्ता ने इस मामले में स्थानांतरण याचिका का जिक्र किया तो शीर्ष न्यायालय ने कहा कि बुधवार को कई याचिकाओं पर सुनवाई होगी और पीठ सभी अधिवक्ताओं की बात सुनेगी।

मतदाता सूची विवादः सोनिया को जवाब दाखिल करने के लिए और समय मिला

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने मंगलवार को कांग्रेस नेता सोनिया गांधी को उस याचिका पर जवाब दाखिल करने के लिए सात फरवरी तक का समय दे दिया, जिसमें मतदाता सूची में नाम शामिल कराने के मामले में मजिस्ट्रेट अदालत के आदेश को चुनौती दी गई है।

मजिस्ट्रेट ने अपने आदेश में इस आरोप की जांच कराने से इन्कार कर दिया था कि गांधी का नाम 1983 में भारतीय नागरिकता प्राप्त करने से तीन साल पहले मतदाता सूची में शामिल किया गया था। न्यायाधीश विशाल गोगने ने नौ दिसंबर को गांधी और दिल्ली पुलिस को नोटिस जारी कर याचिका पर जवाब मांगा था। मंगलवार को जब इस मामले पर सुनवाई शुरू हुई तो गांधी के वकील ने जवाब दाखिल करने के लिए और समय मांगा। इसके बाद अदालत ने अगली सुनवाई की तारीख सात फरवरी तक का समय दे दिया।

मजिस्ट्रेट ने 11 सितंबर के आदेश में राउज एवेन्यू अदालत की सेंट्रल दिल्ली कोर्ट बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष अधिवक्ता विकास त्रिपाठी द्वारा दायर शिकायत को खारिज कर दिया था। मजिस्ट्रेट ने कहा था कि याचिका केवल मतदाता सूची के एक अंश पर आधारित है, जो 1980 की एक अप्रमाणित मतदाता सूची के अंश की फोटोकॉपी की फोटोकॉपी है।

सोनिया गंगाराम अस्पताल में भर्ती

नई दिल्ली। कांग्रेस पूर्व अध्यक्ष और संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी को तबीयत बिगड़ने पर दिल्ली के सर गंगाराम अस्पताल में सोमवार रात को भर्ती कराया गया है। श्रीमती गांधी की तबीयत पिछले कुछ समय से ठीक नहीं चल रही थी, जिस वजह से उन्हें भर्ती किया गया है। अस्पताल में डॉक्टरों की टीम उनकी पूरी निगरानी कर रही है। विशेषज्ञ डॉक्टर की निगरानी में उनका उपचार किया जा रहा है। सूत्रों के मुताबिक दिल्ली में बढ़े हुए प्रदूषण के कारण उन्हें सांस से संबंधित समस्याएं होती रहती हैं।

दिल्ली में घने कोहरे के कारण 280 से ज्यादा उड़ानों में देरी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी और देश के दूसरे हिस्सों में मंगलवार सुबह घने कोहरे के कारण दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर लगभग 280 से अधिक उड़ानों में देरी की सूचना है। कुछ उड़ानों को रद्द कर दिया गया है।

दिल्ली हवाई अड्डे पर सुबह चार बजे के बाद दृश्यता घटने लगी और 150 मीटर तक गिर गई। चार बजे के बाद से ही कैट-3 प्रक्रिया के तहत उपकरण की मदद से परिचालन शुरू कर दिया गया। अमृतसर, भोपाल, चंडीगढ़, गुवाहाटी, वाराणसी, रांची, हिंडन (गाजियाबाद) और धर्मशाला में भी दृश्यता कम होने के कारण उड़ानों के परिचालन में देरी हो रही है। दिल्ली हवाई अड्डे की वेवसाइट के अनुसार, दिल्ली से जाने वाली कम से कम 20 और दिल्ली आने वाली कम से कम 260 उड़ानों में देरी की सूचना है।

तिरुपरनकुंड्रम पहाड़ी पर दीप जलाने की अनुमति का आदेश बरकरार

मदुरै, एजेंसी

- मद्रास हाईकोर्ट की मदुरै खंडपीठ ने सरकार के शांति में खलल के दावे को हास्यास्पद बताया

मद्रास हाईकोर्ट की मदुरै खंडपीठ ने तिरुपरनकुंड्रम पहाड़ी के दीपथून पर दीप जलाने की अनुमति देने वाले एकल न्यायाधीश के आदेश को मंगलवार को बरकरार रखा। अदालत ने द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम (द्रमुक) सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि यह दावा कि दीप जलाने से सार्वजनिक शांति में विघ्न उत्पन्न होगा, बेहद हास्यास्पद है।

न्यायमूर्ति जी जयचंद्रन और न्यायमूर्ति के के रामकृष्णन की खंडपीठ ने फैसला सुनाते हुए स्पष्ट किया कि जिस स्थान पर पत्थर का स्तंभ (दीपथून) स्थित है, वह भगवान सुब्रमण्यम स्वामी मंदिर का है। न्यायालय ने यह भी कहा कि अपीलकर्ता यह साबित नहीं कर पाए कि शैव मत के आगम शास्त्र में ऐसा कोई स्पष्ट एवं अनिवार्य नियम है जिसके अनुसार गर्भगृह में देवता के ठीक ऊपर सीध में न होने वाले स्थान पर दीपक जलाना वर्जित है। अदालत ने यह भी कहा, न तो देवस्थानम (प्रबंधन) और न ही सरकार का यह कहना है कि तिरुपरनकुंड्रम पहाड़ी पर दीप जलाना प्रचलित नहीं है। उन्होंने कहा, यह हास्यास्पद है और इस पर विश्वास करना मुश्किल है कि राज्य की ताकतवर सरकार को डर है कि देवस्थानम के प्रतिनिधियों को पहाड़ी की चोटी के पास स्थित पत्थर के स्तंभ पर दीप जलाने की अनुमति देने से सार्वजनिक शांति में विघ्न उत्पन्न होगा। ऐसा तभी हो सकता है जब राज्य स्वयं इस तरह का विघ्न उत्पन्न करने का समर्थन करे।

पीठ ने कहा, हम उम्मीद करते हैं कि कोई भी राज्य अपने राजनीतिक एजेंडे को पूरा करने के लिए इस स्तर तक नीचे नहीं जाएगा। तमिलनाडु सरकार ने इस आदेश के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अपील करने का संकेत दिया है। तमिलनाडु के प्राकृतिक संसाधन मंत्री एस रेगुपति ने फैसले पर आपत्ति जताते हुए कहा कि सरकार को सुप्रीम कोर्ट में अपील करने का अधिकार है। उन्होंने पूछा, यह साबित करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं दिया गया कि दीपथून पर दीपम् जलाया गया था, नई परंपरा क्यों शुरू की जाए। अदालत ने कहा कि मंदिर प्रबंधन को दीपथून पर दीप प्रज्ज्वलित करना होगा। एएसआई प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम एवं नियमों में निहित निषेधों के अतिरिक्त पहाड़ी क्षेत्र में स्थित स्मारकों के संरक्षण के लिए उपयुक्त और आवश्यक शर्तें लागू करेगा।

भाजपा की सावरकर के सम्मान की नसीहत राकांपा ने नकारी

मुंबई। महाराष्ट्र के मंत्री आशीष शेलार ने कहा कि भाजपा अपने गठबंधन साझेदारों से हिंदुत्व विचारक विनायक दामोदर सावरकर के सम्मान की अपेक्षा करती है। उनकी इस नसीहत उपमुख्यमंत्री अजित पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) ने तीखी प्रतिक्रिया के साथ नकार दिया और आंबेडकरवादी विचारधारा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को व्यक्त किया।

महानगरपालिका चुनाव प्रचार के दौरान सावरकर का जिक्र आने के बाद महायुति में शामिल दोनों दलों भाजपा और राकांपा के बीच टकराव की नौबत है।

- कहा- हम आंबेडकरवादी, महायुति के सहयोगी दलों में टकराव की नौबत

पुणे और पिंपरी चिंचवड निकाय चुनाव में अपने चाचा शरद पवार की राकापा (एसपी) से गठबंधन करने वाले अजित पवार भाजपा के स्थानीय नेताओं के खिलाफ हमलावर रुख अपनाए हुए हैं। शेलार ने कहा, महाराष्ट्र भाजपा अध्यक्ष रविंद्र चव्हाण साफ कर चुके हैं कि पार्टी सावरकर की विचारधारा का अनुसरण करती है, भाजपा सहयोगियों से भी उनके विचारों का सम्मान करने की अपेक्षा की जाती है।

शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और राकांपा महायुति में भाजपा के सहयोगी दल हैं। राकांपा नेता अमोल मिटकरी ने भाजपा की इस जिद पर सवाल उठाए कि अजित पवार की पार्टी को भाजपा के वैचारिक नेतृत्व के तहत काम करना होगा। मिटकरी ने 'एक्स' पर लिखा, मैं यही कहूंगा कि हम शिव-शाहू-आंबेडकर आंदोलन के प्रति प्रतिबद्ध थे, हैं और रहेंगे। भले ही हम आपरी विचारधारा को स्वीकार न करें, लेकिन यह अकाट्य सत्य है कि आपको हमारी पार्टी की आंबेडकरवादी विचारधारा न चाहते हुए भी स्वीकार करनी होगी।

प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाएंगे भारत-लक्जमबर्ग

- लक्जमर्बग के प्रधानमंत्री ल्यूक फ्रीजन से मिले जयशंकर

नई दिल्ली, एजेंसी

लक्ज़मबर्ग के प्रधानमंत्री ल्यूक फ्रीडेन के साथ विदेश मंत्री जयशंकर।

लक्जमबर्ग की यात्रा पर गये विदेश मंत्री डा. एस जयशंकर ने मंगलवार को प्रधानमंत्री ल्यूक फ़्रीडन से मुलाकात की और निवेश , प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्रों में सहयोग पर बातचीत की। मुलाकात के बाद डा. जयशंकर ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में यह जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि आज सुबह लक्ज़मबर्ग के प्रधानमंत्री ल्यूक फ़्रीडन से मिलकर प्रसन्नता हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। वित्तीय सेवाओं, निवेश, प्रौद्योगिकी और नवाचार के क्षेत्रों में बढ़ते सहयोग पर चर्चा हुई। भारत-यूरोपीय संघ संबंधों को और सशक्त बनाने के लिए उनके समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। उल्लेखनीय है कि विदेश मंत्री डा. एस जयशंकर रविवार को भारत से फ्रांस और लक्ज़मबर्ग की आधिकारिक यात्रा पर रवाना हुए थे।

5.26 करोड़ मतदाता बाहर

एसआईआर का दूसरा चरण

भारत निर्वाचन आयोग की ओर से देश में मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण यानी एसआईआर की प्रक्रिया जारी है। मतदाता सूची को पूरी तरह से नए सिरे से तैयार करना, पात्र मतदाताओं को शामिल करना, मृत या एक से अधिक स्थानों पर दर्ज लोगों के नाम हटाकर मतदाता सूची को अधिक सटीक बनाना उद्देश्य है। यह प्रक्रिया 2002-2004 में भी हुई थी, लेकिन अब इसे बड़े पैमाने पर लागू किया गया है। इसमें घर-घर फॉर्म भरवाने और सत्यापन के बाद फिर ड्राफ्ट और अंतिम सूची तैयार की जाती है। दूसरे चरण में 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में प्रक्रिया जारी है। पहले चरण में बिहार में 65 लाख वोटर हटे थे जबकि दूसरे चरण के 12 राज्यों में लगभग 5 .25 करोड़ वोटरों के नाम हटे या हट रहे हैं।

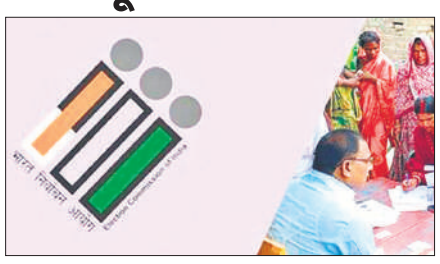

दूसरे चरण में 12 राज्य

एसआईआर का पहला चरण बिहार राज्य में पूरा हो चुका है। दूसरे चरण में असम, गोआ, गुजरात, केरल, मध्य प्रदेश, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, पशिचम बंगाल के साथ केंद्र शासित प्रदेश अंडमान व निकोबार, लद्दाख, पुदुचेरी में प्रक्रिया चल रही है। उत्तर प्रदेश में सत्यापन और गणना के बाद मतदाता सूची प्रकाशित कर दी गई है। मतदाताओं को सूची में सुधार कराने के लिए छह फरवरी तक का समय दिया गया है। अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन मार्च तक संभावित है।

अब तक हटे नाम

- मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के बाद बिहार में लगभग 65 लाख नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं तो कुछ नए नाम जोड़े भी गए हैं। उत्तर प्रदेश में करीब 2 .89 करोड़ नाम ड्राफ्ट सूची से हटाए गए जिनमें मृतक, शिफ्ट, डुप्लिकेट मतदाता शामिल हैं वहीं मध्य प्रदेश में लगभग 42,74,160 नाम हटाए गए। केरल में लगभग 24 लाख नाम वोटर लिस्ट से बाहर हो गए हैं। तमिलनाडु में लगभग 97,37,832 और गुजरात में लगभग 73,73,000 नाम मतदाता सूची से बाहर हुए हैं। हालांकि इन मतदाताओं को पुनरीक्षण का मौका दिया जाएगा।

राज्यवार स्थिति

- बिहार में अंतिम सूची लागू हो चुकी है। उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में ड्राफ्ट जारी किया जा चुका है। केरल में भी ड्राफ्ट की सत्यापन प्रक्रिया चल रही है। तमिलनाडु और गुजरात में भी ड्राफ्ट जारी हो चुका है। पशिचम बंगाल में काम चल रहा है। असम, गोआ, राजस्थान, अंडमान नीकोबार, लद्दाख, पुदुचेरी में भी प्रक्रिया जारी हैं।

18 साल के युवा ऐसे बनें वोटर

- **ऑनलाइन आवेदन :** वेबसाइट https://voters.eci.gov.in पर जाएं और नया मतदाता पंजीकरण (फार्म-6) पर क्लिक करें और अपनी जानकारी, नाम, पता जन्म-तिथि, मोबाइल नंबर और पहचान से संबंधित दस्तावेज अपलोड कर फार्म सबमिट कर दें, मोबाई/ईमेल पर रेफरेंस नंबर मिलेगा जिसके बाद बीएलओ घर आकर या कॉल करके सत्यापन करेगा।
- **ऑफलाइन आवेदन :** बीएलओ, तहसील, चुनाव कार्यालय से फार्म-6 लें या ऑनलाइन प्रिंट ले सकते हैं। फॉर्म भरकर जरूरी दस्तावेज़ लगाएं, अपने क्षेत्र के बीएलओ / निर्वाचन कार्यालय में जमा करें, सत्यापन के बाद नाम मतदाता सूची में जुड़ जाएगा।
- **आवश्यक दस्तावेज :** उम्र के प्रमाण के रूप में जन्म प्रमाण पत्र, 10वीं कक्षा की मार्कशीट, आधार कार्ड में से कोई एक दे सकते हैं। पते के प्रमाण के लिए आधार कार्ड, बिजली/पानी/गैस बिल या बैंक पासबुक चलेगा। आधार अनिवार्य नहीं है, लेकिन देने से सत्यापन आसान होता है।
- **18 से पहले भी आवेदन :** अगर आपकी उम्र 1 जनवरी, 1 अप्रैल, 1 जुलाई अथवा 1 अक्टूबर को 18 पूरी हो रही है तो आवेदन कर सकते हैं। नाम उसी तिथि से जुड़ जाएगा।

वर्ल्ड ब्रीफ

इजराइल ने लेबनान पर बोला हमला

सिडोन। इजराइल की वायुसेना ने सोमवार देर रात और मंगलवार तड़के लेबनान के सिडोन समेत दक्षिणी एवं पूर्वी इलाकों पर हमले किए। सोमवार-मंगलवार की दरम्यानी रात करीब एक बजे हुए एक हमले में दक्षिणी तटीय शहर सिडोन में तीन मंजिला एक वाणिज्यिक इमारत ध्वस्त हो गई। ये हमले ऐसे समय में हुए हैं जब कुछ ही दिन बाद लेबनान के सेना प्रमुख इजराइल के साथ लगती सीमा वाले इलाके में चरमपंथी समूह हिज्बुल्ला के निरस्त्रीकरण के अपने मिशन के बारे में सरकार को जानकारी देने वाले हैं।

मेक्सिको ने अमेरिकी हस्तक्षेप खारिज किया

मेक्सिको सिटी। वेनेजुएला में अमेरिका के सैन्य हस्तक्षेप के बाद मेक्सिको सरकार और विशेषज्ञों ने देश में मादक पदार्थ तस्करी गिरोहों के खिलाफ एकतरफा अमेरिकी कार्रवाई की आशंका को खारिज कर दिया है। मेक्सिको की राष्ट्रपति क्लॉडिया शीनबॉम का प्रशासन अमेरिका की मांगों पर काम कर रहा है और दोनों देशों में आर्थिक संबंध महत्वपूर्ण हैं।

मिस्र में नशा मुक्ति केंद्र में आग से छह मरे

काहिरा। मिस्र की राजधानी काहिरा के उत्तर में कल्यूबिया प्रांत में एक नशा मुक्ति केंद्र में सोमवार को आग लगने से छह लोगों की मौत हो गई और सात अन्य घायल हो गए। सरकारी अखबार अल-योम ने बताया कि सूचना मिलने पर सुरक्षा बल और नागरिक सुरक्षा इकाई दमकल और एम्बुलेंस की मदद से बेन्हा शहर में घटनास्थल पर पहुंचे।

वेनेजुएला पर अमेरिकी कार्रवाई से क्षेत्रीय अस्थिरता की संभावना

संयुक्त राष्ट्र महासचिव गुटेरेस ने वेनेजुएला में बढ़ती अस्थिरता पर जताई चिंता

- अमेरिकी कार्रवाई में अंतर्राष्ट्रीय नियमों का नहीं हुआ सम्मान

न्यूयॉर्क, एजेंसी

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने सोमवार को वेनेजुएला पर अमेरिकी कार्रवाई और राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को पकड़े जाने के बाद वेनेजुएला में बढ़ती अस्थिरता पर चिंता जताई है, यद्यपि अमेरिका ने आश्वासन दिया है कि इस मध्य अमेरिकी देश पर कब्जा करने की उसकी कोई योजना नहीं है। गुटेरेस ने कहा कि वह चिंतित हैं कि तीन जनवरी की सैन्य कार्रवाई के संबंध में अंतर्राष्ट्रीय कानून के नियमों का सम्मान नहीं किया गया है। उल्लेखनीय है कि मादुरो को मादक पदार्थों से संबंधित आरोपों में मैनहट्टन संघीय अदालत पेश किए जाने से कुछ घंटे पहले न्यूयॉर्क स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में 15 सदस्यीय सुरक्षा परिषद की बैठक हुई। मादुरो ने किसी भी आपराधिक संलिप्तता से इनकार किया है।

संयुक्त राष्ट्र की राजनीतिक मामलों की अवर महासचिव रोजमेरी डिकार्लो द्वारा परिषद में पढ़े गए एक बयान में गुटेरेस ने कहा कि मैं देश में अस्थिरता बढ़ने की आशंका, क्षेत्र पर इसके संभावित प्रभाव और राज्यों के बीच संबंधों के संचालन के मामले में इससे बनने वाले उदाहरण को लेकर बेहद चिंतित हूं। संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने इस बात पर जोर दिया कि 'सभी के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय कानून का पूर्ण सम्मान किया जाना अनिवार्य है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र चार्टर भी शामिल है। महासचिव ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र चार्टर किसी भी देश की क्षेत्रीय अखंडता या राजनीतिक स्वतंत्रता के खिलाफ बल प्रयोग या धमकी को प्रतिबंधित करता है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाये रखना सभी सदस्य देशों की इन प्रावधानों का पालन करने की प्रतिबद्धता पर निर्भर करता है। गुटेरेस ने हालात को नाजुक बताया और कहा कि एक बड़े और अधिक विनाशकारी संघर्ष को रोकना अभी भी संभव है। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी राजदूत माइक वाल्ट्ज ने मादुरो और उनकी पत्नी सिलिया फ्लोर्स का जिक्र करते हुए सुरक्षा परिषद को बताया कि अमेरिका ने अमेरिकी न्याय प्रणाली के दो घोषित भगोड़ों के खिलाफ अभियान चलाया।

श्रीलंका ने शांतिपूर्ण समाधान का किया आग्रह

कोलंबो। श्रीलंका ने संयुक्त राष्ट्र से आग्रह किया कि वह अमेरिका की सैन्य कार्रवाई के बाद वेनेजुएला के लोगों की सुरक्षा, कल्याण और उनके संप्रभु अधिकारों को ध्यान में रखते हुए शांतिपूर्ण समाधान निकालने की दिशा में काम करे। अमेरिका ने वेनेजुएला की राजधानी काराकस पर शनिवार को सैन्य हमला कर उसके नेता निकोलस मादुरो को पकड़ लिया था। अमेरिका ने अपदस्थ राष्ट्रपति मादुरो पर मादक पदार्थों की तस्करी का आरोप लगाया है जिसे उन्होंने खारिज किया है। अमेरिका की इस कार्रवाई के बाद वेनेजुएला ने राष्ट्रीय आपातकाल घोषित कर दिया। श्रीलंका के विदेश मंत्रालय द्वारा सोमवार को जारी बयान में कहा गया कि यह महत्वपूर्ण है कि संयुक्त राष्ट्र और संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसे उसके निकाय इस मामले पर संज्ञान लें ।

वेनेजुएला के बाद अब क्यूबा के भविष्य को लेकर उठ रहे सवाल

हवाना। वेनेजुएला में हुए अमेरिकी हमले में 32 क्यूबाई सुरक्षा अधिकारियों की मौत के बाद क्यूबा में सोमवार को झंडे झुकाकर शोक मनाया गया। इस हमले के बाद क्यूबाई नागरिकों के मन में यह सवाल उठ रहा है कि वेनेजुएला के अपदस्थ राष्ट्रपति निकोलस मादुरो की गिरफ्तारी का उनके देश के भविष्य पर क्या असर पड़ेगा। दोनों देशों की सरकारों के बीच इतने करीबी रिश्ते हैं कि क्यूबाई सैनिक और सुरक्षा एजेंट अक्सर वेनेजुएला के राष्ट्रपति के अंगरक्षक होते थे और वेनेजुएला के पेट्रोलियम आयात से क्यूबा की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था को कई वर्षों तक सहारा मिलता रहा है। क्यूबाई अधिकारियों ने सप्ताहांत में कहा कि 32 सुरक्षा अधिकारी इस हमले में मारे गए लेकिन इसके बारे में और कोई विवरण नहीं दिया गया। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन ने साफ तौर पर चेतावनी दी है कि मादुरो को हटाने से दशकों पुराने एक और लक्ष्य को हासिल करने में मदद मिलेगी और वह है क्यूबा की सरकार को नुकसान पहुंचाना। क्यूबा को वेनेजुएला से अलग करने से उसके नेताओं के लिए भयानक परिणाम हो सकता है।

शक्तिशाली भूकंप के झटकों से हिल उठा जापान

तोक्यो। पश्चिमी जापान में मंगलवार को शक्तिशाली भूकंप आया लेकिन इससे सुनामी आने का कोई खतरा नहीं है। अधिकारियों ने बताया कि भूकंप के कारण कोई बड़ा नुकसान होने या किसी के गंभीर रूप से घायल होने की जानकारी नहीं मिली है। जापान मौसम विज्ञान एजेंसी (जेएमए) ने बताया कि प्रारंभिक जानकारी के अनुसार भूकंप की तीव्रता 6.2 थी और यह उत्तर-पश्चिमी जापान के शिमाने प्रांत में आया। बाद में एजेंसी ने बताया कि भूकंप की तीव्रता 6.4 थी। प्रांतीय राजधानी मात्सुए और तोत्तोरी प्रांत के कुछ शहर समेत आसपास के शहरों में सबसे अधिक झटके महसूस किए गए। भूकंप का केंद्र लगभग 10 किलोमीटर (6.2 मील) की गहराई में था। उसने साथ ही कहा कि सुनामी का कोई खतरा नहीं है। हालांकि, जेएमए के अधिकारियों ने क्षेत्र के निवासियों को सचेत किया कि लगभग एक सप्ताह तक शक्तिशाली भूकंप आने का खतरा है। अग्निशमन एवं आपदा प्रबंधन एजेंसी के अनुसार, स्थानीय दमकल विभागों को लोगों के मामूली रूप से घायल होने की जानकारी मिली। इस क्षेत्र में शिंकांसेन बुलेट ट्रेन को अस्थायी रूप से निलंबित किया गया या उनके परिचालन में देरी हुई। क्षेत्र में शिमाने परमाणु बिजली संयंत्र और एक संबंधित केंद्र में कोई असामान्यता नहीं पाई गई।

भारत को कॉस्मिक डस्ट प्रयोग में मिली उल्लेखनीय सफलता

- इसरो ने कहा अंतरिक्ष के रहस्यों की खोज में यह बड़ा महत्वपूर्ण कदम

चेन्नई, एजेंसी

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कहा है कि भारत में विकसित कॉस्मिक डस्ट एक्सपेरिमेंट (डीइएक्स) ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए पृथ्वी की कक्षा में ऑर्बिटल डेब्रिस (धूल कणों) के टकराव से उत्पन्न संकेतों का सफलतापूर्वक पता लगाया है। यह प्रयोग पीएसएलवी-सी58 एक्सपोसैट मिशन के तहत पीएसएलवी कक्षीय प्रायोगिक मॉड्यूल (पोओईम) पर एक जनवरी 2024 को प्रक्षेपित किया गया था। इसरो ने इसे अंतरग्रहीय रहस्यों की खोज में एक ऐतिहासिक उपलब्धि करार दिया है।

इस सफलता से यह भी प्रमाणित हुआ है कि डीइएक्स उपकरण अंतरिक्ष में मौजूद सूक्ष्म धूल कणों को पहचानने और उन्हें मापने में पूरी तरह सक्षम है। इसरो के अनुसार, अंतर-गृहीय धूल कण (आईडीपी) धूमकेतुओं और छोटे तारों (एस्टरॉइड) से निकले सूक्ष्म कण होते हैं, जो पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करते समय उल्का परत बनाते हैं और रात के आकाश में टूटते तारों के रूप में दिखाई देते हैं। डीइएक्स ऐसे अत्यधिक वेग वाले धूल कणों का अध्ययन करने वाला भारत का पहला स्वदेशी उपकरण है। इसरो ने बताया कि यह कॉम्पैक्ट उपकरण अंतरिक्ष में धूल कणों के टकराव को सुनने के लिए डिज़ाइन किया गया है और मात्र 4.5 वॉट बिजली खपत के साथ काम करता है। लगभग तीन किलोग्राम वज़न वाला यह डिटेक्टर हाइपर-वेलोसिटी सिद्धांत पर आधारित है। डीइएक्स को पृथ्वी से लगभग 350 किलोमीटर की ऊंचाई पर स्थापित किया गया था। यह 140 डिग्री वाइड-व्यू वाला डिटेक्टर एक जनवरी से नौ फरवरी 2024 के बीच सक्रिय रहा और इस दौरान उसने कई बार धूल कणों के टकराव दर्ज किए।

आदित्य-एल1 के लिए मांगे शोध प्रस्ताव

भारत के अंतरिक्ष विज्ञान कार्यक्रम में आदित्य-एल1 मिशन एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है जो सूर्य-पृथ्वी एल1 बिंदु से सूर्य का निरंतर और व्यापक अवलोकन सक्षम बनाता है। इस मिशन से वैज्ञानिक लाभ बढ़ाने के लिए इसरो ने पहला एनाउंसमेंट ऑफ ऑपर्च्युनिटी अवसर की घोषणा की है। इसके तहत भारतीय सौर भौतिकी समुदाय से आदित्य-एल1 के अवलोकन समय के लिए शोध प्रस्ताव आमंत्रित किए गए हैं।

पाकिस्तान के लिए जासूसी करने में किशोर गिरफ्तार

- देश की संवेदनशील सूचनाएं कर रहा था साझा

चंडीगढ़, एजेंसी

पंजाब के पठानकोट में 15 वर्षीय किशोर को पाकिस्तानी आकाओं से संवेदनशील स्थानों की जानकारी साझा करने के आरोप में पकड़ा गया है। पुलिस ने मंगलवार को बताया कि एक सोशल मीडिया मंच के जरिए किशोर के जहन में कट्टरपंथी विचारधाराएं डाली गईं।

पठानकोट के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक दलजिंदर सिंह ढिल्लों ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि किशोर पाकिस्तानी सैन्य अधिकारियों, पाकिस्तानी खुफिया एजेंसी आईएसआई और पाकिस्तान में आतंकी मॉड्यूल संचालित करने के वाले प्रमुख संगठनों के संपर्क में था और देश की सुरक्षा से जुड़ी जानकारी साझा कर रहा था। इसी सूचना के आधार पर सोमवार को किशोर को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। एसएसपी के अनुसार, किशोर के पिता की एक वर्ष से अधिक समय पहले मृत्यु हो गई थी। वह जम्मू-कश्मीर में रहते थे। उन्होंने बताया कि किशोर कई सोशल मीडिया मंच पर सक्रिय था और इसी दौरान वह पाकिस्तानी आकाओं के जाल में फंस गया।

ईरान के विरोध प्रदर्शनों में अब तक 35 की मौत

दुबई। ईरान में अर्थव्यवस्था की खस्ताहाल स्थिति और राजनीतिक दमन को लेकर एक हफ्ते से अधिक समय से जारी विरोध-प्रदर्शनों के दौरान कम से कम 35 लोगों की मौत हो चुकी है और 1,200 से अधिक प्रदर्शनकारियों को हिरासत में लिया गया है।

एक मानवाधिकार एजेंसी ने मंगलवार को यह जानकारी दी। इस बीच, ईरान सरकार ने देश के पश्चिमी प्रांत ईलम में हिंसा की बात स्वीकार की है, जहां सुरक्षाबलों ने एक अस्पताल पर धावा बोला और आम नागरिकों पर गोलीबारी भी की।

महाराष्ट्र में ऑनलाइन ठगी गिरोह पकड़ा, सात गिरफ्तार

- ऑनलाइन योजनाओं के जरिए की 200 करोड़ की ठगी

पालघर, एजेंसी

महाराष्ट्र पुलिस ने विदेशी मुद्रा और सोने के कारोबार से जुड़ी ऑनलाइन योजनाओं के जरिए सैकड़ों लोगों से 200 करोड़ रुपये से अधिक की ठगी को अंजाम देने वाले एक अंतरराष्ट्रीय गिरोह का भंडाफोड़ किया है।

अधिकारियों ने मंगलवार को यह जानकारी दी। पुलिस ने अब तक महाराष्ट्र से सात लोगों को गिरफ्तार किया है, जो देश के विभिन्न राज्यों में दर्ज 50 से अधिक आपराधिक मामलों से जुड़े हैं। संदेह है कि गिरोह के सरगना विदेश से आपराधिक गतिविधियों को अंजाम देते थे।

मीरा भायंदर-वसई विरार पुलिस आयुक्त निकेत कौशिक ने बताया कि जालसाज वैवाहिक वेबसाइट और सोशल मीडिया मंचों के माध्यम से विश्वास जीतकर पीड़ितों को निशाना बनाते थे। इसके बाद उन्हें धोखाधड़ी वाली योजनाओं में निवेश करने के लिए प्रेरित किया जाता था। उन्होंने बताया कि पुलिस को अहम सफलता 12 नवंबर को तब मिली।

ट्रंप बोले, प्रधानमंत्री मोदी मुझसे खुश नहीं क्योंकि भारत को अधिक शुल्क देना पड़ रहा

- राष्ट्रपति ने हाउस जेओपी सदस्य रिट्रीट में किया दावा

वॉशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को कहा कि रूसी तेल खरीदने पर अमेरिका द्वारा भारत पर लगाए गए शुल्क (टैरिफ) के कारण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी उनसे ज्यादा खुश नहीं हैं।

ट्रंप ने 'हाउस जीओपी सदस्य रिट्रीट में अपने संबोधन में यह भी दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी मुझसे मिलने आए और बोले कि श्रीमान्, क्या मैं आपसे मिल सकता हूं? मैने कहा, जी हां। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि मेरे उनके साथ बहुत अच्छे संबंध हैं।

वह मुझसे उतने खुश नहीं हैं, क्योंकि उन्हें काफी शुल्क देना पड़ रहा है। लेकिन, अब उन्होंने रूस से तेल का व्यापार काफी हद तक कम कर दिया है। हाउस जीओपी मेंबर रिट्रीट अमेरिकी प्रतिनिधि सभा के रिपब्लिकन पार्टी सदस्यों की एक वार्षिक बैठक है। ट्रंप ने भारत पर 50 प्रतिशत शुल्क लगाया है, जिसमें रूस से तेल की खरीद पर 25 प्रतिशत शुल्क शामिल है। ट्रंप ने यह भी कहा कि भारत ने उन्हें बताया है कि वह अपाचे हेलीकॉप्टरों के लिए पांच साल से इंतजार कर रहा है। उन्होंने कहा कि हम इसे बदल रहे हैं। भारत ने 68 अपाचे हेलीकॉप्टर का ऑर्डर दिया है। भारी शुल्क लगाने पर भारत और अमेरिकी रिश्तों में कुछ खटास आ गई है।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 7 जनवरी, बुधवार 2026 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- माघ, पक्ष-कृष्ण पक्ष, पंचमी 8 जनवरी 06 .33 तक तत्पश्चात षष्ठी।

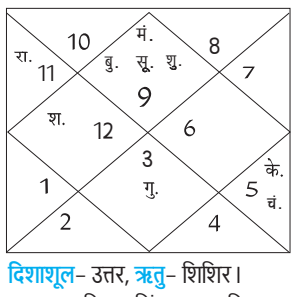

मेष — आज कुछ कड़े और महत्वपूर्ण निर्णय आपको लेने पड़ सकते हैं। आवश्यक सामानों की खरीदारी में धन खर्च कर होगा। आपकी आय बढ़ सकती है। जीवनसाथी की सहायता से आपको करियर में सफलता मिलेगी। बच्चों के विवाह में आ रही बाधा दूर होगी।

वृष — आज आपका स्वास्थ्य काफी अच्छा रहने वाला है। आप अत्यधिक व्यस्त रहेंगे। अपनी प्रतिभा को पुन: विकसित करने का अवसर मिल सकता है। सामाजिक कार्यक्रमों में आप सम्मिलित हो सकते हैं। प्रियजनों के साथ अच्छा समय व्यतीत होगा।

मिथुन — आज टीमवर्क के माध्यम से गंभीर समस्याओं का निराकरण कर लेंगे। प्रेम संबंधों में मधुरता का भाव बढ़ेगा। आपके काम की गुणवत्ता में वृद्धि होगी। नए संबंधों का विकास हो सकता है। संतान के कार्यों पर नजर बनाकर रखें।

कर्क — आज परिवार में थोड़ी कलह होने की संभावना है। अजनबी व्यक्तियों पर अधिक विश्वास न करें। हृदय रोगियों को सावधान रहने की आवश्यकता है। संतान के साथ अपना व्यवहार अच्छा रखें। आपको पैरों में चोट लग सकती है।

सिंह — आज भोग-विलास का आनंद उठाएंगे। धार्मिक स्थल पर जाने का विचार बना सकते हैं। किसी दुविधा का समाधान मिलेगा। आपको कुछ नया सीखने का मौका मिल सकता है। पुरानी डील के कारण आपको लाभ मिलने की संभावना है।

कन्या — आज आय के साथ-साथ आपके खर्च भी बढ़ेंगे। अग्नि के प्रयोग में सावधानी रखें। व्यापार में नए बदलाव करने से बचें। परिश्रम का सार्थक परिणाम नहीं मिलेगा। वैवाहिक जीवन को लेकर समस्या हो सकती है।

तुला — आज सरकारी कार्यों में कुछ बाधा आ सकती है। धर्म-कर्म को लेकर अंधविश्वासी न बनें। आप कुछ नया काम करने को लेकर प्रेरित होंगे। दूसरों के विवादों में समझौता न करायें। भाई-बहनों के साथ रिश्तों में प्रेम भाव बढ़ेगा।

वृश्चिक — आज जॉब में मनोवान्छित लाभ मिलने के योग बन रहे हैं। व्यापार में पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। घरेलू खर्च को लेकर बजट का ध्यान रखें। प्रबुद्ध व्यक्तियों का सानिध्य प्राप्त होगा। सहकर्मी आपकी चुगली कर सकते हैं।

धनु — आज व्यवसाय में बड़ा परिवर्तन करने से आपको बचना चाहिए। किसी भी कार्य को ठीक तरह से करने में मुश्किल होगी। कार्यक्षेत्र में अकस्मात परिवर्तन आ सकते हैं। दुष्टजन आपको हानि पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

मकर — आज उधार चुकाने के लिए दिन बहुत ही अच्छा है। वाहन का प्रयोग सावधानी से करें। राजनीति से जुड़े लोगों को सोच-समझकर दान करना चाहिये। मेहनत में कमी न करें। जल्दबाजी के कारण कार्यों में विघ्न आ सकते हैं।

कुंभ — आज रचनात्मक कार्यों में आप रुचि लेंगे। जिम्मेदारियों को लेकर थोड़े परेशान हो सकते हैं। व्यापार में इच्छित परिणाम प्राप्त होंगे। घर का वातावरण शांतिपूर्ण रहेगा। किसी पुराने मित्र से मुलाकात हो सकती है। पिता की सेहत का ध्यान रखें।

मीन — आज उच्च रक्तचाप से पीड़ित लोगों को सेहत का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मन में हीन भावना पनप सकती है। परिवार में क्लेश का वातावरण हो सकता है। घर के लिए खरीदारी कर सकते हैं। वृद्धजनों के साथ बहसबाजी करने से बचें।

आज का पंचांग

दिशाशूल- उत्तर, **ऋतु**- शिशिर।
चन्द्रबल- मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, कुंभ, मीन।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, मृगशिरा, पुनर्वसु, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र- मघा 11 .56 तक तत्पश्चात पूर्वाफाल्गुनी।

सुडोकू -25

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

7		3		6	4		9	
	8		5			6		2
6		5	2	8				
		9			2		8	3
	5		3	4		9		
3		1		9			5	4
	9				6			
1			9			3		8
	3		8			5		

सुडोकू - 24 का हल

8	7	9	3	2	6	5	1	4
6	3	5	1	8	4	2	7	9
4	2	1	9	7	5	8	6	3
5	9	6	8	4	7	3	2	1
2	8	4	5	3	1	6	9	7
7	1	3	6	9	2	4	5	8
3	5	2	7	1	8	9	4	6
1	4	8	2	6	9	7	3	5
9	6	7	4	5	3	1	8	2

मैंने कभी भी किसी तरह के पूर्वाग्रह के साथ क्रिकेट खेली है। मेरी मानसिकता हमेशा जीतने की रही है। अगर मैं मानसिक रूप से तैयार होकर मैदान में उतरता हूं, तो मैं संतुष्ट रहता हू। मुझे तभी निराशा होती है जब मैं मानसिक रूप से तैयार नहीं रहता हूं।

विक्वंटन डीकॉक, द .अफ्रीका

स्टेडियम

बरेली, बुधवार, 7 जनवरी 2026

अमृत विचार

www.amritvichar.com

वैभव ने पंत का रिकॉर्ड तोड़ा, भारतीय यूथ वनडे में जड़ा तीव्रतम पचासा

बेनोनी, एजेंसी

- कप्तानी करते हुए सूर्यवंशी ने पावर-हिटिंग का किया शानदार प्रदर्शन

क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी ने सोमवार को विलोमूर पार्क में दक्षिण अफ्रीका अंडर 19 के खिलाफ दूसरे यूथ वनडे के दौरान यूथ वनडे इंटरनेशनल में किसी भारतीय द्वारा सबसे तेज फिफ्टी का रिकॉर्ड तोड़ दिया। रेगुलर कप्तान आयुष म्हात्रे की गैरमौजूदगी में टीम की कप्तानी करते हुए, 14 साल के सूर्यवंशी ने पावर-हिटिंग का शानदार प्रदर्शन करते हुए सिर्फ़ 15 गेंदों में अपना हाफ सेंचुरी पूरा किया, जिससे उन्होंने सीनियर भारतीय विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत के पिछले भारतीय रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया, जिन्होंने 18 गेंदों में यह उपलब्धि हासिल की थी। युवा ओपनर आखिरकार 24 गेंदों पर शानदार 68 रन बनाकर आउट हो गए, इस पारी में क्लीन स्ट्राइकिंग का बोलबाला था। उन्होंने 10 छक्के और सिर्फ़ एक चौका लगाया, जिसमें से 64 रन बाउंड्री से आए, जिससे साउथ अफ्रीकी गेंदबाज़ों को उन्हें रोकने में मुश्किल हुई। इससे पहले, साउथ अफ्रीका अंडर19 ने पहले बैटिंग करने का फैसला किया और 49.3 ओवर में 245 रन पर आउट हो गई। बाद में बारिश की रुकावट से बदले हुए हालात में भारत का टारगेट 27 ओवर में 174 रन कर दिया गया। भारत ने आक्रामक शुरुआत की, जिसमें ओपनर एरॉन जॉर्ज और सूर्यवंशी ने मेजबान टीम पर अटैक किया। दोनों ने सिर्फ़ 4.1 ओवर में टीम का पचास रन पूरा किया। जॉर्ज सबसे पहले आउट हुए, उन्होंने 19 गेंदों पर 20 रन बनाए और भारत का स्कोर 6.1 ओवर में 1 विकेट पर 67 रन था। सूर्यवंशी ने 8.1 ओवर में माइकल क्रुइसकैंप ने उन्हें आउट कर दिया, और तब भारत का स्कोर 10 ओवर में दो विकेट पर 103 रन था।

हरमनप्रीत 13वें स्थान पर पहुंचीं, दीप्ति शीर्ष से खिसकीं

आईसीसी टी20 रैंकिंग

- स्मृति और शेफाली क्रमश : तीसरे और छठे स्थान पर बरकरार
- ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी ने शीर्ष स्थान पर पकड़ रखी मजबूत

दुबई, एजेंसी

भारतीय कप्तान हरमनप्रीत कौर श्रीलंका के खिलाफ पांच मैचों की शृंखला में खेले गए आखिरी मुकाबले में मैच जिताऊ पारी खेलने के बाद मंगलवार को जारी आईसीसी महिला टी20 की रैंकिंग में बल्लेबाजों की सूची में दो स्थान के सुधार के साथ 13वें पायदान पर पहुंच गईं। भारत ने इस मैच को 15 रन से जीत कर शृंखला में 5-0 से क्लीन स्वीप किया। हरमनप्रीत को इस मैच में 43 गेंदों में 68 रन की पारी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। वह इसके बाद रैंकिंग में शीर्ष 10 के और करीब हैं। स्मृति मंधाना और शेफाली वर्मा क्रमशः तीसरे और छठे स्थान पर बरकरार है जबकि ऑस्ट्रेलिया की बेथ मूनी ने शीर्ष स्थान पर पकड़ मजबूत कर रखी है। जेमिमा रोड्रिग्स हालांकि शीर्ष 10 से बाहर हो कर 12वें स्थान पर खिसक गई है।

दीप्ति शर्मा गेंदबाजी रैंकिंग में शीर्ष से नीचे आ गई हैं। पांचवें टी20 मैच में उनका 28 रन पर एक विकेट लेना ऑस्ट्रेलिया की एनाबेल सदरलैंड को शीर्ष पर पहुंचने से रोकने के लिए काफी नहीं था। दीप्ति रेटिंग अंक के मामले में सदरलैंड (736) से सिर्फ एक अंक पीछे हैं। गेंदबाजी रैंकिंग में भारतीय बायें हाथ की स्पिनर श्री चरनी पांच पायदान ऊपर चढ़कर 47वें स्थान पर पहुंच गईं। श्रीलंका के लिए कविशा दिलहारी (एक पायदान ऊपर चढ़कर 32वें स्थान पर) और चमारी अटापट्टू (तीन पायदान ऊपर चढ़कर 48वें स्थान पर) ने गेंदबाजी रैंकिंग में सुधार किया।

भारतीय महिलाओं को भविष्य में हराना मुश्किल होगा : गार्डनर

मुंबई। एशले गार्डनर का मानना है कि ऑस्ट्रेलिया इस समय महिला क्रिकेट में सर्वश्रेष्ठ टीम है, लेकिन उन्होंने कहा कि आने वाले दशक में वनडे विश्व चैंपियन भारतीय टीम को हराना काफी मुश्किल होगा। पिछले साल महिला विश्व कप सेमीफाइनल में भारत से हारी ऑस्ट्रेलियाई टीम का हिस्सा रही गार्डनर ने कहा कि हरमनप्रीत कौर की टीम के प्रदर्शन में जबर्दस्त सुधार आया है। नौ जनवरी से शुरू हो रही महिला प्रीमियर लीग में गुजरात जाइंट्स के लिए खेल रही गार्डनर ने कहा कि भारतीय टीम अगले पांच से दस साल में उन टीमों में से एक होगी जिसे हराना बहुत मुश्किल होगा। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलियाई होने के नाते मैं इससे भयभीत हूं लेकिन यहां खेल का तेजी से विकास देखकर अच्छा लग रहा है। गार्डनर का मानना है कि ऑस्ट्रेलिया अब भी महिला क्रिकेट में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीम है। उन्होंने कहा कि विश्व कप भारी दबाव वाले पलों में आपकी जीत की बानगी देते हैं। अगर हम किसी भी टीम से लगातार दस मैच खेलें तो हम आठ या नौ जीत जायेंगे। भारत से मिली हार कठिन थी, लेकिन हमें पता है कि भारतीय टीम कितनी खतरनाक हो सकती है। महिला प्रीमियर लीग में गुजरात टीम में भारत की विश्व कप विजेता टीम में से सिर्फ तेज गेंदबाज रेणुका सिंह ठाकुर है, लेकिन उनके पास बेथ मूनी, डैनी वियाट हॉज और सोफी डेवाइन जैसे धुरंधर विदेशी खिलाड़ी हैं।

हाईलाइट

महाराष्ट्र क्रिकेट संघ के चुनाव पर लगी रोक

मुंबई। बंबई उच्च न्यायालय ने मंगलवार को होने वाले महाराष्ट्र क्रिकेट संघ की शीर्ष परिषद के चुनाव पर रोक लगा दी है और निवर्तमान अध्यक्ष और एनसीपी विधायक रोहित पवार के रिश्तेदारों समेत 400 नए सदस्यों को जोड़ने पर सवाल उठाये हैं। मुख्य न्यायाधीश श्री चंद्रशेखर और गौतम अनखड़ की पीठ ने कहा कि जिस तरीके से नए सदस्यों को जोड़ा गया है, उससे प्रथम दृष्टया लगता है कि सब कुछ आनन फानन में किया गया।

ग्रिक्सपोर-जैंडस्चुल्प डच टीम से बाहर

नई दिल्ली। नीदरलैंड ने 7-8 फरवरी को बेंगलुरु में भारत के खिलाफ होने वाले डेविस कप क्वालीफायर मुकाबले के लिए अपने शीर्ष एकल खिलाड़ियों टैलन ग्रीक्सपोर और बोटिक वैन डे जैंडस्चुल्प को अपनी चार सदस्यीय टीम में शामिल नहीं किया है। ग्रीक्सपोर वर्तमान में नीदरलैंड के नंबर एक खिलाड़ी हैं और उनकी विश्व रैंकिंग 25 है। जैंडस्चुल्प की विश्व रैंकिंग 75 है। भारत के खिलाफ मुकाबले में एकल वर्ग में विश्व रैंकिंग में 71वें स्थान पर काबिज जेस्पर डी जोंग और 158वीं रैंकिंग के खिलाड़ी गाय डेन ओडेन नीदरलैंड की अगुवाई करेंगे।

सनराइजर्स ने कैपिटल्स को 10 विकेट से हराया

सेंचुरियन। विक्वंटन डीकॉक और जॉनी बेयरस्टो के बीच पहले विकेट के लिए अटूट शतकीय साझेदारी की मदद से सनराइजर्स ईस्टर्न केप ने यहां खेले गए एसए20 क्रिकेट टूर्नामेंट के मैच में प्रिटोरिया कैपिटल्स को 10 विकेट से करारी शिकस्त दी।

अनाहत ब्रिटिश जू. ओपन स्क्वाश के फाइनल में

नई दिल्ली। शीर्ष वरीयता प्राप्त भारतीय खिलाड़ी अनाहत सिंह ने सेमीफाइनल में मिस्र की मलिका अल कराक्सी को आसानी से पराजित करके प्रतिष्ठित ब्रिटिश जूनियर ओपन स्क्वाश में महिला एकल के अंडर-19 वर्ग के फाइनल में प्रवेश किया। अब तक 12 पीएसए टूर खिताब जीतने वाली 17 वर्षीय खिलाड़ी अनाहत ने बर्मिंघम विश्वविद्यालय में मलिका पर सिर्फ 28 मिनट में जीत हासिल की। फाइनल में अनाहत का सामना यूरोपीय जूनियर चैंपियन और दूसरी वरीयता प्राप्त फ्रांस की लॉरेन बाल्टायन से होगा। अनाहत ब्रिटिश जूनियर ओपन में सभी आयु वर्गों में नौवीं बार फाइनल में पहुंची है।

उप्र क्वार्टर फाइनल में, विदर्भ-बंगाल व बड़ौदा भी रेस में

अभिषेक के शतक की बदौलत उत्तर प्रदेश ने ग्रुप बी के मुकाबले में विदर्भ को 54 रनों से हराया

विजय हजारे ट्रॉफी

- उप्र ने 339 रनों का दिया लक्ष्य, मोखाड़े ने 147 रनों के बावजूद विदर्भ 285 रनों पर ही सिमटी
- अपना अजेय रिकॉर्ड बरकरार रखते हुए 20 अंकों के साथ अंकतालिका में शीर्ष पर उप्र

राजकोट, एजेंसी

अभिषेक गोस्वामी के शानदार शतक की बदौलत उत्तर प्रदेश ने मंगलवार को खेले गए ग्रुप बी के अहम मुकाबले में विदर्भ को 54 रन से हराकर विजय हजारे ट्रॉफी के क्वार्टरफाइनल में प्रवेश कर लिया। उत्तर प्रदेश ने पहले बल्लेबाजी करते हुए पांच विकेट पर 339 रन बनाए, जिसमें गोस्वामी ने 103 रन की शानदार पारी खेली। उन्हें प्रियंक गर्ग (67), ध्रुव जुरेल (56) और रिंकू सिंह (57) के तेज अर्धशतकों का अच्छा मिला।

लक्ष्य का पीछा करते हुए अमन मोखाड़े ने संघर्षपूर्ण 147 रन बनाए लेकिन विदर्भ की टीम 50 ओवर में नौ विकेट पर 285 रन ही बना सकी। उत्तर प्रदेश की ओर से कुलदीप यादव ने 52 रन देकर तीन विकेट झटके। इस जीत के साथ उत्तर प्रदेश ने अपना अजेय रिकॉर्ड बरकरार रखते हुए 20 अंकों के साथ अंकतालिका में शीर्ष स्थान हासिल किया। वहीं विदर्भ, बंगाल और बड़ौदा के 16-16 अंक हैं और एक-एक मैच शेष है। तीनों टीमें क्वार्टर फाइनल में पहुंचने की दौड़ में हैं।

हैदराबाद ने अमन राव के दोहरे शतक की बदौलत बंगाल को हराया

अमेरिका में जन्मे अमन राव की ताबड़तोड़ नाबाद दोहरे शतक से खिताबी दौड़ से बाहर हो चुकी हैदराबाद ने बंगाल को 107 रन से शिकस्त दी। इस हार से उसकी क्वार्टर फाइनल की उम्मीदों को झटका लगा। आईपीएल नीलामी में राजस्थान रॉयल्स की टीम से जुड़े 21 साल के राव ने सिर्फ तीसरी लिस्ट-ए मैच 109 गेंदों पर नाबाद 200 रन बनाए। उनकी इस पारी में 12 चौके और 13 छक्के शामिल थे। राव की इस पारी की बदौलत हैदराबाद ने पांच विकेट पर 352 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया। यह इस टूर्नामेंट का दूसरा दोहरा शतक था। इससे पहले दिसंबर में ओडिशा के स्वस्तिक सामल ने सौराष्ट्र के खिलाफ 212 रन बनाए थे। पहले बल्लेबाजी करते हुए राव ने बंगाल के गेंदबाजी आक्रमण की धज्जियां उड़ा दीं। उन्होंने मोहम्मद शमी (70 रन पर 3 विकेट), आकाश दीप (बिना किसी सफलता के 78 रन) और मुकेश कुमार जैसे गेंदबाजों के खिलाफ 120 रन बटोरे। राव ने राहुल सिंह (65) के साथ पहले विकेट के लिए 104 रन की साझेदारी करने के बाद कप्तान तिलक वर्मा (34) के साथ 87 रन जोड़े। उन्होंने अपनी दोहरी शतकीय पारी का जश्न पारी की आखिरी गेंद पर छक्का जड़कर मनाया। मोहम्मद सिराज (58 रन पर 4 विकेट) की गेंदबाजी के सामने बंगाल की टीम 44 .4 ओवर में 245 रन पर सिमट गई। बंगाल के लिए शाहबाज अहमद ने अकेले 113 गेंदों पर नाबाद 108 रन बनाए, लेकिन उन्हें दूसरे छोर से कोई सहयोग नहीं मिला। इस हार के बाद बंगाल ने छह मैचों में चार जीत के साथ नेट रन रेट के आधार पर विदर्भ के पीछे तीसरा स्थान है।

बड़ौदा ने जम्मू-कश्मीर को दी 76 रनों से मात

विष्णु सोलंकी (132) और प्रियांशु मोलिया (114) के शानदार शतकों की बदौलत बड़ौदा ने जम्मू-कश्मीर को 76 रन से हराया। पहले बल्लेबाजी का फैसला करते हुए बड़ौदा ने सोलंकी और मोलिया के शतकों की मदद से 50 ओवर में 332 (ऑल आउट) बनाये। इसके जवाब में जम्मू-कश्मीर की टीम 45 .3 ओवर में 256 रन पर सिमट गई। जम्मू कश्मीर के लिए दीक्षांत कुंडल (66) और कवलप्रीत सिंह (65) ने संघर्षपूर्ण अर्धशतक जमाए। इस जीत के साथ बड़ौदा के 16 अंक हो गए, और वह बंगाल और विदर्भ के साथ अंकों में बराबरी पर आ गया। ग्रुप के एक अन्य मैच में मनन वोहरा (102) और अर्जुन आजाद (140) के शानदार शतकों की बदौलत चंडीगढ़ ने असम को सात विकेट से हराया। शिवशंकर रॉय ने नाबाद 106 रन की पारी खेलकर असम को सात विकेट पर 284 रन तक पहुंचाया, लेकिन चंडीगढ़ ने कप्तान वोहरा और आजाद की सलामी जोड़ी की 244 रन की साझेदारी की मदद से लक्ष्य को 47 .2 ओवर में हासिल कर लिया

मयंक-पडिक्कल की साझेदारी से कर्नाटक क्वार्टर फाइनल में

अहमदाबाद, एजेंसी

शानदार लय में चल रहे कप्तान मयंक अग्रवाल (100) और देवदत्त पडिक्कल (91) की बड़ी साझेदारी से कर्नाटक ने मंगलवार को राजस्थान को 150 रन से करारी शिकस्त देकर विजय हजारे ट्रॉफी के क्वार्टरफाइनल में जगह पक्की कर ली। कर्नाटक ने सात विकेट पर 324 रन का विशाल स्कोर खड़ा करने के बाद भारतीय तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा (36 रन पर पांच विकेट) की अगुवाई में शानदार गेंदबाजी से राजस्थान को 38 ओवर में 174 रन पर आउट कर दिया। कर्नाटक की यह लगातार छठी जीत है।

टीम ने 24 अंक के साथ ग्रुप तालिका में शीर्ष स्थान पक्का कर लिया है। केरल, झारखंड और मध्य प्रदेश के 16-16 अंक हैं और वे नेट रन रेट के आधार पर दूसरे स्थान के लिए अंतिम दौर के मैच में जोर लगायेंगे। तमिलनाडु और त्रिपुरा आठ-आठ अंकों के साथ क्रमशः पांचवें और छठे स्थान पर हैं। मयंक ने 107 गेंदों में दूसरा शतक जड़ा जबकि पडिक्कल 82 गेंदों में नौ रन से सत्र का अपना पांचवां शतक पूरा करने से चूक गए। दोनों की 184 रन की साझेदारी के दौरान राजस्थान के गेंदबाज असहाय नजर आये। विष्णु विनोद की नाबाद 162 की आक्रामक पारी से केरल ने पुडुचेरी को 21 ओवर शेष रहते आठ विकेट से हराकर अपने नेट रन रेट में बड़ा सुधार किया।

जीत की जिद

झारखंड के रांची स्थित मरांग गोमके जयपाल सिंह एस्ट्रो टर्फ हॉकी स्टेडियम में चल रही महिला हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) 2025-26 के मैच के दौरान गेंद पर कब्जा करने के लिए संघर्ष करतीं नारंगी जर्सी में श्रची बंगाल टाइगर्स और एसजी पाइपर्स की खिलाड़ी। ● एजेंसी

हेड और स्मिथ के शतक से ऑस्ट्रेलिया मजबूत

- पांचवें और अंतिम एशेज टेस्ट के तीसरे दिन पहली पारी में 7 विकेट पर बनाए 518 रन

सिडनी, एजेंसी

ट्रैविस हेड के वर्तमान एशेज शृंखला के तीसरे शतक और कार्यवाहक कप्तान स्टीव स्मिथ के पहले शतक की मदद से ऑस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड के खिलाफ पांचवें और अंतिम एशेज टेस्ट के तीसरे दिन अपनी पहली पारी में 7 विकेट पर 518 रन बनाकर अपनी स्थिति मजबूत कर ली। ऑस्ट्रेलिया ने इस तरह से पहली पारी में 134 रन की बढ़त हासिल कर ली है।

इंग्लैंड ने अपनी पहली पारी में 384 रन बनाए थे। हेड ने सुबह 91 रनों के स्कोर से आगे खेलना शुरू किया और उन्होंने 166 गेंदों में 163 रन बनाए। इससे पहले उन्होंने पर्थ में पहले टेस्ट की दूसरी पारी में 123 रन और एडिलेड में तीसरे टेस्ट की दूसरी पारी में 170 रन बनाए थे। स्मिथ तीसरे दिन का खेल समाप्त होने तक 129 रन पर खेल रहे थे। इससे पहले उनका इस शृंखला में उच्चतम स्कोर 61 रन था जो उन्होंने एडिलेड में पहली पारी में बनाया था। स्मिथ का यह एशेज में 13वां, उनके टेस्ट करियर का 37वां और सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर पांचवां शतक है। साथ ही वह टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक शतक लगाने वाले खिलाड़ियों की सूची में छठे स्थान पर पहुंच गए। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय स्मिथ के साथ ब्यू वेबस्टर 42 रन बनाकर खेल रहे थे। इन दोनों ने अभी तक आठवें विकेट के लिए 81 रन जोड़े हैं।

पोंटिंग के पास पहुंचे रूट, तेंदुलकर से पीछे

सिडनी। टेस्ट क्रिकेट में अब इंग्लैंड के जो रूट के 41 शतक हो चुके हैं। वह अब सबसे ज्यादा शतक लगाने वाले बल्लेबाज़ों की सूची में संयुक्त रूप से तीसरे स्थान पर हैं, जहां वह रिकी पोंटिंग के साथ हैं। उनसे आगे सिर्फ़ सचिन तेंदुलकर (51) और जैक कैलिस (45) हैं। रूट ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांचवें और अंतिम एशेज टेस्ट में इंग्लैंड की पहली पारी में 160 रन बनाकर यह उपलब्धि अपने नाम की। 2021 से अब तक रूट ने 24 टेस्ट शतक लगाए हैं। हैरी ब्रूक, केन विलियमसन, स्टीवन स्मिथ और शुभमन गिल दस शतकों के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं।

मलेशिया ओपन : लक्ष्य दूसरे दौर में पहुंचे, मालविका बाहर

कुआलालंपुर, एजेंसी

भारत के स्टार खिलाड़ी लक्ष्य सेन ने कुछ विषम परिस्थितियों से गुजरने के बावजूद मंगलवार को यहां सिंगापुर के जिया हेंग जेसन तेह को तीन गेम तक चले कड़े मुकाबले में पराजित करके मलेशिया ओपन सुपर 750 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में जगह बनाकर नए सत्र की शानदार शुरुआत की।

पिछले सत्र के आखिर में ऑस्ट्रेलियाई ओपन का खिताब जीतने वाले 24 वर्षीय सेन ने मलेशिया ओपन में विश्व रैंकिंग में 21वें नंबर के खिलाड़ी तेह को 70 मिनट में 21-16 15-21 21-14 से हराया। विश्व चैंपियनशिप 2021 के कांस्य पदक विजेता और वर्तमान में विश्व रैंकिंग में 13वें स्थान पर काबिज सेन का अगला मुकाबला फ्रांस के छठी वरीयता प्राप्त क्रिस्टो पोपोव या हांगकांग के ली चेउक यिउ के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा।

बाएं घुटने की चोट के कारण छह महीने के अंतराल के बाद वापसी करने वाली मालविका बंसोड़ को महिला एकल में हालांकि पहले दौर में थाईलैंड की सातवीं वरीयता प्राप्त और पूर्व विश्व चैंपियन रत्चनोक इंतानोन से 11-21 11-21 से हार का सामना करना पड़ा।

मुस्तफिजुर को नहीं मिलेगा मुआवजा

कोलकाता। बांग्लादेशी गेंदबाज मुस्तफिजुर रहमान को कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के साथ अनुबंध को समाप्त करने में कोई भूमिका नहीं होने पर किसी भी प्रकार का वित्तीय मुआवजा नहीं मिलेगा। केकेआर ने भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के निर्देशों पर उन्हें टीम से बाहर कर दिया था। केकेआर ने मुस्तफिजुर को आईपीएल नीलामी में चेन्नई सुपर किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के साथ चली कड़ी बोली प्रक्रिया के बाद 9.20 करोड़ में खरीदा था। बीसीसीआई ने अपने इस फैसले का कोई विशेष कारण नहीं बताया और केवल इतना कहा कि चारों तरफ घट रहे घटनाक्रमों के कारण यह जरूरी हो गया था। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने इस पर भारत में होने वाले अपने टी20 विश्व कप के मैचों को श्रीलंका में स्थानांतरित करने की मांग की है।

टेनिस | अमेरिकी स्टार ने 45 साल की उम्र में भी जुझारूपन का शानदार नमूना किया पेश

कड़े संघर्ष के बाद मैग्डा लिनेट से हारीं वीनस विलियम्स

वेलिंगटन,एजेंसी

वीनस विलियम्स ने 45 साल की उम्र में भी अपने जुझारूपन का शानदार नमूना पेश किया, लेकिन आखिर में वह मंगलवार को ऑकलैंड ओपन डब्ल्यूटीए टूर टेनिस टूर्नामेंट में पांचवीं वरीयता प्राप्त मैग्डा लिनेट से हार गईं।

2026 में अपना पहला एकल मैच खेल रहीं वीनस ने अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन अंत में उन्हें 52वीं रैंकिंग की खिलाड़ी लिनेट से 6-4, 4-6, 6-2 से हार मिली। लिनेट उस समय केवल दो साल की थीं जब वीनस ने पेशेवर टूर पर अपना पहला एकल मैच खेला था। मंगलवार का मैच डब्ल्यूटीए टूर पर एकल वर्ग में विलियम्स का 1101वां मैच था। उन्होंने 12 साल छोटी खिलाड़ी के सामने जैसी चुनौती पेश की उससे उनका होबार्ट इंटरनेशनल और ऑस्ट्रेलियाई ओपन में खेलने के लिए ऑस्ट्रेलिया जाने से पहले आत्मविश्वास बढ़ेगा।

7 बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन वीनस को ऑकलैंड ओपन के अलावा 12 जनवरी से होबार्ट में होने वाले टूर्नामेंट तथा साल के पहले ग्रैंड स्लैम टूर्नामेंट ऑस्ट्रेलियाई ओपन के लिए वाइल्ड कार्ड से प्रवेश मिला है। ऑस्ट्रेलियाई ओपन 18 जनवरी से शुरू होगा। ऑकलैंड में खेला गया यह मैच वीनस का पिछले साल अगस्त में अमेरकी ओपन के पहले दौर में कैरोलिना मुचोवा से हारने के बाद पहला एकल मैच था। वीनस ने इससे पहले ऑकलैंड ओपन की शीर्ष वरीयता प्राप्त एलिना स्वितोलिना के साथ सोमवार को युगल मैच खेला था, जिसमें उन्हें इवा जोविक और एलेक्जेंड्रा एला से 7-6 (7), 6-1 से हार का सामना करना पड़ा था।

जोकोविच का ऑस्ट्रेलियाई ओपन पर फोकस

एडिलेड। नोवाक जोकोविच ने अगले हफ्ते होने वाले एडिलेड इंटरनेशनल से अपना नाम वापस ले लिया है, उन्होंने फिटनेस की चिंताओं का हवाला दिया है क्योंकि वह ऑस्ट्रेलियाई ओपन की तैयारी जारी रखे हुए हैं। इंस्टाग्राम स्टोरी में, 24 बार के ग्रैंड स्लैम चैंपियन ने कहा कि वह एटीपी 250 इवेंट में शारीरिक रूप से प्रतिस्पर्धा करने के लिए पूरी तरह तैयार नहीं हैं, और इस फैसले को व्यक्तिगत रूप से बहुत निराशाजनक बताया। जोकोविच ने कहा कि एडिलेड उनके लिए खास महत्व रखता है, क्योंकि उन्होंने दो साल पहले वहां खिताब जीता था, और कहा कि शहर में वापस आकर सच में घर जैसा महसूस हुआ। हालांकि, सर्बियाई खिलाड़ी ने कहा कि उनकी तत्काल प्राथमिकता सीजन के पहले ग्रैंड स्लैम के लिए तैयार होना है।

सबालेंका ने जीत से की अभियान की शुरुआत

सिडनी। दुनिया की नंबर 1 खिलाड़ी एरिना सबालेंका ने मंगलवार को ब्रिस्बेन इंटरनेशनल टेनिस टूर्नामेंट में शानदार जीत के साथ अपने 2026 सीजन की शुरुआत की। सबालेंका ने दूसरे राउंड के मैच में स्पेन की क्रिस्टीना बुक्सा को 48 मिनट में हराया। बेलारूस की खिलाड़ी, जो ब्रिस्बेन में डिफेंडिंग चैंपियन हैं, को पहले राउंड में बाई मिली थी। सबालेंका ने शुरू से ही मैच पर कंट्रोल रखा, पहला सेट 22 मिनट में जीता और दूसरे सेट में 5-0 की बढ़त बना ली। इससे पहले मंगलवार को, मौजूदा ऑस्ट्रेलियाई ओपन चैंपियन मैडिसन कीज ने मैककार्टनी केसलर को हराकर ब्रिस्बेन में तीसरे राउंड में जगह बनाई। सबालेंका तीसरे राउंड में जेलेना ओस्टापेंको या रोमानिया की सोराना सिर्स्टिया में से किसी एक से खेलेंगी।